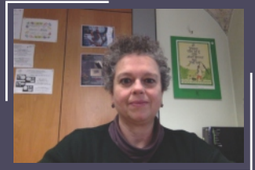

**प्रो. ॲलेस्संद्रा कोन्सोलारो**

- तोरीनो विश्वविद्यालय के मानविकी विभाग में हिंदी भाषा और साहित्य की एसोसिएट प्रोफेसर।
- एम. ए. संस्कृत (मिलानो विश्वविद्यालय) और हिन्दी (तोरीनो विश्वविद्यालय)।
- फुलब्राइट स्कॉलरशिप पाकर जैक्सन स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज (यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंग्टन, सिएटल, संयुक्त राज्य अमेरिका) में अध्ययन।
- पीएच.डी. भारतीय इतिहास और इंटरनेशनल रिलेशन (पीसा विश्वविद्यालय)।
- 2010 में उपसाला विश्वविद्यालय (स्वीडन) में अतिथि शोधकर्ता।
- 2014 में एलते विश्वविद्यालय, बूडपेश्ट (हंगरी) में अतिथि प्राध्यापक।
- 2016 में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में GIAN पाठ्यक्रम में अतिथि प्राध्यापक: हिन्दी भाषा तथा साहित्य का शिक्षण (विदेशी छात्रों के संदर्भ में)
- हिंदी साहित्य, दक्षिण एशिया के इतिहास, भारतीय लोक संस्कृति के बारे में उनका अंतर्विषयक अनुसंधान, नारीवादी और जेंडर आलोचना पर केंद्रित है।

**प्रकाशित लेख:**

- Contesting Colonial Ethnography through an Imagined Global Geography for the 22nd Century: RāhulSā□k□tyāyan's Hindi Science Fiction Bāisvī□Sadī. pp.15-30. In In Other Worlds and the Narrative Constructions of Otherness, edited by EsterinoAdami, Francesca Bellino and Alessandro Mengozzi. Milano: Mimesis International, 2017.
- "For Her Eyes Only: Embodiment in PrabhāKhetān's Autobiography." pp.47-65.ArchivOrientální 85, pp. 47-65. ISSN:0044-8699, 2017.
- "Barking at Heaven's Door: Pluto Mehra in the Hindi Film DilDhadakne Do." Humanities 6, no. 2: 16. ISSN 2076-0787 doi:10.3390/h6020016. Alessandra Consolaro, 2017.
- "Dying trees in globalizing Hindi literature: environment, middle classes, and posthuman awareness." Kervan 20, pp. 107-124. 10.13135/1825-263X/1946, 2017.

ISBN : 978-81-933359-8-7
नॉटनल: ई-लायब्ररी संगठन, लखनौ : उत्तर प्रदेश

विदेश में हिंदी भाषा शिक्षण

2017

प्रो. ॲलेस्संद्रा कोन्सोलारो

# विदेश में हिंदी भाषा शिक्षण

प्रो. ॲलेस्संद्रा कोन्सोलारो

# *विदेश में हिंदी भाषा शिक्षण*

*(तकनीक, पद्धतियाँ और विधियाँ)*

*डॉ.अलेसांद्रा कोन्सोलारो*

**विदेश में हिंदी भाषा शिक्षण**

*(तकनीक, पद्धतियाँ और विधियाँ)*

**ISBN : 978-81-933359-8-7**

© लेखिकाधीन

**डॉ. अलेसांद्रा कोन्सोलारो**
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी भाषा और साहित्य
तोरीनो विश्वविद्यालय, इटली
alessandra.consolaro@unito.it

**नॉटनल : ई-लायब्ररी संगठन,लखनौ** द्वारा ऑनलाइन प्रकाशन
नीलाभ श्रीवास्तव,सहसंस्थापक तथा प्रधान कार्यकारी अधिकारी

**प्रकाशक :** नॉटनल: ई-लायब्ररी संगठन, लखनौ

**संस्करण :** 2017

**आवरण:** प्रसन्ना देशमुख

**मूल्य:** रु.120 /-

**मुद्रक:** भारती मुद्रणालय,कोल्हापुर

## प्रस्तावना

यह पुस्तक दोस्ती से पैदा हुई है।
पद्माजी के साथ मेरे सालों के सहयोग के संदर्भ में, 2016 सितंबर में मुझे कोल्हापुर में GIAN कार्यक्रम की एक छोटी विज़िटिंग स्थिति मिली। मैंने उन तकनीकों, पद्धतियों और विधियों के बारे में चौदह पाठ पढ़ाए जो यूरोप में - विशेषकर तोरीनो विश्वविद्यालय में जहां मैं सिखाती हूं - हिंदी भाषा और साहित्य को पढ़ाने के लिए हम उपयोग करते हैं।
अस्सी से अधिक शिक्षकों और युवा विद्वानों ने कार्यक्रम में भाग लिया और उनकी प्रतिक्रिया इतनी सकारात्मक थी कि हमने सोचा कि इस अनुभव को अधिक शिक्षकों के साथ साझा करने के लिए होगा, क्योंकि आजकल हिंदी अंतरराष्ट्रीय भाषा बन चुकी है और अधिक से अधिक शिक्षक हिंदी सिखाने के लिए विदेश जा रहे हैं। मुझे यह मौका देने के लिए दिल से पद्माजी की आभारी रहूँगी।

तोरीनो, 11 जुलाई 2017

यह पुस्तक तोरीनो विश्वविद्यालय मानविकी विभाग द्वारा मिली हुई आर्थिक सहायता से प्रकाशित हुई।

## 1. भाषा सिखाने के तकनीक

इस अध्याय में भाषा सिखाने के उन मूल तकनीकों को शामिल किया जा रहा है जिसके प्रयोग से भाषा शिक्षण के मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति होती है । प्रत्येक तकनीक भाषा शिक्षण के प्रमुख पहलुओं को उजागर करने के साथ इनसे जुड़े मुल्यांकन, प्रमाणिकता और तकनीकी प्रयोग पर भी प्रकाश डालते हैं।

कोई भी विश्लेषण शुरू करने से पहले तकनीकी शब्दावली का अर्थ स्पष्ट किया जाना जरुरी है ताकि किसी भी स्तर पर भ्रामक स्थिति से बचा जा सके।

सबसे पहले आवश्यक है कि तकनीक को परिभाषित किया जाये और सम्बंधित स्तरों के बारे में जानकरी दी जाय । साधारण रूप से इन्हें तीन वर्गों/स्तरों में विभाजित किया गया है ।

क) पद्धति : इस प्रक्रिया के तहत भाषा शिक्षण या भाषा विज्ञान के मूल उद्देश्यों की पहचान कर उन्हें वैज्ञानिक रूप से परिभाषित किया जाता है । फिर इसे आधार मानकर एक ऐसी पद्धति विकसित की जाती है जिससे भाषा सिखाने के प्रयोजन को पूरा किया जा सके । इस स्तर पर तैयार किये गए सिद्धान्तो के वैज्ञानिक पहलुओं का विश्लेषण भी किया जाता है और सुनिश्चित किया जाता है की पद्धति की निरंतरता और प्रभाव बना रहे ।

ख) विधि : इसके अंतर्गत पढ़ाने की सामग्री और छात्रों द्वारा इन सामग्रियों के लिए किये गए कार्यों को जोड़कर एक व्यवस्थित माडल तैयार किया जाता है । अगर यह कहा जाय कि पद्धति सही - गलत या अच्छे- बुरे मानदंडों से परे है और साधारण शब्दों में केवल सक्रीय और सुसंगत तत्वों के योगदान से ही इसकी प्रक्रिया पूरी होती है तो गलत नहीं होगा । पद्धति संपन्न कराने में आवश्यक और योग्य कार्यों का चयन ही शिक्षण तकनीक का मुख्य आधार है ।

ग) भाषा शिक्षण तकनीक : यह कक्षाओं में संपन्न होने वाली गतिविधि है । इसका प्रयोजन विधि की सार्थकता तय करने के साथ साथ पद्धति के मूल उद्देश्यों को पूरा करना है । तकनीक को अच्छे-बुरे, आधुनिक-पुराने श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है बल्कि इसके लिए महत्वपूर्ण है कि - (1) ये पद्धति और विधि के अनुरूप हो और (2) शैक्षिक उद्देश्य को प्राप्त करने में प्रभावी हो ।

## *पाठ्यक्रम*

संयोगवश अब तक एकदम से नक़ल उतारी गयी दूसरों से मिलती जुलती और सभी संस्थानों के लिए भाषा सिखाने के सामान्य संरचना के प्रयोग का प्रचलन नहीं है बल्कि प्रत्येक अध्यापक के अपनी स्थिति और छात्रों के आवश्यकता अनुसार अपनाए जाने वाली सामग्री भी उपलब्ध है । लेकिन यह सुनिश्चत करने के लिए कि यह प्रयास केवल भाषा सिखाने तक सिमित न होकर ज्यादा जागरूक एवम रचनात्मक हो इसके लिए अध्यापकों द्वारा किसी स्वीकार्य और साझा योग्य मानदंडों को बढ़ावा देना आवश्क है।

क) ये भाषा सिखाने के लक्ष्य की आपूर्ति करते हों
ख) विशेष प्रयास जिससे निर्धारित लक्ष्य अधिक वस्तुपरक बने
ग) एक प्रकियापालन से सुनिश्चित किया जाय कि दिन भर भाषा के संपर्क में रहने और और भाषा सिखने के अलावा इसका प्रयोग करने वाला छात्र इस अनवरत शिक्षण का हिस्सा बन जाए और उसमे उसकी रूचि बरक़रार रहे ।
घ) तकनिकी भाषा शिक्षण/ शिक्षण / सिखने की प्रक्रिया का मुल्यांकन, विश्लेषण एवं अनवरत विश्लेषण

पाठ्यक्रम सिर्फ सामग्री या उद्देश्यों की एक सूची नहीं है, बल्कि यह एक जटिल प्रशिक्षण परियोजना है जिसमें विदेशियों के लिए उस के भाषा अनुरूप शिक्षण, शिक्षण के अलावा शिक्षकों द्वारा निर्धारित विशिष्ट शैक्षणिक लक्ष्य शामिल हैं ।

भाषा शिक्षण के पाठ्यक्रम में प्रस्तावित गतिविधियाँ अपने आप में शिक्षा के बृहद परिप्रेक्ष्य का हिस्सा हैं। और इस सन्दर्भ में संस्कृतिकरण, समाजीकरण और स्वतः संवर्धन जैसे शिक्षा के तीन उत्कृष्ट उद्देश्यों से सम्बंधित है । विस्तार से कहा जाय तो संस्कृतिकरण से समाजीकरण संभव हुआ और समाजीकरण से स्वतः संवर्धन का वातावरण तैयार हुआ ।
भाषा शिक्षा अपने क्षेत्र के उन विशेष उद्देश्यों की भी पहचान करती है जिनका संचार क्षमता के विभिन्न कारकों से गहरा सम्बन्ध होता है ।

भाषा शिक्षण में संचार क्षमता की अवधारणा को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है :

1 "**भाषा जानना**": यह पहलू भाषाई और गैर-भाषाई कोड से जुड़ा हुआ है

2"**भाषा के साथ क्या करना है इसकी जानकारी** " : रणनीति सम्बन्धी, व्यहवारिक और सामाजिक - सांस्कृतिक आयाम से जुडी अलग अलग स्थितियों में उचित कोड का उपयोग करना
3 "**भाषा में दक्ष होना " या भाषाविज्ञान की प्रक्रिया और भाषा कौशल जाहिर करने वाली बारीकियों में महारथ हासिल करना ।**

यहाँ प्रस्तुत उद्देश्यों के दायरों को कुछ और सिमित करके उन्हें गतिविधियों और अभ्यास के प्रयोग से समझा जा सकता है ताकि भाषा शिक्षण तकनीक को परिभाषित किया जा सके और इस मॉडयूल पर चर्चा हो

कक्षा में पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन करने के तकनिकी निर्देश
ऐसा समझा जाता है की शिक्षण तकनिकी सम्बंधित पहलू का भाषा शिक्षण शोध कार्यों में अवहेलना हुई है इनमे आम तौर पर सिर्फ पद्धति और विधि के व्याख्याओं पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया है। पर यह भाषा शिक्षण गतिविधियों की तकनीक है जो आम जीवन सहित कक्षाएं और विदेशी भाषा के अध्यापकों की सार्थकता सिद्ध करते हैं।

## *गतिविधियाँ या अभ्यास?*

शिक्षण तकनीक जिनके माध्यम से भाषा सिखाने की दक्षता हासिल करने के उद्देश्यों को हासिल किया जा सकता है, मुख्य रूप से "गतिविधि" और "अभ्यास" - दो वर्गों में विभाजित है।

भाषा शिक्षण गतिविधियां अंतर्गत भाषा का इस्तेमाल होता है हालाँकि भाषा से जुड़े संचार के उद्देश्य को हासिल करने के लिए यह सिमित समझा जाएगा। उदाहरण के तौर पर - सूचना का आदान प्रदान, सूचना के अंतरालों को भरना, खेलों में भाग लेना या विजय प्राप्त करना अथवा किसी को कुछ करने के लिए मनाना, इत्यादि । "गतिविधि" = रोल्प्ले यानि खेल या अन्य विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं अदा करना ।

अभ्यास - प्रशिक्षण के लिए तैयार किये गए अभ्यास वह तकनीक है जिनका उद्देश्य सिर्फ अभिव्यक्त करना नही है बल्कि भाषा को स्थापित और प्रभावित करना भी है ।
"अभ्यास" = संरचनात्मक कार्य , एकवचन को बहुवचन में परिवर्तित करना या वर्तमान को भूत काल में तब्दील करना अथवा एक स्थिति से दूसरी स्थिति दर्ज करना ..इत्यादि ।

तकनीकों के दोनों परिवार का विभाजन सूक्ष्म है - उदहारण के तौर पर अनुसरण करने के लिए दोनों गतिविधियों का विकल्प है अभिनय के संदर्भ में कहा जा सकता है कि इस माध्यम से रचनात्मक भूमिका अदा की जाती है सम्बंधित उद्देश्य प्राप्ति के लिए भाषा का उपयोग होता है जबकि "अभ्यास" के सन्दर्भ में नाटक एक उदाहरण है जिसमे छात्र को सिमित रूप से पढना है और कम से कम पहले से लिखित बातों को दोहराना है जिसमे किसी प्रकार की रचनात्मकता मौजूद नही है ।
भाषाशिक्षणके उपलब्ध दर्जनों तकनीकों में से कुछ प्रमुख को जानना आवश्यक है

क) तकनीक का प्रयोग अध्यापक और उसके द्वारा अपनाए गए पाठ्यक्रम पर पद्धति और विधि दोनों प्रक्रियाओं का परस्परविरोधी उपयोग करते हुए लागू नहीं किया जा सकता है। यदि अभिव्यक्तशील पद्धति का अनुसरण किया जाय तो अलग वैचारिक तत्वों को ध्यान देने में जुटे संरचनात्मक अभ्यास इधर उधर हो सकते है। यह संस्तुति को पद्धति विशुद्धतावाद के कारण नहीं बल्कि उस वास्तिवकता को भी ध्यान में रखते हुए किया गया है जो किसी छात्र के भाषा सिखने और समझने के लिए अपनाये गये उसके अपने तरीके पर निर्भर है । कोई अन्य तकनीक जो छात्र के अनुरूप नहीं है बावजूद इस विश्वास के कि यह उसे सहायता पहुंचाएगा उसे दिग्भ्रमित कर सकता है।

ख) किसी भी तकनीक के प्रयोग से पहले फिर चाहे ये शैक्षणिक परम्परा अथवा इस नियमावली से ही क्यों न ग्रहण की गयी हो तकनीक का वास्तविक उद्देश्य जानना उचित रहेगा । उदहारण के लिए अनुवाद का उद्देश्य अक्षर के आकर वाक्य रचना या शब्दों के विस्तार से सम्बंधित नहीं है बल्कि विषय को सांस्कृतिक और व्यहवारिक रूप प्रदान करना है । इतालवी या हिंदी भाषा में लिखावट सुन्दर

बनाने के लिए श्रुतलेख का महत्व है । इसी तरह फ़्रांसिसी भाषा में अक्षर की बनावट के साथ साथ वाक्य रचना पर भी बल दिया जाता है ( इनमे कुछ वो शब्द भी हैं जिनके आखिरी अक्षर तो लिखे होते हैं पर उनका उच्चारण नहीं होता) । अंग्रेजी भाषा में ग्रैफेमिक का उपयोग याददाश्त परिक्षण के लिए काम आता है । जर्मन भाषा के व्याकरण को शब्दों में संज्ञा पहचान के लिए विश्लेष्ण की आवश्यकता होती है ( इसलिए इन शब्दों के बड़े अक्षरों या कैपिटल लेटर में लिखा जाना जरुरी है ) या श्रुतलेख है पर अलग अलग उद्देश्यों के साथ ।

तकनीक अपने अच्छे -बुरे सन्दर्भों या भाषा शिक्षण के इतिहास ( रुढ़िवादी /नवीन) के सम्बन्ध में मूल्यों के आंकलन की अनुमति नहीं देते बल्कि केवल पद्धति के साथ सामंजस्य बनाए रखते है । वांछित प्रभाव पाने के लिए उत्पादन की प्रभावशीलता कायम रखते है।

## *शिक्षण सामग्री*

पारंपरिक तौर पर एकवचन में परिभाषित शब्द "शैक्षिकसामग्री" को पाठ्यपुस्तककहा गया है । पर मौजूदा दौर के पाठ्यपुस्तकों को प्रकाशित सामग्री, आडिओ , विडिओ और डाटा के समूह में सम्मिलित किया गया है । इसके अलावा आज एक तरफ “शैक्षिक सामग्री” जिनकों पढाने के लिए डिजाइन किया गया था और दूसरी तरफ फिल्म , समाचार पत्रों के लेख , रेल टिकट , विज्ञापन आदि से सम्बंधित “प्रमाणिक सामग्री” जिनका मूल उपयोग पढ़ाई के काम में नही था पर भी बहस छिड़ी हुई है ।
इस तरह की सामग्री का उपयोग का प्रचलन हालाँकि प्रत्यक्ष विधि में पहले से ही रहा है पर अब संरचनात्मक पद्धति में इसकी सार्थकता विशेष तौर पर सिद्ध हो चुकी है । हाल के वर्षों में भारत समेत अन्य देशों की यात्रा में सुविधा , दुनिया भर में मिडिया का विस्तार और रिकॉर्डिंग तकनीक में सुधार के कारण ही तैयार प्रमाणिक सामग्री आसानी से उपलब्ध हो रहे है । पर प्रमाणिकता को लेकर मौलिक सवाल अब भी अपनी जगह पर है - वह यह कि कक्षाओं में शैक्षिक उद्देश्य के लिए प्रयोग करने के बाद ही सामग्री की प्रमाणिकता मानी जायेगी अथवा वह प्रयोजन मान्य होगा जिसे लेकर यह प्रक्रिया बनी है ।

प्रमाणिक सामग्री के बारे में चर्चा से अधिक ज्यादा सही होगा उपयुक्त सामग्री के विषय में बात करना । किसी हिंदी बोलने वाले हिंदी भाषी को प्रमाणिक कहा जा सकता है बशर्ते उसे मैनुएल के लेखक या एक अध्यापक द्वारा अपने छात्र के स्तर , उसकी मातृभाषा और संस्कृति के प्रति उसकी दिलचस्पी के देखते हुए स्थापित किया गया हो ।

## *भाषाई कौशल*

**"चार कौशल" के पारंपरिक मॉडल**

पारंपरिक भाषा कौशल की दो धुरियाँ निर्धारित की गयी है।

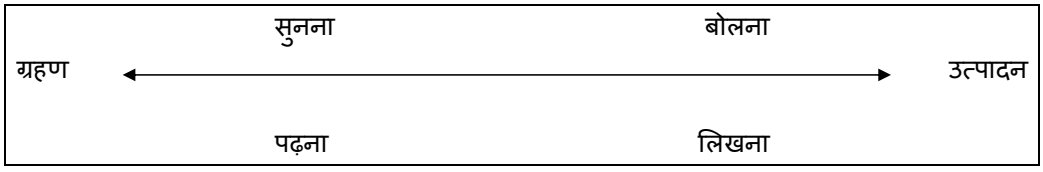


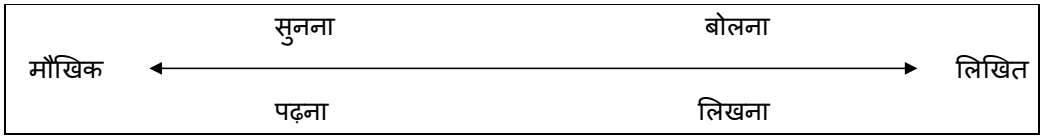


दो धुरियों पर आधारित पारम्परिक भाषा कौशल :

सुनना - बोलना

आगामी - उत्पादन

पढना - लिखना

सुनने से - पढने तक

लिखित- मौखिक

बोलना - लिखना

वास्तव में "बोलने" या बात करने को अमूमन संवाद समझ लेने के कारण स्थिति काफी जटिल नजर आती है पर जब शुद्धता पर बात होती है तो उसे मोनोलॉग अथवा "एकालाप" का दर्जा दिया जाएगा जैसे - प्रश्न का उत्तर देने को संवाद नहीं बल्कि अध्यापक द्वारा दिए गए विषय पर उत्तर देने की प्रक्रिया "एकालाप" है इसी प्रकार किसी घटना के बारे में बताना , एक भारतीय लोककथा, ब्राजीलियन चुटकुला, अल्बेनिया की घटनाओं की चर्चा इत्यादि इसी श्रेणी में शामिल किया जाएगा।

अध्ययन कौशल केवल पढ़ या लिख लेने को नहीं माना जा सकता बल्कि यह इससे बिलकुल भिन्न है - यही कारण है कि हिंदी भाषाविज्ञान की सरंचना को भाषा कौशल के जटिल माडल पर निर्धारित किया जाना चाहिए ।

साल १९७९ में कमिंस द्वारा सक्षिप्त रूप से परिभाषित (BICS) बिक्स और काल्प (CALP) शब्दों को अध्यापक अपने छात्रों की भाषा योग्यता तय करने की सन्दर्भ प्रक्रिया के रूप में लेते है ।[1]
Basic Interpersonal Communicative Skills (BICS) = बुनियादी अंतर- वैयक्तिक संचार क्षमता

अदालतों या फिर खेलों के बारे में इस्तेमाल होने वाले रोजमर्रा की भाषा का उपयोग करके अध्यापकगण विदेशी छात्रों को न केवल भाषा संरचना सिखाते है बल्कि टीवी अथवा घर- आंगन में सीखी गयी उनकी भाषा को सुव्यवस्थित करने में सहायता भी प्रदान करते हैं । इसके अलावा छात्रों को स्वयं समझ में नहीं आने वाले कुछ अन्य तत्वों से भी अवगत कराया जाता है । बिक्स के अनुसार चार बुनियादी कौशल जिनमे लेखन और संवाद भी शामिल है को पर्याप्त माना गया है।

Cognitive Academic Language Proficiency (CALP) = छात्रों की स्कूली सफलता से जुड़े प्रासंगिक अवधारणाओं एवम विचारों के मौखिक और लिखित दोनों रूपों को समझने के साथ साथ उन्हें अभिव्यक्त करने की क्षमता :
क) कैल्प अंतर्गत समन्वित क्षमता सहित मूलपाठ में परिवर्तन ला पाने की योग्यता को भी परखा जाता है । इसके अध्ययन के लिए न केवल इस्तेमाल होने वाली सामग्री की गहरी समझ बल्कि मौखिक या लिखित रूप से पढाये जाने वाले पाठों के नोट लेने की क्षमता भी होनी चाहिए ।
ख) महत्वपूर्ण बिंदुओं की पहचानकर संक्षेप में बताने या लिखने की क्षमता ।
ग) भाषाविज्ञान के सिमित साधनों के बावजूद कुछ पढ़कर अथवा सुनकर उसके संक्षिप्त व्याख्या की क्षमता

**समझने की प्रक्रिया**

मौखिक, लिखित अथवा दृश्य -श्रव्य की क्षमता मुख्यतः तीन कारकों पर निर्भर है :
१। अनुमान लगाने की क्षमता ताकि कहे जाने वाले बातों का पहले से अंदाजा लगाकर मस्तिष्क के तार्किक अथवा समझने की प्रक्रिया से जुड़े हिस्सों का समुचित विश्लेषण कर सके और इसके आधार पर मूल पाठ में दिए संभावित व्यावहारिक या प्रत्याशा व्याकरण की जानकारी हासिल कर ले । इसमें विषय से जुडी पूर्व जानकारी भी अनिवार्य है।

क) दिए गए परिस्थितियों में क्या हो सकता है - हमारे लिए एक ही परिस्थितियों में पले - बढे होने के कारण चीजें साफ और स्पष्ट होंगी जबकि अमूमन यही परिस्थितियां किसी विदेशी छात्र के लिए अजनबी, नई और अप्रत्याशित।

[1] Cummins, J. 1979. "Cognitive/academic language proficiency, linguistic interdependence, the optimum age question and some other matters." *Working Papers on Bilingualism*, No. 19, 121-129.

ख) किसी विषय की चर्चा के दौरान प्रयोग में लाये गए शब्दावली को लेकर अध्यापक और छात्र के बीच में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है खासतौर पर जब अध्यापक को यह लगने लगे कि छात्र को इस्तेमाल किये गये शब्दों का पता है और उसका वह पूर्वानुमान लगा सकता है पर असल में छात्र इस बारे में पूर्णतया अनभिज्ञ हो ।

ग) कथानक , सूचना प्रधान और किसी सन्दर्भ सम्बन्धी विषयों के भाषाई नियम और सम्मेलनों या हास्य-व्यंग में प्रयुक्त संचार शैली के नियम एक दूसरे से भिन्न और अलग अलग संस्कृतियों से ताल्लुक रखने के बावजूद कुछ समानता रखते हैं। क्योंकि इनमे कुछ तत्व सार्वभौमिक हैं ।
घ) वाक्य रचना : "यदि" शब्द के प्रयोग से शुरू किये गए किसी भी वाक्य की अगली लाइन में "तब" का प्रयोग अनिवार्य माना गया है पर विदेशी छात्र आम तौर पर इन नियमो में पारंगत नहीं होते हैं ।

२) भाषा बोलने वालों के बीच साझा होती दुनिया की जानकारी ।

क) ठेठ परिस्थियों में स्वाभाविक बातचीत : एक बार में दो लोग आपस में मिलते है और एक दुसरे का अभिवादन करते है । वे एक दूसरे को कुछ लेने का अनुरोध करते हैं जो स्वीकार्य या फिर मना किया जाता है । फिर धन्यवाद और आर्डर की चीजों को पाने के बाद उसका भुक्तान और एक दूसरे से विदाई । लेकिन विदेशी छात्र स्थानीय जीवन से पूरी तरह परिचित नहीं होने के कारण ठेठ परिथितियों में प्रयुक्त होने वाले शब्दावली का प्रयोग नहीं कर पाते । उन्हें चीजों का पूर्वानुमान लगाने , समझने और उसके अनुसार आचरण करने में कठिनाई महसूस होती है ।

ख) समझ में आने वाले अर्थ सम्बन्धी तत्व जिससे विषय वस्तू के संभावित बदलाव प्रभावित होते हैं - एक बार में बैठकर आप गर्म पेय पदार्थ , ताजी चीजें, या मदिरा का सेवन कर सकते हैं । काफ़ी एक गर्म पेय पदार्थ है जो बड़े या छोटे गिलास में हल्की या फिर कड़क हो सकती है पर किसी भी अप्रवासी के ऐसी परिस्थितियों से जुड़े अनुभवों में कमी के चलते उसके स्वभाव में उभरने वाले नाटकीय तत्वों को स्वीकार किया जाना चाहिए ।
हिंदी भाषा कैसे समझी जाय इसके लिए सबसे पहले संज्ञानात्मक प्रक्रिया पर ध्यान देना आवश्यक होगा क्योंकि अमूमन निष्क्रिय रहने वाला यह प्रक्रम प्रत्याशा व्याकरण को संचालित करता है ।

**संज्ञानात्मक विकास के तकनीक**

सुनने और पढने की क्षमता सम्बन्धी प्रत्याशा व्याकरण के विकास के निम्नलिखित मुख्य तकनीक:

- क्लोज़ ( मूल पाठ में लुप्तप्राय शब्दों का इस्तेमाल )
- भाषा और छवि का एक साथ प्रयोग
- किसी एक संवाद के वाक्यों को जोड़ना
- कामिक्स जोड़ना
- पंक्तियों को जोड़ना

- टेक्स्ट जोड़ना

उपरोक्त सभी तकनीक कल्पनाशीलता की योग्यता में वृद्धि करते हैं । परिस्थिति आधारित , अर्थ –सम्बन्धी अथवा औपचारिक रूपों से जुड़े इन तत्वों की उपस्थिति मूल पाठ के किन्ही खास बिन्दुओं या घटनाओं में महसूस की जा सकती है । इन प्रेरक तकनीकों को छात्रों की उनकी स्वयं की योग्यता परख के लिए घर में एक वैयक्तिक गतिविधि के तौर पर अपनाया जा सकता है ।

क्लासरूम में ये तकनीक सिखाने और समझने की गतिविधियों में हुई प्रगति की परख के लिए उपयोगी होने के साथ- साथ सुनने या पढने की योग्यता बढाने के विशेष परिस्थितियों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं ।

खुला प्रश्न

ग्रिड

बहु- वैकल्पिक

ट्रांस्कोडिंग ( पंक्तियों के अंश को चित्रों की सहायता से व्यक्त करना ) उदाहरण - किसी एक पाठ को सुनने और पढने के बाद उसमे बताये गए जानकारियों को चित्रों के माध्यम से व्यक्त करना

यह समझ की प्रकिया को बढ़ावा देने वाला या अध्यायों को पढने , सुनने सहित उन्हें देख लेने के बाद उसे जांचने का एक पारम्परिक तकनीक है । इसमें यह आवश्यक है कि वितरित किये जाने वाले पाठों को वितरण से पहले बिल्कुल न पढ़ा जाय।

**भाषा उत्पादन क्षमताएँ**

**विदेशी छात्रों से पाठों को दो प्रकार से प्रस्तुत करने को कहा जाता है । इसमें वह स्वयं बोलता या लिखता है।**

1.“एकालाप” (मोनोलॉग)

पहले से ही निर्धारित विषय पर संक्षिप्त में बोलना

एकलाप या मोनोलॉग संचालन की अपनी एक महत्वपूर्ण समस्या है जिसके अंतर्गत केवल छोटे समूहों में ही बोलने वाले छात्र व उनके सहयोगियों का अनवरत ध्यान और उत्साह बनाये रखना संभव है । जबकि बड़े समूहों में मोनोलॉग अन्य सभी साथियों को सुनने की गतिवधि का रूप ले लेती है । उदाहरण के तौर पर । कोई सामूहिक जासूसी कथा की रचना कर मोनोलॉग की क्रमबद्ध श्रृंखला तैयार की जा सकती है इस कथा में कोई छात्र पुलिस की भूमिका में होगा और अन्य साथी अपराध और जांच के गवाह बनेंगे । जब सब अपनी अपनी घटनाओं के बारे में बता रहें हो तो सभी छात्रो को एक दूसरे को सुनना है और इस बात का भी ध्यान रखना है की आपस में टकराव और संदेह की स्थिति न उत्पन्न हो । इसमें एक के बाद एक बारी बारी से क्रमानुसार कॉमिक का वर्णन करना भी शामिल है । यह प्रक्रिया किसी एक विद्दयार्थी से शुरू होती है और फिर उसके द्वारा कुछ पंक्तियों को रचने के बाद अध्यापक के निर्देश पर अन्य छात्रों को अवसर दिया जाता है । इस प्रकार ये सिलसिला जारी रहता है

और यदि इस एकालाप को रिकॉर्ड किया जाय तो अलग अलग समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है । उसे बार बार सुनकर सम्बंधित सुधार भी किये जा सकते है । इसी प्रकार सामूहिक रूप से विचारों में सुधार और प्रशिक्षण की सहायता से अध्यायों की गुणवता कायम की जा सकती है ।

2.लिखित रचना
-उत्कृष्ट विषयवस्तु
-विवरण में शाब्दिक शुद्धता और स्थान विशेष आधारित विषयों को प्रमुखता दी जानी चाहिए
-क्रियाओं और काल की संरचना पर विशेष ध्यान देते हुए घटना आधारित रिपोर्ट प्रस्तुत करना
- कथा
-औपचारिक और अनौपचारिक पत्र लेखन
-नियामक विषय वस्तु (टेक्स्ट) निर्देश , खेल स्पष्टीकरण , वैधानिक प्रावधान, अनुदेश , मैनुअल , खाना पकाने की विधि शामिल है ।
-संक्षिप्त परिभाषा इत्यादि

लिखित रचना को एक मुश्किल परिक्षण माना गया है इसके संज्ञानात्मक , विशेष सूचना प्राप्ति और भाषा प्रवाह तीन महत्वपूर्ण घटक हैं। । छात्र अपना ध्यान पूरी तरह से भाषा पर केन्द्रित कर सकें इसके लिए लिखित रचना के उद्देश्यों और उनके विभिन्न आयामों पर पूर्व चर्चा जरुरी है । इसमें सूचना, समालोचना , प्रतिबिम्ब , कल्पनाशीलता , वैचारिकता , प्रदर्शन और प्रभाव को शामिल किया जा सकता है ।

**एकीकृत क्षमताएँ**
ये "एकीकृत" कहे जाते हैं क्योंकि इनके माध्यम से ग्रहणशील , उत्पादक , मौखिक और लिखित क्षमताओं की अंतर्क्रिया संभव है जैसे : संवाद करना , श्रुतलेख और नोट्स लेना

**संक्षिप्त प्रस्तुति की क्षमता और प्रक्रिया**
क) इस प्रक्रिया अंतर्गत सूचनाओं को संक्षेप में लिखने के लिए ध्यान केन्द्रित करने की विधि बताई जाती है । विदेशी छात्रों को लम्बे वाक्य - पंक्तिया बनाने में कठिनाई पेश आने के कारण यह प्रशिक्षण हिंदी भाषा बोलने के लिए उपयोगी है । इसमें शिक्षण के व्यहवारिक और वैचारिक उपयोग की क्षमता विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है
ख) संक्षिप्त व्याख्या की जानकारी अभिव्यक्ति के बाधाएं दूर करता है । इसमें समान अर्थी एक व्याख्या को अलग तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है ।
अनुवाद की क्षमता अर्थात शब्दों के उलझन से बचते हुए विषय का पुनर्संयोजन

**"भाषा के साथ कुछ कर पाना " : व्यावहारिक-सामाजिक क्षमता**

**संचार क्षमता के इस घटक को निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया जा सकता है :**

क) संचार के माध्यम से व्यहवारिक क्षमता के उद्देश्य हासिल करना । इसमें भाषा के विभिन्न मानकों को बोलने की प्रक्रिया के दौरान उपयोग करना होता है ।
ख) सटीक संचार विधियों का समाज भाषा-विज्ञान , सम्बन्धपरक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रयोग की सामाजिक क्षमता
दूसरे शब्दों में , एक विदेशी छात्र को सामाजिक व्यावहारिकता में निपुण तब माना जाएगा जब वह हिंदी भाषी समाज में भाषा का सही सन्दर्भ और संचार अनुकूल स्थिति में प्रयोग करते हुए अपनी मनचाही वस्तु हासिल कर ले।
बातचीत करने के लिए यह आवश्यक है कि :
- स्क्रिप्ट या "स्थिति आधारित स्क्रिप्ट" लिखने की जानकारी हो
- सामाजिक स्थिति में अपनी भूमिका को परिभाषित किया जाय
- उद्देश्य बताने के लिए पहले से तैयारी की जाय (सामरिक क्षमता)
- वार्ताकारों के उद्देश्य समझने की कोशिश
- अस्पष्ट अर्थों को जानने के लिए चर्चा हो ।

किसी एक व्यक्ति के अच्छी सामाजिक व्यहारिक क्षमता हासिल कर लेने के क्या मायने है ? स्कूलों में सही और गलत तर्क के आधार पर योग्यता आंकलन का प्रचलन आज भी पाया जाता है । लेकिन भाषा को सामाजिक गतिविधियों को महत्वपूर्ण साधन मानने की स्थिति में इस प्रकार के वर्गीकरण सही नहीं हैं ।

**बातचीत करने में सक्षम होने के विकास के तकनीक**

एक गैरदेशीय भाषा में संवाद कैसे स्थापित किया जाय इसे सिखने को लेकर कुछ तकनीक हैं जो विद्यार्थी को दी गयी स्वायतता और उसके रचनात्मकता के बीच अंतर पर आधारित है।

स्वायतता का बढ़ता क्रम ही कठिनाई का कारण : -
क) नाटकीय रूपांतर
ख) वार्ता श्रृंखला
ग) खुली बातचीत
घ) भूमिका लेना - रोल टेकिंग (एक बहुत ही संचालित निर्देशित भूमिका अदा करना ) भूमिका बनाना - रोल मेकिंग (जिसमें विद्यार्थी की रचनात्मकता ज्यादा स्थिर होती है ), रोले प्ले यानी भूमिका निर्वाह का स्तर ( जहाँ स्थिति के आधार पर संवाद स्थापित होता है) ।
ङ) फ़ोन पर बातचीत

असल में विदेशी भाषा शिक्षण के संरचनात्मक पद्धति से सम्बंधित ज्यादातर तकनीकों का कक्षाओं में क्रियान्वयन मुश्किल है । अस्वभाविक वातावरण और संचार के दृष्टि से कमजोर लोंगो के बीच संवाद स्थापित करने का प्रयास इसका मुख्य कारण है ।

इन गतिविधियों के प्रभाव में सुधार लाने के लिए किसी हिंदी भाषी साथी का बातचीत करने के उद्देश्य से होना प्रासंगिक है । छात्र के साथ किये गए बातचीत की रिकार्डिंग को सुनकर गल्तियों की पहचान , उसका आलोचनात्मक विश्लेषण और सम्बंधित पहलूओं पर चर्चा संभव है ।

प्रदर्शन पर चर्चा और विश्लेषण का मानदंड पारम्परिक शैक्षिक सुधारों में अपनाए गए तरीकों और केवल औपचारिक सुधार तक ही सिमीत नहीं है बल्कि इसमें स्थितिजन्य और सामाजिक सांस्कृतिक औचित्य भी शामिल हैं ।

व्यापक संचार योग्यता अंतर्गत भाषा विज्ञान क्षमता स्वर विज्ञान, वाक्य रचना , विषय , शब्दावली जैसे कई पहलुओं की निपुणता पर निर्भर करता है

पारम्परिक तौर पर भाषा ज्ञान के लिए केवल व्याकरण जानना पर्याप्त था पर बाद के दिनों में भाषा की औपचारिक शुद्धता को मुल्यांकन का पहला मानदंड कहा गया ।

भाषा शिक्षण सम्बन्धी संचारात्मक पद्धति में भाषा विज्ञान क्षमता की भूमिका को अनिवार्य मानते हुए उसे पुनर्परिभाषित किया गया ।

विभिन्न व्याकरणों पर संजीदगी से किये गए पिछले और मौजूदा कार्य सामाजिक एवं भाषाविज्ञान दोनों क्षेत्रों की आवश्यकता है । विदेशी व्यक्तियों की गल्तियाँ उजागर करना एक तरह से उनमें भेद भाव या उन्हें नीचा दिखाने जैसी स्थित उत्पन्न करता है । “अगर उन्हें ठीक तरह से बोलना नहीं आता तो किसी बात का दावा भी कैसे कर सकते हैं”।

व्याकरण पढ़ाने का मतलब इसके नियम व्याकरण के कारणों को उजागर करने के साथ साथ छात्रों को इस बात के लिए भी प्रेरित करना कि वो कुछ हद तक भाषा सिख सकें । ये उनकी जिम्मेदारी है और इसमें छात्रों का कौशल स्तर बिलकुल बाधक नहीं है । अध्यापक के लिए छात्रों की अनिश्चितताओं को दूर करने साथ उनके भूलों में भी सुधार लाना अनिवार्य है। छात्रों की योग्यता को व्यवस्थित कर उन्हें ज्ञानी बनाना सबसे बड़ी ख़ुशी की बात है ।

**मौखिक तथा अमौखिक भाषाओँ को परस्पर जोड़ने की जानकारी**

भाषा विज्ञान क्षमता विकसित कर लेने के बाद संचार अभ्व्यक्ति के लिए एक अन्य समूह के व्याकरण वाले अतिरिक्त - भाषा विज्ञान क्षमता में पारंगत होना अनिवार्य है । इसमें भाषा के साथ प्रयोग में लाये जानी वाले कोड जिनसे कुछ भाषाई अर्थों को बल मिलता है या कई बार मौखिक भाषा के बदले में प्रयुक्त होते है की जटिलता को समझना होता है ।

अतिरिक्त भाषा विज्ञान क्षमता
क) विभिन्न इशारों , चेहरे के भाव भंगिमाएं और शारीरिक मुद्राओं को समझने एवं उनका उपयोग करने की क्षमता

ख) दूरी को ठीक तरह से समझने की क्षमता - किसी अन्य व्यक्ति से संपर्क और उससे उसकी दूरी के आंकलन से सम्बंधित है।
ग) शारीरिक गंध प्रणाली के महत्व पर गौर करना । ये सिर्फ एक जैविक और मनोवैज्ञानिक अनुभूति नहीं बल्कि इसमें इसका सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष भी शामिल है । गंध का संचार प्रबंधन । खुशबू को अक्सर सुखद कहा गया है पर अनेक संस्कृतियों में पुरुषों पर इत्र का प्रयोग दुराचार और विकृति का प्रतीक है । दुर्गन्ध - उदहारण के लिए खाने और सफाई के व्यवहार पर निर्भर पसीने की दुर्गन्ध को किसी किसी संस्कृति में बुरा मानकर वर्जित किया गया है जबकि अन्य संस्कृतियों में ऐसा कुछ नहीं है ।
घ) फैशन के कुशलतापूर्वक प्रयोग की योग्यता -औपचारिक कपडे जिसमे वर्दी भी शामिल है के अलावा अनौपचारिक छोटे बड़े आकार सहित विभिन्न फैशनेबल वस्त्र ।
ङ) सामाजिक स्तर दर्शाने के लिए वस्तुओं का एक साधन के रूप में प्रयोग - इन वस्तुओं में किसी कम्पनी कार्यालय में रखे गए फर्नीचर समेत उपहार सामग्री और अन्य शानो -शौकत की प्रातीक बन चुकी वस्तुएं शामिल हैं मोबाईल और कुत्तों के विभिन्न नस्ल जो एक तरह से भारत में लोगों के रहन सहन और सामाजिक स्तर बयान करने के प्रतीक बन चुके हैं ।

**शिक्षण तकनीक और खेल का महत्व**

शिक्षा में खेलों के उपयोग को लेकर व्यापक धारणा ये है कि गंभीर और आसान प्रवित्ती की गतिविधियों के बीच एक अंतराल रखा जाय जिससे कुछ देर आराम का मौका मिले और दोबारा गंभीर किस्म के कामों को पूरा करने के लिए स्फूर्ति बनी रहे ।
खेलपूर्ण विधि में खेलों का प्रयोग शैक्षिक महत्व के लिए होता है । इसमें बगैर कोई जोखिम मोल लिए पढने और वास्तविकता की तरफ बढ़ने की प्रेरणा भी मिलती है । इसमें खेलने के दौरान अगर कोई गल्ती होती है तो सिर्फ खेल में हार होगी पर कोई बड़ा नुकसान नहीं होगा ।

खेलपूर्ण वातावरण बनाए रखने या कम से कम छात्र को इस प्रारूप में शामिल करने से उसे उसके संरचनात्मक गतिविधियों के बावजूद खेल का आनंद मिलता है ।

खेलपूर्ण वातावरण को गतिविधियों के विभिन्न वर्गो में महसूस किया जा सकता है :

- सिमुलेशन गतिविधियाँ ( नाटक के माध्यम से निर्देशित गतिविधियों का अनुकरण ) (roleplay और नाटक )
- पथ पर खेल (सांप और खजाने की खोज।)
- प्रतियोगिता आधारित खेल (जोड़े और टीम बनाकर )
- स्मरण - शक्ति संम्बंधित खेल (मेमोरि खेल)
- सूचना के खालीपन की पूर्ति आधारित खेल (किसी शहर का नक्शा देखकर मार्ग अनुसरण करना ; किसी साथी के "श्रुतलेख" के आधार पर चित्र बनाना , कमरे में रखी गयी वस्तु का पता लगाना )
- नर्सरी गाने -स्मरण शक्ति , चीजों को व्यवस्थित करने और उन्हें सहेजकर रखने से जुडी मजेदार गतिविधि)
- गति से जुड़े खेल ।( इनकी सामाजिक उपयोगिता का उद्देश्य स्पष्ट है और भाषा स्तर पर भी लागू किया जाने के दिलचस्प संकेत मिले हैं )

## *संदर्भग्रंथ सूची*


Savage, K. Lynn , Gretchen Bitterlin, and Donna Price. 2010. *Grammar Matters Teaching Grammar in Adult ESL Programs*। Cambridge University Press .

Mystkowska-Wiertelak, Anna, and Mirosław Pawlak. 2010. *Second Language Learning and Teaching Production-oriented and Comprehension-based Grammar Teaching in the Foreign Language Classroom.* Springer-Verlag Berlin Heidelberg.

Hancock, Mark. 2010. *Singing grammar. Teaching grammar through songs*. Cambridge : Cambridge University Press.

## 2. भाषा शिक्षण का एक संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय

भूमिका के रूप में मैं भाषा शिक्षण का एक संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय देना चाहूंगी । मुझे मालूम है कि आप शिक्षक हैं, तो मैं कुछ बातें जिन्हें आप पूरी तरह से जानते हैं दोहराने के लिए माफी माँगती हूँ । मैं भाषा शिक्षण का पूरा इतिहास नहीं दे पाऊँगी और न ही मैं एेसा करना चाहती हूँ । केवल ऐसी पद्धतियाँ और विधियाँ आपके सामने पेश करुँगी जिनका मूल भले ही पुराना है लेकिन जिनके प्रभाव का विस्तार अभी भी हो रहा है ।

**१. रूपवादी पद्धति (Formalist Approach) और व्याकरण अनुवाद विधि ।**

अठारहवीं सदी में भाषा अध्ययन के लिए एक ऐसी पद्धति शुरू हुई जो वर्तमान के दिनों तक बहुत महत्वपूर्ण रही । यह है रूपवादी पद्धति । उन दिनों यूरोप में लैटिन भाषा, जिसका प्रयोग व्यापार और साहित्य में किया जाता था, लोकभाषा नहीं रही । लैटिन एक जीवित भाषा से, जो संचार के उद्देश्य से सीखी जाती है, एक मृत भाषा बन गई । उसी समय अनुवाद की परिभाषा यह हो गई कि अनुवाद इस तरह किया जाना चाहिए कि वह सर्वोपरि व्याकरण, आकृति विज्ञान तथा वाक्य रचना (morphosyntactic) के नियमों के अनुसार मूल पाठ के जितना निकट हो सके उतना निकट होना चाहिए ।

लैटिन स्कूल के पाठ्यक्रम में एक विषय बनी हुई है, लेकिन अब एक संचार का माध्यम नहीं है । वह केवल तार्किक कौशल के विकास के लिए एक "मानसिक व्यायाम" बन गई है । भाषा अपने जीवित, शारीरिक, मौखिक वास्तविकता से कोई संपर्क नहीं रखकर सामाजिक, भौगोलिक और स्थितिजन्य-प्रासंगिक परिवर्तनशीलता के पहलुओं के लिए किसी भी विचार के बिना व्याकरण के नियमों और उनके अपवाद का एक सेट हो जाती है, वह "स्थिर" हो जाती है, गौरव ग्रंथों की शास्त्रीय भाषा के रूप में जम जाती ।

इसके जल्द बाद ही आधुनिक, जीवित भाषाओं को पढ़ाने के लिए शास्त्रीय भाषाओं के लिए बनाई गई शिक्षण पद्धति इस्तेमाल की जाने लगी । इस पद्धति में morphosyntactic नियम और शब्दावली छात्रों की मातृभाषा का उपयोग करके प्रस्तुत किए जाते हैं । वे शिक्षार्थियों की मातृभाषा के माध्यम से सिखाए जाते हैं और वे उनको एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करके याद करते हैं । इसके कारण मौखिक और बातचीत सम्बंधित गतिविधियां कम हो जाती हैं ।

इस पद्धति से निकली व्याकरण-अनुवाद विधि का परिणाम यह हुआ कि भाषा सीखते समय संचार की असली स्थितियों में इस भाषा का उपयोग न सीख पाने के कारण छात्र यह भाषा न समझ सकते हैं और न ही बोल सकते । दूसरी ओर, इस विधि की सफलता के कारणों में मुख्य दो कारण हैं:

1) यह माना जाता था कि आधुनिक भाषाओं को क्लासिकल भाषाओं की तरह पढ़ाने से उनकी गरिमा बढ़ती है;

2) शिक्षण की आसानी : शिक्षण का मतलब यह था कि केवल भाषा के व्याकरण की संरचनाओं की व्याख्या की जाए और इसके बाद किसी भी वास्तविक या यथार्थवादी उपयोग और संचार की परिस्थिति के बहार अध्ययन का मूल्यांकन किया जाए ।

आज भी यह पद्धति सबसे अच्छी मानी जाती है और आम आदमी द्वारा इसकी सराहना बनी हुई है । वास्तव में यह बेहद ख़तरनाक है, क्योंकि इसमें ध्यान भाषा के उत्पादन पर, व्याकरण पर, निष्क्रिय रटे हुए नियमों पर होता

है, जो छात्रों द्वारा सक्रिय रूप से खोजे और समझे नहीं जा सकते । इस पद्धति में जो संज्ञानात्मक और भाषाई प्रक्रियाएं भाषा के अधिग्रहण का आधार होती हैं वे बिलकुल उपेक्षित रहती हैं ।

**२. प्रत्यक्ष विधियाँ**

उन्नीसवीं सदी से पहले यूरोप में भी और संयुक्त राज्य अमेरिका में भी कुछ रुपवादी पद्धति के ख़िलाफ़ प्रतिक्रियाएँ हुईं, जो प्रत्यक्ष विधि के लेबल से इकट्ठी हुईं । उसी समय पर्यटन में वृद्धि के कारण विदेशी भाषाओं में बात करने की ज़रूरत उठी । इस बात पर ध्यान दिया गया कि बच्चे व्याकरण सीखे बिना बोलना सीख लेते । प्रत्यक्ष विधि न्यूयॉर्क में मैक्सीमिलियन बेर्लिज़ (Maximilian Berliz) द्वारा बनाई गई और यह जल्द ही यूरोप में फैली ।
प्रत्यक्ष विधि का मूल आधार है कि एक विदेशी भाषा जानने का मतलब यह है कि उसमें सोचा जा सके जैसा कि मातृभाषा के साथ होता है । इसलिए मातृभाषा के अधिग्रहण का जो रास्ता होता है वही रास्ता दूसरी या विदेशी भाषा में भी बनाना है । सब पाठ लक्ष्य भाषा में सिखाये जाते हैं ।
इस विधि में विदेशी भाषा इस तरह सिखाई जाती है :
1) "संपर्क" से : आमतौर पर शिक्षक देशी वक्ता होते हैं , वे “प्राकृतिक” वातावरण में पढ़ाते हैं । कक्षा में विचारों के एसोसिएशन का अर्थ स्पष्ट करने के लिए प्रदर्शन, चित्र, इशारों का बहुत उपयोग किया जाता है । बातचीत के माध्यम से पूरी पढ़ाई होती है ।
2) छात्रों की मातृभाषा के उपयोग के बिना;
3) व्याकरण में जो गलतियाँ होती हैं उनके बारे में ज़्यादा चिंता नहीं करनी चाहिए। शिक्षार्थियों के संचार कौशल का निर्माण करने के लिए प्रश्नोत्तर ड्रिल का प्रयोग किया जाता है । छात्र की मदद करने के लिए व्याकरण से चुने हुए उदाहरणों के उपयोग के माध्यम से उपपादन (inductive) के तरीक़े से सिखाया जाता है। रोज़मर्रा की शब्दावली पर ध्यान दिया जाता है । पाठ्यपुस्तकों का बहुत कम इस्तेमाल किया जाता है ।
प्रत्यक्ष विधि के सिद्धांत आज भी भाषा शिक्षण में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन आजकल छात्र केंद्रित शिक्षा पर और अधिक ज़ोर दिया जाता है। अभी भी भाषा के सही रूप का अभ्यास ड्रिलिंग के माध्यम से किया जाता है, लेकिन इससे अधिक महत्वपूर्ण है कि शिक्षण के द्वारा छात्रों की संचार करने की क्षमता विकसित की जाए ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद आज भाषा शिक्षण वैज्ञानिक रूप में स्थापित हो गया है और उसका महत्व बढ़ गया है । चार्ल्स फ़ाईस (Charles Fries) और रॉबर्ट लेडो (Robert Lado) द्वारा बनाया गया अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान (applied linguistics) भाषा शिक्षण में शामिल हो गया है। वह भाषा विज्ञान की सैद्धांतिक उपलब्धियों और कक्षा में इस्तेमाल की जानेवाली शैक्षणिक पद्धतियों की वास्तविकता के बीच की खाई को पाटने की कोशिश करता है ।

**संरचनावाद**

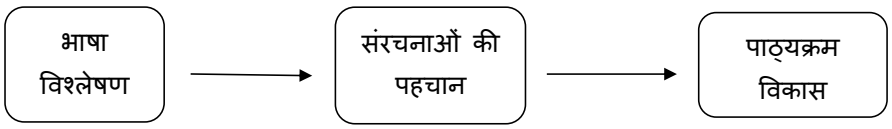


**व्यवहारवाद**

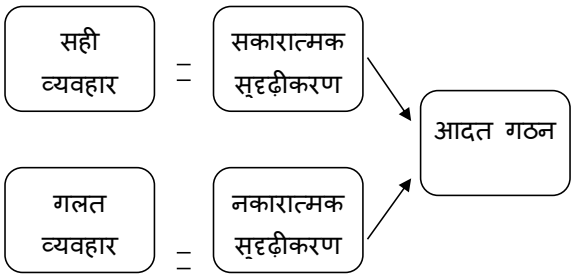


### 3. संरचनावादी पद्धति

यह १९५० के दशक में प्रचलित हुई। यह भाषा-शिक्षण पद्धति स्किनर (Skinner) के नव-व्यवहारवादी सिद्धांत पर आधारित है, जिसके अनुसार जन्म के समय व्यक्ति एक खाली स्लेट की तरह होता है।
उत्प्रेरक-प्रतिक्रिया- (सकारात्मक या नकारात्मक) सुदृढ़ीकरण के क्रमों की एक निर्बाध श्रृंखला, उस ख़ाली स्लेट पर मानसिक प्रवृत्ति, यानी प्रेरक के प्रति प्रतिक्रिया करने का एक अवचेतन तंत्र बनाती है। इसका मतलब यह है कि भाषा-शिक्षण में अवचेतन के स्तर पर छात्र भाषा के नियम सीखते हैं।

यह ध्यान रखें कि ऐसा पहली बार हुआ कि सीखने का एक सामान्य सिद्धांत किसी भाषा शिक्षण की पद्धति का मूल बना : glottodidactics, जो पहले भाषा सीखने और सिखाने के लिए विधियों का एक सेट था, वह अब वैज्ञानिक विषय के रूप में समझाया जाने लगा।

### 3.1. संरचनावादी आव्यूह विधियाँ

श्रव्यभाषी (audiolingual) पद्धति है, जो 1940 से 1960 के दशक तक बहुत लोकप्रिय था, संरचनात्मक भाषाविज्ञान (संरचनावाद) और व्यवहारवादी (behavioristic) मनोविज्ञान (Skinner- स्किनर की व्यवहारवादी) पर आधारित है। यह लिखित भाषा पर नहीं बल्कि बोली जाने वाली भाषा पर जोर देता है, और विशेष रूप से

भाषाओं के व्याकरण पर । वह सीखने की एक विधा के रूप में आदत के गठन पर ज़ोर देता है । याद करना, रटना, दोहराना, रोल प्ले और संरचना ड्रिलिंग प्रमुख गतिविधियाँ होती हैं। श्रव्यभाषी पद्धति शिक्षक की रचनात्मक क्षमता पर कम निर्भर होती है और इसका इस्तेमाल करने के लिए भाषा में उत्कृष्ट प्रवीणता की आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि पाठ्यपुस्तकें और सबकों के सेट पहले से बने होते हैं और वे बदलते नहीं हैं। इस तरह का कोर्स आयोजित करना आसान है और सस्ता भी । इसलिए आजकल भी packaged language courses में इसका प्रयोग बहुत होता है ।

लेकिन यह पद्धति शिक्षार्थियों पर केन्द्रित नहीं है, जबकि आजकल भाषा सिखाने में शिक्षार्थियों की भूमिका पर अधिक ध्यान दिया जाता है और असली संचार भाषा सीखने में इसे एक महत्वपूर्ण पहलू समझा जाता है ।

**4. मानववादी भावनात्मक पद्धति**

मानववादी भावनात्मक पद्धति की एक प्रारंभिक अभिव्यक्ति रुडोल्फ सताईनर के (Rudolf Steiner) शिक्षा शास्त्र में बीसवीं सदी की शुरुआत में मिलती है । 1970 के दशक में मानवीय मूल्यों पर जोर दिया गया । इसीलिए शिक्षार्थियों की जरूरतों और क्षमताओं पर केन्द्रित विधियाँ उठीं । मानवीय-भावनात्मक पद्धतियाँ अधिक यन्त्रवादी संरचनात्मक विधियों और ज़्यादा अव्यक्तिगत भाषा प्रयोगशालाओं के ख़िलाफ़ एक प्रतिक्रिया की रूप में विकसित हुईं । बाद में वे चोमस्की के इनेटिस्म (innatism) और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (cognitivism) के सिद्धांतों के ख़िलाफ़ विकसित होती रहीं ।

मानववादी भावनात्मक पद्धति में कई विधियाँ शामिल है :

The Silent Way (Caleb Gattegno द्वारा विकसित )
Community Language Learning ( Charles Curran द्वारा विकसित)
Suggestopedia (Georgi Lozanov द्वारा विकसित)
Total Physical Response (James Asher द्वारा विकसित)
Natural Approach (Stephen Krashen और Tracy Terrell द्वारा विकसित)

ये सभी विधियाँ अलग-अलग हैं, लेकिन इन सभी में निम्नलिखित अभिलक्षण हैं:

1. मानव व्यक्तित्व की सभी पहलुओं में रुचि, संज्ञानात्मक ही नहीं, बल्कि भावनात्मक और शारीरिक भी होती है। इसी से सम्बंधित एच गार्डनर (H. Gardner) का बहु-बुद्धि (multiple intelligences) सिद्धांत, संज्ञानात्मक शैलियों पर शोध, और एनएलपी (न्यूरो भाषाई प्रोग्रामिंग Neuro-Linguistic Programming) और multisensoriality की अवधारणा है, जो केवल भाषा शिक्षण तक ही सीमित नहीं है । हर किसी व्यक्ति की, दुनिया का सामना करने के लिए और उसको जानने के लिए एक पसंदीदा प्रणाली होती है । भाषा शिक्षण के लिए भी उसी चैनल का प्रयोग करना चाहिए । सीखने की प्रक्रिया में उस व्यक्ति की सब इन्द्रियों का उपयोग होना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक मस्तिष्क-क्षेत्र भाषा सीखने के लिए सक्रिय किये जा सकें ।

2. एक सुकूनभरा और उत्तेजक सीखने के माहौल बनाना । वास्तव में चिंता और डर सीखने के किसी भी पहलू को ब्लॉक करने में सक्षम होता है।
3. छात्र केंद्रित शिक्षण

**5. संचारात्मक पद्धति**
इसके बारे में मैं बाद में बतानेवाली हूँ

आज सबसे ज़्यादा उपयोग किए जानेवाले सिद्धांत "एकीकृत" (integrated) कहे जाते हैं, क्योंकि वे हालांकि संचारात्मक अध्यापन पर आधारित निर्देशांकों के भीतर होते हैं, लेकिन वे glottodidactics भाषा शिक्षण के विभिन्न पक्षों से और शिक्षण के मनोविज्ञान से अलग-अलग विधियाँ और प्रेरक लेते हैं ।

“भाषाओं को पढ़ाने का मतलब यह नहीं है कि भाषा सिर्फ एक उपकरण है । उसे सीखने का एक उद्देश्य होना चाहिए । इसका मतलब सिर्फ तत्काल उद्देश्यों को पाना नहीं है, बल्कि हमें लक्ष्य की ओर देखना चाहिए ।
लक्ष्य दो तरह के हैं :

- शैक्षिक, जो सभी विषयों के लिए आम हैं
- भाषा शिक्षण से सम्बंधित

शैक्षिक लक्ष्यों के तीन उद्देश्य होते हैं :
क) संस्कृतिकरण
ख) समाजीकरण
ग) आत्म पदोन्नति

भाषा शिक्षण से सम्बंधित लक्ष्य, जो प्रत्येक भाषा के शिक्षण के लिए वैध हैं, दो खंडों में विभाजित हैं:
क) जिस भाषा का अधिग्रहण करना है, उस में संचार क्षमता का विकास;
ख) "स्वायत्त सीखने" की क्षमता का विकास यानी भाषा सीखने की क्षमता : यह क्षमता अन्य सभी भाषाओं के लिए उपयोगी होगी जो शिक्षार्थी सीख रहा है या भविष्य में सीखेगा ।

दूसरे शब्दों में, एक भाषा सिखाने का मतलब यह है : संचार क्षमता के चार घटकों को हासिल करने में छात्र की मदद करना (भाषा का उत्पादन करना, भाषा से कुछ करना यानी भाषा का इस्तेमाल करना ताकि वह काम आए, भाषा जानना, संचार के लिए उपलब्ध अन्य कोडों से भाषा को एकीकृत करना यानी जोड़ना), ताकि भाषा शिक्षण के तीनों लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।”

## *संदर्भग्रंथ सूची*


Connel, W. 1987. *History of Teaching methods*, in M. Dunkin (ed.), *International Encyclopedia of Teaching and Teacher Education,* Oxford, Pergamon.

Kelly, G. L. 1969. *Twenty-five centuries of language teaching. An inquiry into the science, art, and development of language teaching methodology 500 B.C*. Rowley, Mass. ; Newbury House Publ.

W. F. Mackey, 1965. Language teaching analysis, London.

Titone, R. 1968. *Teaching foreign languages: an historical sketch*, Washington.

Titone, R. 1974. *Introduzione alla metodologia della ricerca nell'insegnamento linguistico / Methodology of research in language teaching*, ediz. bilingue, Bergamo.

Balboni, Paolo Ernesto. 2007. *Tecniche didattiche per l'educazione linguistica - Italiano, lingue straniere, lingue classiche*. Torino: UTET-De Agostini.


Formatted: English (U.S.)

## पद्धतियों और विधियों की संक्षिप्त तालिका [2]

| | |
|---|---|
| **रूपवादी/ (फोर्मलिस्ट) पद्धति**<br><br>आम विशेषताएँ, संदर्भ विद्वान, ऐतिहासक और भौगोलिक संदर्भ | यह पद्धति अठारहवीं सदी की है और इसकी भाषा का लिखित रूप है जिसे सिखने के लिए नियम-व्याकरण जानना आवश्यक होगा। सिद्धांत सम्बन्धित सन्दर्भग्रन्थ -पारंपरिक वर्णनात्मक भाषा,पोर्टरॉयल व्याकरण (Claude Lancelot and Antoine Arnauld.1968. *A general and rational grammar*, 1753. Menston : Scolar press), Johann Heinrich Seidenstücker (1785–1817) और Karl Plötz (1819–81) के अनुवाद<br>पद्धति के विकास में योगदान देने वाले अन्य निम्नलिखित कारक :<br>• लैटिन भाषा की उसके जनसंपर्क भाषा से लुप्तप्राय श्रेणी में शामिल होने की यात्रा<br>• विश्लेषण का माडल जो प्राचीन भाषाओं पर आधारित थे पर जिनको आधुनिक भाषाओं पर लागू किया गया<br>• इंटरलीनियर अनुवाद की अवधारणा |
| सीखने का मॉडल | इसके अंतर्गत समानार्थक तरीका अपनाया जाता है । नियम प्रदान किये जाते है और प्रवित्ति के आधार पर भाषाई व्यहवार तय किये जाते है। भाषा सिखने के लिए प्राप्त जानकारी को और स्पष्ट करने फिर उसी भाषा में स्मरण करने की क्षमता को माध्यम बनाया जाता है । इस अभिव्यक्ति में किसी ठोस स्थिति का आभाव है। |
| भाषा की भूमिका | भाषा अपने लिखित रूप में महत्वपूर्ण है ।इसका न तो कोई इस्तेमाल होता है और न ही अभ्यास में लाया जाता है बल्कि यह विवरण और सम्बंधित नियमों को याद कर सिखा जाता है। यह स्मरण शक्ति मातृभाषा के उपयोग से किसी अन्य विदेशी भाषा में वाक्य बनाने में भी सहायक है। |
| शिक्षक की भूमिका | शिक्षक अनुसरण करने का मॉडल है और सूचनाओं का प्राथमिक स्रोत भी । वह मातृभाषा में नियमों और अपवादों को समझाता है और लिखित अभ्यासों के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया का सञ्चालन करता है । यह ज़रूरी नहीं है कि शिक्षक को सिखानेवाली भाषा का अच्छा ज्ञान हो । |
| शिक्षार्थी की भूमिका | नियमों का आंकलन करने के बाद लिखने में प्रयोग करता है। सिखाने वाली भाषा में लिखित ग्रंथों को समझने के लिए व्याकरण और शाब्दिक ज्ञान का उपयोग करता है । |
| भाषा शिक्षण का व्यापक उद्देश्य | व्याकरण, अनुवाद और क्लासिक्स अध्ययन की सहायता से समझ, लेखन और तर्क क्षमता विकिसित करना । |
| मूल प्रणाली संबंधी पहलू : विधि, तकनीक, सामग्री और अवलंब | अनुवाद की व्याकरण विधि और पढने का तरीका । पाठ्यक्रमों का संयोजन व्याकरण अथवा भाषा के वाक्य-विन्यास पहलुओं पर विशेष ध्यान देते हुए अध्यायों पर आधारित होता है। इसके लिए मुख्य रूप से अनुवाद व्याकरण विधि का प्रयोग किया जाता है । तकनिकी विविधता सिमित होती है । अनुवाद, श्रुतलेख, पाठ फेर-बदल अभ्यासों को इस्तेमाल में लाया जाता है । तकनिकी उपकरणों का उपयोग नहीं होता है । |

[2] बलबोनी पर आधारित: Balboni, Paolo E. 2002. *Le sfide di Babele: insegnare le lingue nelle società complesse*. Torino : UTET libreria.

Formatted: English (U.S.)

| | |
|---|---|
| **प्रत्यक्ष विधियाँ**<br><br>आम विशेषताएँ, संदर्भ विद्वान, ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भ | इस विधि का विकास उन्नीसवीं सदी के अंत में ब्रिटेन , सयुक्त राज्य अमेरिका और स्विट्जरलैंड में रूपवादी पद्धति के प्रतिवाद में हुआ और बीसवीं शताब्दी के पांचवे दशक तक इसका प्रचलन जारी रहा। इसके अंतर्गत भाषा को पूर्ण रूप से बगैर किसी मध्यस्थता के विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है । जबकि नियमों और विश्लेषणों को बाद में शामिल किया जाता है । प्रत्यक्ष विधि के लिए Viëtor, Passy, Sweet और Jones, Jaspersen जैसे भाषाविदों द्वारा किये गए कार्यों को एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ माना गया है । |
| सीखने का मॉडल | अत्यधिक प्रेरक, विदेशी भाषा बिलकुल मातृभाषा सिखने की तरह सिखा जाना चाहिए । व्याकरण से जुड़े पहलुओं के लिए भी कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं । |
| भाषा की भूमिका | संचार की दृष्टि से भाषा बोलना या उसका मौखिक पहलू बहुत महत्वपूर्ण है । यह शिक्षक द्वारा प्रस्तुत मॉडल के अनुसरण से सिखा जाता है । |
| शिक्षक की भूमिका | यह आवश्यक है कि शिक्षक मातृभाषिक हो । उसे केवल सिखाये जानेवाली भाषा का उपयोग करना चाहिए । प्रामाणिक भाषा का उपयोग कर विद्यार्थियों को पढ़ाई में ज्यादा से ज्यादा सम्मिलित करना चाहिए । भाषा को प्रमाणिकता के साथ सहज भाव से संवाद और कहानियों का प्रयोग करते हुए किया जाना चाहिए । छात्रों से फीडबैक लेना भी शिक्षक का एक महत्वपूर्ण काम है । |
| शिक्षार्थी की भूमिका | स्वत: सीखने की प्रविति्त । उसे अपने से नियमों का अनुमान करते हुए उचित प्रयास करने चाहिए । वह शैक्षणिक क्रियाकलापों के केन्द्र में रहते हुए शब्दावली और संरचनाओं का अनुकरण करने का प्रयास करता है । |
| भाषा शिक्षण का व्यापक उद्देश्य | विदेशी भाषा में बोलचाल और संवाद कायम करने की क्षमता होनी चाहिए । यह भाषा मातृभाषा सिखने के माडल पर ग्रहण की गई हो । |
| मुख्य प्रणाली संबंधी पहलू : विधि, तकनीक, सामग्री और अवलंब | प्राकृतिक विधि, मौखिक विधि, बेर्लिज़(Berliz) विधि।<br>बोलचाल की भाषा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अध्यायों का कोई निश्चित स्वरुप नहीं होता । इसका अभ्यास मातृभाषा बोलने वाले अध्यापक के साथ बातचीत , नाटक , छवि और इशारों के प्रयोग द्वारा किया जाता है। भाषा सम्बन्धी अमूमन अव्यवस्थित हैं और नियमों में क्रम का आभाव है । |

| | |
|---|---|
| **संरचनावादी पद्धति**<br><br>आम विशेषताएँ, संदर्भ विद्वान, ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भ | उन्नीसवीं सदी के चौथे दशक में शुरू हुई इस पद्धति का प्रचलन बाद में छठें दशक तक कायम रहा। इसका उदय विशेषतौर पर संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ। ब्लूमफील्ड के भाषाविज्ञान वर्गीकरण सहित बाओस के मानवविज्ञान शोधकार्य और स्किनर के नवव्यहवारवादी मनोविज्ञान के अलावा लादो के व्यतिरेकी भाषाविज्ञान से प्रभावित इस प्रक्रिया में हाल के वर्षों तक प्रगति दर्ज की गई । साथ ही तकनिकी भाषा शिक्षण को मान्यता भी मिली । |
| सीखने का मॉडल | भाषा शिक्षण उत्प्रेरक क्रियाओं के अनवरत क्रम को उजागर करते रहने से होता है । इस प्रक्रिया की पुनरावृत्तियांत्रिकी स्वचालन की ग्राह्यता भी निर्धारित करती है । |
| भाषा की भूमिका | भाषा अपने न्यूनतम संरचनाओं के लिए जानी जाती है । इसे अपने नियमों के उन सेटों के तौर पर भी देखा जाता है जिसे किसी भाषा प्रयोगशाला के बाहर निकलने के साथ ही एक स्थापित संचार के रूप में परिवर्तित हो जाना चाहिए । |
| शिक्षक की भूमिका | यह भाषा के माडल का अनुसरण करता है । प्रेरणा और जोश प्रदान करने के साथ साथ भाषा प्रयोगशालाएं और सम्बंधित शिक्षण तकनिकी प्रबंधन भी करता है । इसके आलावा उत्तरों की जांच , पाठ्यक्रमों की व्यवस्था और भाषा पढ़े जाने वाले देश की संस्कृति से छात्रों को अवगत कररने की की जिम्मेवारी भी संभालता है । |
| शिक्षार्थी की भूमिका | इनकी भूमिका शिक्षक और मशीनों पर निर्भर है । यह निष्क्रिय और केवल किसी खास प्रोत्साहन पर सही उत्तरों को तैयार करने तक सिमित है । इसे गैर रचनात्मक भी बताया गया है । |
| भाषा शिक्षण का व्यापक उद्देश्य | भाषा संचार प्रमुख रूप से मौखिक स्वरुप विकसित करना । निर्धारित माडल के आधार पर भाषा सम्बन्धी स्वतः उपजे प्रतिउत्तर के लिए प्रोत्साहन देना । |
| मुख्य प्रणाली संबंधी पहलू : विधि, तकनीक, सामग्री और अवलंब | Army Specialized Trainig Programm (ASTP: सेना विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम)<br>विधि और ऑडियो-मौखिक विधि।<br>समझने की क्षमता और मौखिक प्रस्तुति का महत्व ।<br>min-mem approach (अनुकरण करना)<br>एरिया स्टडीज<br>अभ्यास के प्रकार : संरचनात्मक या पैटर्नड्रिल अभ्यास ।<br>प्रयुक्त उपकरण : रिकॉर्डर और भाषा प्रयोगशाला |

| | |
|---|---|
| **संरचनात्मक पद्धति**<br><br>आम विशेषताएँ, संदर्भ विद्वान, ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भ | पांचवें दशक के उतरार्ध में आरम्भ हुई इस पद्धति का आठवें दशक तक भाषा शिक्षण में एकाधिपत्य रहा है । इस दौर में इसका प्रवेश संरचनावाद के प्रतिवाद में हुआ । संचार क्षमता की अवधारणा को प्रस्तुत करने का श्रेय भी इसी पद्धति को दिया गया है ।<br><br>संदर्भ सिद्धांत :<br>मालिनोस्की और फर्थ के मनाशास्त्रीय भाषाविज्ञान<br>फिशमैंन और हिम्स से जुड़ा समाज-भाषाविज्ञान<br>चोम्सी का मंसिकवाद सिद्धांत<br>कार्डर और सेलिंकर सम्बन्धी अंतरभाषा सिद्धांत<br>सिरले एवं विटजेंस्टीन के व्यहवारमूलक भाषा विज्ञान<br>Malinowski और Firth पर आधारित मानवशास्त्रीय भाषाविज्ञान<br>Fishman और Hymes द्वारा समाज-भाषाविज्ञान<br>Chomsky का मानसिकवादी सिद्धांत<br>Corder और Selinker अन्तरभाषा का सिद्धांत<br>Searle और Wittgenstein का व्यवहारमूलक भाषाविज्ञान (pragmalinguistics) |
| सीखने का मॉडल | ज्यादा से ज्यादा प्रेरणादायक हो । पाठ्यक्रमों की शुरुआत विद्यार्थियों के संचार सम्बन्धी आवश्यकताओं के विश्लेषण से होनी चाहिए ।<br>अधिक से अधिक प्रेरक। पाठ्यक्रम छात्र के संचार जरूरतों के विश्लेषण से शुरू होना चाहिए। |
| भाषा की भूमिका | भाषा को संचार का एक महत्वपूर्ण साधन माना गया है । इसके दायरे में सामाजिक कामों को भी शामिल किया गया है और औपचारिक सटीकता की तुलना में व्यहवारिक मूल्यों को ज्यादा महत्व प्रदान किया गया है। इसमें केवल भाषाविज्ञान को वरीयता न देकर संचार की क्षमता विकास पर ध्यान दिया गया है । ये सामाजिक-व्यवहारमूलक, पैराभाषाविज्ञान तथा गैरभाषावैज्ञानिक तत्वों के महत्वपूर्ण शुरूआती पक्ष हैं। |
| शिक्षक की भूमिका | शिक्षक की भूमिका गाइड और प्रशिक्षक की है । वह न केवल भाषा बल्कि पढ़े जाने वाली भाषा के देश की संस्कृति , सभ्यता और सामाजिक नियम भी प्रस्तुत करता है । वह विदेशी भाषा शिक्षण तकनीक को भलीभांति जानता है । |
| शिक्षार्थी की भूमिका | शिक्षार्थी एक सक्रिय भूमिका का निर्वाह करता है और ध्यान भी आकृष्ट करता है पाठ्यक्रम का निर्धारण शिक्षर्तियों की आवश्यकता अनुकूल तैयार किया जाता है। |
| भाषा शिक्षण का व्यापक उद्देश्य | संचार क्षमता में वृद्धि करना |
| मुख्य प्रणाली संबंधी पहलू : विधि, तकनीक, सामग्री और अवलंब | स्थितिजन्य और अनुमानित-कार्यात्मक विधि ।<br>भाषा कौशल का विकास । शिक्षण इकाइयों में नाटकों और संचार के असरकारी गतिविधियों का प्रयोग कर भाषा के मूल संरचना पर ध्यानदिया जाता है ।<br>ऑडियो कैसेट के साथ किताबें वितरण के अलावा विशेष विडिओ में विदेशी भाषा प्रशिक्षण तकनीक का इस्तेमाल । |

| | |
|---|---|
| **मानववादी-भावनात्मक पद्धति**<br><br>आम विशेषताएँ, संदर्भ विद्वान, ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भ | 1970 के दशक में यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में विकसित ।<br>संदर्भ सिद्धांत:<br>• मानवीय मनोविज्ञान<br>• Maslow और Rogers के अनुसन्धान<br>• मानवशिक्षण (psychodidactic) सिद्धांत<br>• भावात्मक बुद्धि पर अनुसंधान<br>• कमउम्र में भाषा का अधिग्रहण पर अनुसंधान<br>• भावात्मक फिल्टर की भूमिका पर अनुसंधान<br>• अंतरभाषा पर अनुसंधान<br>इसके अलावा निम्नलिखित विद्वानों द्वारा प्रस्तावित विधियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है:<br>• The Silent Way (Caleb Gattegno द्वारा विकसित)<br>• Community Language Learning (Charles Curran द्वाराविकसित)<br>• Suggestopedia (Georgi Lozanov द्वारा विकसित)<br>• Total Physical Response TPS (James Asher द्वारा विकसित)<br>• Natural Approach (Stephen Krashen और Tracy Terrell द्वारा विकसित) |
| सीखने का मॉडल<br>Modello di apprendimento | सीखने के प्रेरणादायी कारक :<br>• भावुकता<br>• सम्बद्धता<br>• व्यक्ति के वैयक्तिक विशेषताएँ<br>• चिंता और प्रतिस्पर्धा को हटाना<br>• व्यक्तिगत मार्ग<br>• संचार की जरूरत का विश्लेषण<br>• मजबूत प्रेरणा |
| भाषा की भूमिका | संचार के उस व्यहवारिक साधन के रूप में जिसमे औपचारिक शुद्धता का कम महत्व है । भाषा के अलावा संस्कृति पर भी ध्यान देना आवश्यक है क्योंकि ये संचार सम्बन्धी बाधा उत्पन्न कर सकते है । |
| शिक्षक की भूमिका | शिक्षक की भूमिका गाइड की है । वह कक्षा की गतिविधियों का निर्देशक और मनोवैज्ञानिक सहारा देने को तत्पर एक सलाहकार है ।<br>वह प्रेरणा के माध्यम से सीखने को बढ़ावा देता है और आराम के साथ सिखने लायक शांत वातावरण तैयार करने की कोशिश में जुटा होता है । |
| शिक्षार्थी की भूमिका | छात्र सिखने की अपनी जोशपूर्ण और प्रेरणादाई प्रक्रिया का नायक बन जाता है। उसे विकल्पों को स्वयं से अपनाए जाने के बारे में पता होता है । विचार-विमर्श की क्षमता के अलावा उसे सहायता कैसे मांगी जाय इसकी जानकारी भी रखता है । |
| भाषा शिक्षण का व्यापक उद्देश्य | भाषा की औपचारिक शुद्धता को प्राथमिकता दिए बिना मौखिक और गैर-मौखिक संचार विकसित करना । भाषा सिखने को लेकर विद्यार्थी का आत्मविश्वास विकसित करना । |

| | |
|---|---|
| मुख्य प्रणाली संबंधी पहलू : विधि, तकनीक, सामग्री और अवलंब | स्वाभाविक पद्धति का प्रभाव और सुझाये गए कुछ निर्धारित तरीके :<br>• भाषा ग्रहण करने सही क्रम को आधार मानकर पाठ्यक्रम संरचना तैयार किया जाता है ।<br>• पठन -पाठन के लिए कक्षाएं शिक्षण इकाइयों में आयोजित की जाती हैं ।<br>• अनेक तरह की संभवतः प्रमाणित सामग्री का प्रयोग, सही क्रम और सटीक वर्गीकरण के साथ ।<br>• नाटकीय गतिविधियाँ , बातचीत, भाषा कौशल को बढ़ावा देने सम्बंधित अभ्यास सम्मिलित किये जाते है ।<br>• संगीत थेरेपी का प्रयोग ।<br>• नयी प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल । |

## 3. हिंदी कक्षा में संचारात्मक अध्यापन । उदाहारण तथा सिद्धांत

संचारात्मक अध्ययन इस विचार पर आधारित है कि जो कार्य और गतिविधियाँ हम कक्षा में छात्रों के साथ करते हैं उनका प्रयोग वे असली संचारात्मक स्थितियों में कर सकें ।

जब शिक्षार्थी असली संवाद में भाग लेंगे तो वे भाषा सीखने के स्वाभाविक तरीकों का इस्तेमाल करेंगे, इस प्रकिया से वे भाषा का प्रयोग करना सीख सकेंगे ।

उदाहरण के लिए, यदि हम शिक्षार्थियों से उनकी निजी ज़िन्दगी के बारे में या उनके दोस्तों के बारे में पूछेंगे, तो संवाद में भाग लेने के लिए ज़्यादा उत्सुक होंगे ।

इसका परिणाम यह होता है कि:

1. क्षमताओं पर ज्यादा ज़ोर जाता है और भाषा की संरचना और नियमों पर कम ।
2. अध्यापन शिक्षार्थियों पर केंद्रित होता है ।
3. वास्तविक सामग्रियों का इस्तेमाल होता है ।

आजकल अधिकांश शिक्षक कक्षा में अपनी-अपनी तरह से यह तरीक़ा इस्तेमाल करते हैं, लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता था !
**संचारात्मक पद्धति** 1970 के दशक में सामाजिक भाषाविज्ञान से पैदा हुई । इसके अनुसार शिक्षण में संवाद, व्याकरण और शब्दावली से बहुत ज़्यादा महत्त्वपूर्ण होता है । संचार में 'संचार क्षमता' शामिल है यानि अपनी बात इस तरह से अभिव्यकत करना जिससे वह दूसरों को समझ आए और वह समाज की दृष्टि में भी उचित हो ।

संचारात्मक पद्धति के अनुसार दूसरी भाषा सबसे अच्छी तरह तब समझी जाती है जब छात्र संवाद करने की कोशिश  करते हैं यानी ऐसा कुछ है जो वे वास्तव में कहना चाहते हैं या उनको वह बात कहनी है।

अभी भी कम्यूनिकेटिव पद्धति के क्षेत्र में संचार की सटीक भूमिका पर चर्चा चल रही है।

इस पद्धति के तथाकथित दुर्बल फार्म में संचार की गतिविधियाँ नई भाषा का अभ्यास करने और उसमें प्रवाह को विकसित करने के अवसर के रूप में देखी जाती हैं । इसके अनुसार परंपरागत व्याकरण आधारित पाठ्यक्रम में सिर्फ बातचीत करने के कुछ अवसरों को जोड़ना ही काफ़ी है ।
दूसरी तरफ 'प्रबल' संचारात्मक पद्धति में कहा गया है कि नई भाषा का अधिग्रहण संचार के माध्यम से ही होता है।

सवाल यह नहीं है कि पहले से सिखाया निष्क्रिय भाषा ज्ञान सक्रिय करने के लिए संचारात्मक गतिविधियों का उपयोग किया जाए। विश्वास है कि संचार आत्मविश्वास तभी विकसित होता है जब छात्रों से वास्तविक जीवन में ऐसे कार्य करवाएँ जिनमें संचार की ज़रूरत हो।

संचारात्मक गतिविधि छात्रों के लिए सिर्फ़ यह दिखाने का मौक़ा नहीं है कि उन्होंने क्या-क्या सीखा है और उनको क्या-क्या आता है। जो कुछ भी छात्रों को सीखना है वह संचारात्मक कार्यों और गतिविधियों के माध्यम से ही सीखा जाता है।

दुर्बल कम्यूनिकेटिव पद्धति का विदेशी भाषा शिक्षण की दुनिया पर सबसे दूरगामी प्रभाव पड़ा है, शायद इसलिए क्योंकि इसको अपनाने का मतलब है कि मौजूदा सामग्रियों और कार्यप्रणालियों को खारिज करने के बजाय उन्हें इस पद्धति के अनुकूल बनाना। प्रबल कम्यूनिकेटिव पद्धति Task Based Learning के विकास में बहुत प्रभावशाली रहा है।

निम्नलिखित गतिविधियाँ २०१२ में महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में, विदेशी विद्यार्थियों के लिए आयोजित दो सप्ताह के हिंदी पाठ्यक्रम कार्यशाला में बनाई गईं, जिसमें Eva deClercq, Justyna Kurowska, Alesia Makovskaya, Maria Negyesi, Miki Nishioka, Tatiana Oranskaia, Nicola Pozza, Elmar Renner, Herman VanOlphen, Saartje Verbeke और मैंने भाग लिया।

**गतिविधि १**

**यात्रा**

1. अध्यापक इस अभ्यास के लिये सब से पहले नीचे दिये गये 24 कार्डों के सेट बनाएगा
2. अध्यापक छात्रों को तीन-चार के समूहों में बांटेगा। जितने समूह होंगे अध्यापक के पास उतने ही कार्डों के सेट्स होंगे।
3. अध्यापक हर समूह को कार्ड नंबर 1 देगा जिस पर एक परिस्थीति और कई संभावनाओं का वर्णन होगा।
3. छात्र अपने-अपने समूहों में चर्चा करके एक संभावना चुन लेंगे और अध्यापक से उससे संबंधित कार्ड माँग लेंगे।
4. छात्र ऐसा तब तक करते रहेंगे जब तक कि उनको एक ऐसा कार्ड न मिल जाए जिस पर 'अंत' लिखा हो. तभी उनकी यात्रा ख़त्म होगी।
5. हर छात्र कार्डों पर आधारित अपनी यात्रा का मौखिक या लिखित विवरण तैयार करेंगे और दूसरे समूहों के छात्रों को सुनाएँगे या पढ़ने को देंगे।

**टिप्पणी**

**क)** आवश्यक्ता के अनुसार अध्यापक अभ्यास के पहले छात्रों को उचित वाक्य सिखाएगा जैसे

- सुझाव देना /लेना
- सहमति

- असहमति
- राय
- माँगना

**ख)** छात्र जिस क्रम में कार्ड लेंगे उसी क्रम में उन्हें रखेंगे। कार्डों को इस प्रकार रखने से छात्रों के लिये यात्रा का क्रमिक वर्णन देना सरल हो जाएगा ।

BBCteachingenglish.com पर आधारित

| | |
|---|---|
| **1**<br>गर्मियों की छुट्टियाँ हैं। आप कई दोस्तों के साथ कहीं न कहीं जाना चाहते हैं। क्या आप:<br>→सिर्फ़ दो-चार लोगों के साथ जाना चाहते हैं) ? कार्ड (**2**<br>→बहुत सारे लोगों के साथ जाना चाहते हैं) ? कार्ड(**3** | **2**<br>आपका एक दोस्त अपनी बहन के साथ यात्रा करना चाहता है। क्या आप:<br>→इसे स्वीकार करते हैं) ? कार्ड(**4**<br>→अस्वीकार करते हैं क्योंकि आप कम लोगों के साथ यात्रा करना चाहते हैं) ? कार्ड(**5**<br>→और कुछ लोगों को लेकर एक बड़े समूह के साथ यात्रा करना चाहते हैं) ? कार्ड(**3** |
| **3**<br>अभी इतने सारे लोग हैं कि आपस में इस बात पर भी सहमति नहीं है कि आप लोग कहाँ जाएँ। क्या आप:<br>→अलग-अलग छोटे-से समूहों में भिन्न यात्राएँ करेंगे) ? कार्ड(**2**<br>→आगे विचार-विमर्श करके किसी उपाय की खोज करेंगे) ? कार्ड(**4**<br>→एक लंबी यात्रा करने का निर्णय करते हैं ताकि आप सब एक जगह जा पाएँ) कार्ड(**6** | **4**<br>अब सब लोग खुश हैं। क्या आप:<br>→इटली जाना चाहते हैं) ? कार्ड(**7**<br>→भारत जाना चाहते हैं) ? कार्ड(**8**<br>→ओस्ट्रेलिया जाना चाहते हैं) ? कार्ड(**9** |
| **5**<br>इस समय सब लोग खुश नहीं हैं। कोई बदलाव किए बिना यात्रा संभव नहीं होगी।<br><br>फिर कार्ड**2** | **6**<br>आप ऐसी किसी यात्रा की योजना बनाने की कोशिश करते हैं ,लेकिन आप के पास इतना पैसा नहीं है। क्या आप:<br>→कार्ड 3 पर आप फिर विचार-विमर्श करेंगे) ? कार्ड (**3**<br>→मतदान करके इसका निश्चय करेंगे कि आप कहाँ जाएँगे) ? कार्ड(**9**<br>→किसी समझदार आदमी की राय पूछेंगे) ? कार्ड(**7** |

| | |
|---|---|
| **7**<br>आप इटली जाना चाहते हैं। क्या आप:<br>→समुद्रतट पर एक अच्छे से होटल में पैकेज हॉलिडे बुक करते हैं) ? कार्ड (**10**<br>→रोम जाना चाहते हैं ? वहाँ पहुँचकर कोई छोटा-सा होटल ढूँढ़ना चाहते हैं) ? कार्ड(**11**<br>→रोम जाना चाहते हैं ? वहाँ पहुँचकर रेलगाड़ी से देश में घूमना चाहते हैं) ? कार्ड(**12** | **8**<br>आप भारत जाना चाहते हैं। क्या आप:<br>→समुद्रतट पर एक अच्छे से होटल में पैकेज हॉलिडे बुक करते हैं) ? कार्ड (**10**<br>" →श्रेष्ठ छुट्टियाँ "नामक एक ऐजेंसी द्वारा आयोजित पैकेज में ,आगरा से शुरू करके पूरे भारत की यात्रा करना चाहते हैं) ? कार्ड (**13**<br>→दिल्ली जाना चाहते हैं ? वहाँ से ,रेलगाड़ी से देश में घूमना चाहते हैं ,जो सस्ता भी होगा) ? कार्ड(**12** |
| **9**<br>आप ओस्ट्रैलिया जाना चाहते हैं। क्या आप:<br>→समुद्रतट पर एक अच्छे से होटल में पैकेज हॉलिडे बुक करते हैं ? यहाँ क्रिकेट खेलने का मौक़ा भी मिलेगा ।) कार्ड(**10**<br>→सिडनी जाना चाहते हैं ?वहाँ पहुँचकर कोई छोटा-सा होटल ढूँढ़ना चाहते हैं) ? कार्ड(**14**<br>" →श्रेष्ठ छुट्टियाँ "नामक एक ऐजेंसी द्वारा आयोजित एक यात्रा करना चाहते हैं) ? कार्ड(**13** | **10**<br>आपका एक दोस्त कहता है कि मुझे समुद्र से डर लगता है। इन परिस्थीतियों में आप समुद्रतट नहीं जा सकते। अपना पिछला कार्ड लेकर दुबारा विचार-विमर्श करना पड़ेगा। |
| **11**<br>आप रोम पहुंच जाते हैं ,लेकिन किसी त्यौहार के कारण आपको किसी भी अच्छे होटल में एक कमरा भी नहीं मिलता। क्या आप:<br>→इस उम्मीद से रेलगाड़ी से वेनीस जाते हैं ,कि शायद वहाँ होटल मिलेगा) ? कार्ड(**15**<br>→पूरी इटली रेलगाड़ी से घूमकर देखना चाहते हैं ? )कार्ड(**12**<br>→अपनी सारी योजनाओं को छोड़कर ,किसी सस्ते टिकट से ओस्ट्रेलिया जाते हैं) ? कार्ड(**14** | **12**<br>आप आधी रात को स्टेशन पहुंचते हैं। आप सब लोग बहुत थके हैं ,लेकिन सुबह 6 बजे तक कोई रेलगाड़ी नहीं है। क्या आप:<br>→कहीं प्लेटफ़ॉर्म पर बैठकर सो जाएंगे) ? कार्ड(**16**<br>→किसी होटल या होस्टल की खोज में घूमेंगे चाहे वह बुरा हो या अच्छा ,सस्ता हो या महँगा) ? कार्ड(**17** |

| | |
|---|---|
| **13**<br>आप ऐजेंसी जाकर अपनी बढ़िया यात्रा के लिए पैसे देते हैं। ऐजेंसी में काम करनेवाला कर्मचारी आप से कहता है कि कल आप टिकट लेने आइये। दूसरे दिन आप वहाँ जाते हैं ,लेकिन वह ऐजेंसी ग़ायब हो गई है । ऐसा लगता है कि आप को धोका दिया गया है । अभी आपके पास सिर्फ़ रोम के सस्ते-से टिकटों के लिये पैसा है । वहाँ से आप लोग रेलगाड़ी से घूम सकते हैं । कार्ड **12** पर फिर विचार-विमर्श करना पड़ेगा । | **14**<br>आप सिडनी जाते हैं। वहाँ पहुंचकर ,हवाई अड्डे पर एक ऐजेंसी की मदद से आपको एक छोटे-से होटल में कमरे मिलते हैं । लेकिन ऐसा लगता है कि यह होटल एक ख़तरनाक इलाके में है । क्या आप:<br>→फिर भी चेक-इन करते हैं) ? कार्ड(**18**<br>→किसी दूसरे होटल की खोज में घूमते रहते हैं ?<br>)कार्ड(**17** |
| **15**<br>आप स्टेशन पहुंचते हैं । अभी काफ़ी देर हो गई है , आप लोग थके भी हैं। एक आदमी आप से कहता है कि मुझे एक बहुत अच्छा होटल मालूम है । उसका नाम" महल "है। मेरे साथ आइए ,मैं आप को रास्ता दिखा दूँगा । क्या आप:<br>→उस आदमी के साथ जाते हैं) ? कार्ड(**19**<br>→किसी ऐजेंसी की सहायता से होटलों में कमरे ढूंढ़ते हैं) ? कार्ड(**20**<br>→किसी और होटल की खोज में घूमते रहते हैं ?<br>)कार्ड(**17** | **16**<br>आप जैसे तैसे बैठकर थोड़ा-सा आराम करने की कोशिश करते हैं । एक छोटे कद का दुबला-पतला आदमी आप से कहता है कि आप लोग मेरे साथ आइए ,मैं आप को कुछ दिखाना चाहता हूँ । क्या आप:<br>→उस आदमी के साथ जाते हैं) ? कार्ड(**22**<br>→सुबह तक स्टेशन पर रहने का फ़ैसला करते हैं ?<br>)कार्ड(**23** |
| **17**<br>आप देर तक घूमते रहते हैं लेकिन कुछ नहीं मिलता । क्या आप:<br>→स्टेशन वापस जाकर ,वहाँ सुबह तक रहने का फ़ैसला करते हैं) ? कार्ड(**16**<br>→हवाई अड्डे जाकर घर वापस जाने का फ़ैसला करते हैं) ? कार्ड(**21** | **18**<br>आप चेक-इन करते हैं । होटल बढ़िया है । कमरे बहुत अच्छे हैं ,खिड़कियाँ समुद्र की ओर खुलती हैं ,खाना भी बढ़िया है । आपके सारे जीवन में ये अभी तक आपकी सब से अच्छी छुट्टियाँ हैं ।<br>***अंत*** |

| | |
|---|---|
| **19**<br>उस आदमी के साथ आप जिस होटल पहुंचते हैं वह सचमुच पहले एक महल था । होटल बढ़िया है । कमरे बहुत अच्छे हैं ,खिड़कियाँ एक सुंदर तालाब की ओर खुलती हैं ,खाना भी बढ़िया है । आपके सारे जीवन में ये अभी तक की आपकी सब से अच्छी छुट्टियाँ हैं ।<br>**अंत** | **20**<br>आप एक ऐजेंसी पहुंचते हैं लेकिन वह बंद है । खिड़की पर एक नोट लगा हुआ है जिस पर किसी ने एक होटल का नाम और पता लिखा है । क्या आप:<br>→निराश होकर घर वापस जाने का फ़ैसला करते हैं ? )कार्ड(**21**<br>→जिस होटल का नाम उस नोट पर लिखा है ,वहाँ चेक-इन करते हैं) ? कार्ड(**18** |
| **21**<br>आप हवाई अड्डे जाते हैं । आपको वहाँ तीन दिन तक रहना पड़ता है क्योंकि कोई भी टिकट नहीं मिलता । जो टिकट्स आपको आखिर में मिलते हैं ,वे महँगे भी हैं । रास्ते में आपका सामान ग़ायब हो जाता है । अगले साल आपको कोई दूसरा इंतज़ाम करना पड़ेगा ।<br>**अंत** | **22**<br>आपकी यात्रा एक डरावना सपना बनती है । जब आप उस आदमी के साथ जा रहे होते हैं ,आपके पास अचानक पाँच और आदमी आते हैं जो आपका पैसा , गहने ,सब कुछ छीन लेते हैं । पुलिस के पास जाने के बाद आपको अपनी दूतावास जाना पड़ता है । एंबसी के लोग आपको घर वापस जाने के लिए पैसे देते हैं इस शर्त पर कि अपने देश पहुंचने पर ही आपको सारे पैसे वापस देने होंगे ।<br>**अंत** |
| **23**<br>रात जैसे-तैसे गुज़रती है । सुबह आप लोग एक और बार विचार-विमर्श करना चाहते हैं । क्या आप:<br>→निराश होकर घर वापस जाने का फ़ैसला करते हैं ) ?कार्ड(**21**<br>→स्टेशन के सामने खालीवाली बस में चढ़कर यह देखना चाहते हैं कि वह बस आपको कहाँ ले जाएगी ? )कार्ड(**24** | **24**<br>बस आपको बस आपको एक छोटे शहर में पहुंचाती है जहाँ ठीक उसी दिन एक बड़ा त्यौहार मनाया जाता है । सब लोग सड़कों पर हैं । वे आपका अच्छे से स्वागत करते हैं । आप वहाँ रहने का निर्णय करते हैं । आपके सारे जीवन में ये अब तक की सबसे अच्छी छुट्टी बन जाती है ।<br>**अंत** |

**... कहाँ है ?**

1. अध्यापक दो छात्रों को दो-दो अलग नक्शे देगा ।
2. ये दोनों नक्शे एक ही स्थान के होंगे लेकिन किसी एक नक्शे में स्थान का उल्लेख नहीं किया जाएगा ।
3. इस अभ्यास के दौरान वह छात्र जिसके नक्शे में किसी स्थान विषेश (जैसे कंप्यूटर की दुकान) का उल्लेख नहीं है वह दूसरे छात्र से जिसके नक्शे में कंप्यूटर की दुकान उल्लेख है, यह पूछेगा कि कंप्यूटर की दुकान कहां है ।
4. पहला छात्र अपना नक्शे देखकर दूसरे छात्र को कंप्यूटर की दुकान तक पहुंचने का रास्ता बताएगा ।
5. छात्र एक दूसरे से, नमूने के अनुसार प्रश्न करके अपना-अपना नक्शे पूरा करते हैं ।

... कहाँ है ? (क)

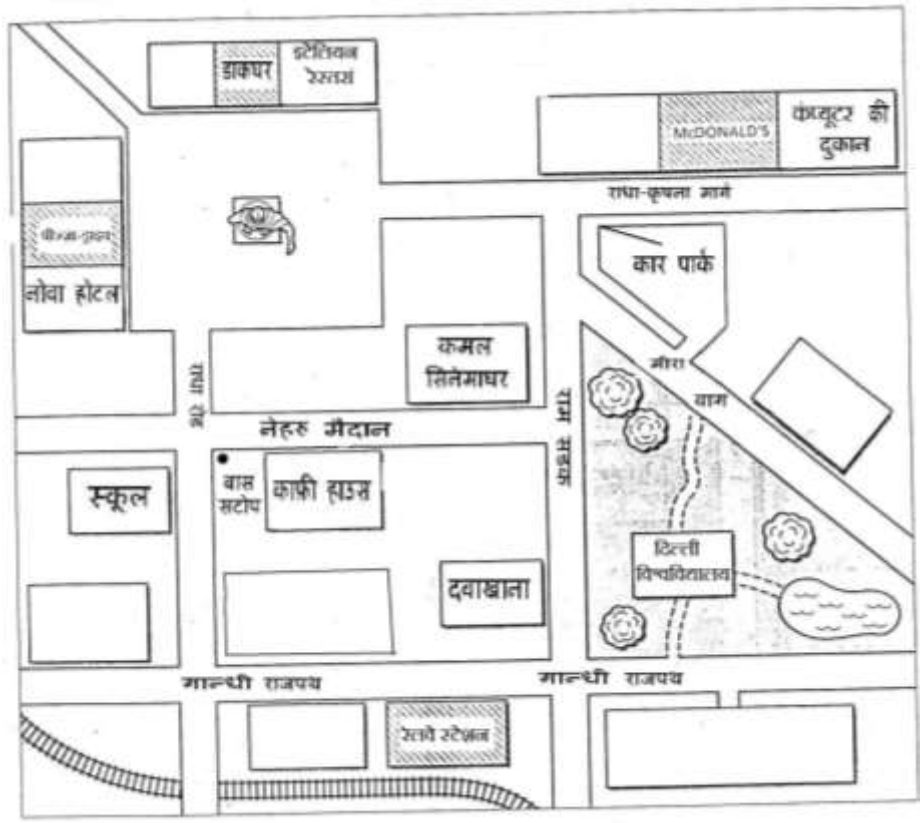


## साथी से पूछो, निम्नलिखित स्थान कहाँ हैं ?

## मानचित्र भर दो

- चित्रकारी स्कूल
- अंजना सिनेमाघर
- सोना कैफे
- बाजार
- HSBC बैंक
- किताबों की दुकान
- चांद होटल
- चित्रशाला

**भूल जाना नहीं**

..... कहां है ?

वह ..... सड़क पार है।
वह ..... बाग में है।
वह ..... से दायें है।
वह ..... की बायीं तरफ से है।
वह ..... के पास (के आस-पास, के बगल
वह ..... के सामने (आगे) है।

के उपर, नीचे, आगे, पीछे

... कहाँ है ? (ख)

साथी से पूछो, निम्नलिखित स्थान कहाँ हैं ?
मानचित्र भर दो

अ कमल सिनेमाघर
आ कंप्यूटर की दुकान
इ इटेलियन रेस्तरां
ई दिल्ली विश्वविद्यालय
उ दवाखाना
ऊ काफी हाउस
ए नोवा होटल
ऐ स्कूल

भुल जाना नही

——— कहाँ है ?

वह ——— सड़क पर है।
वह ——— बाग में है।
वह ——— से दायें है।
वह ——— की बायीं तरफ से है।
वह ——— के पास (के आस-पास, के बगल)
वह ——— के सामने (आगे) है।
के ऊपर, नीचे, आगे, पीछे

**समय**

1. अध्यापक अभ्यास से पहले छात्रों को समय बताना सिखाएगा। (तीन, साढ़े पाँच वगैरा ही नहीं बल्कि,सात बजनेवाले हैं, लगभग पाँच बजे हैं, अभी आठ बज गये' इत्यादि ।
2. हर छात्र को एक घड़ी मिलेगी (आगे दिये गये पृष्ठों से कटी हुई)
3. छात्र उठकर एक-दूसरे से समय पूछेंगे। बातचीत का नमूना:

क समय क्या हुआ ?
ख ठीक तीन बजे ।

क अजीब-सी बात है । मेरी घड़ी में साढ़े चार हैं ।

4. छात्र अपनी-अपनी घड़ियों से समय बताएँगे।
5. छात्र इधर-उधर जाकर ऐसा करके सब छात्रों से समय पूछेंगे ।

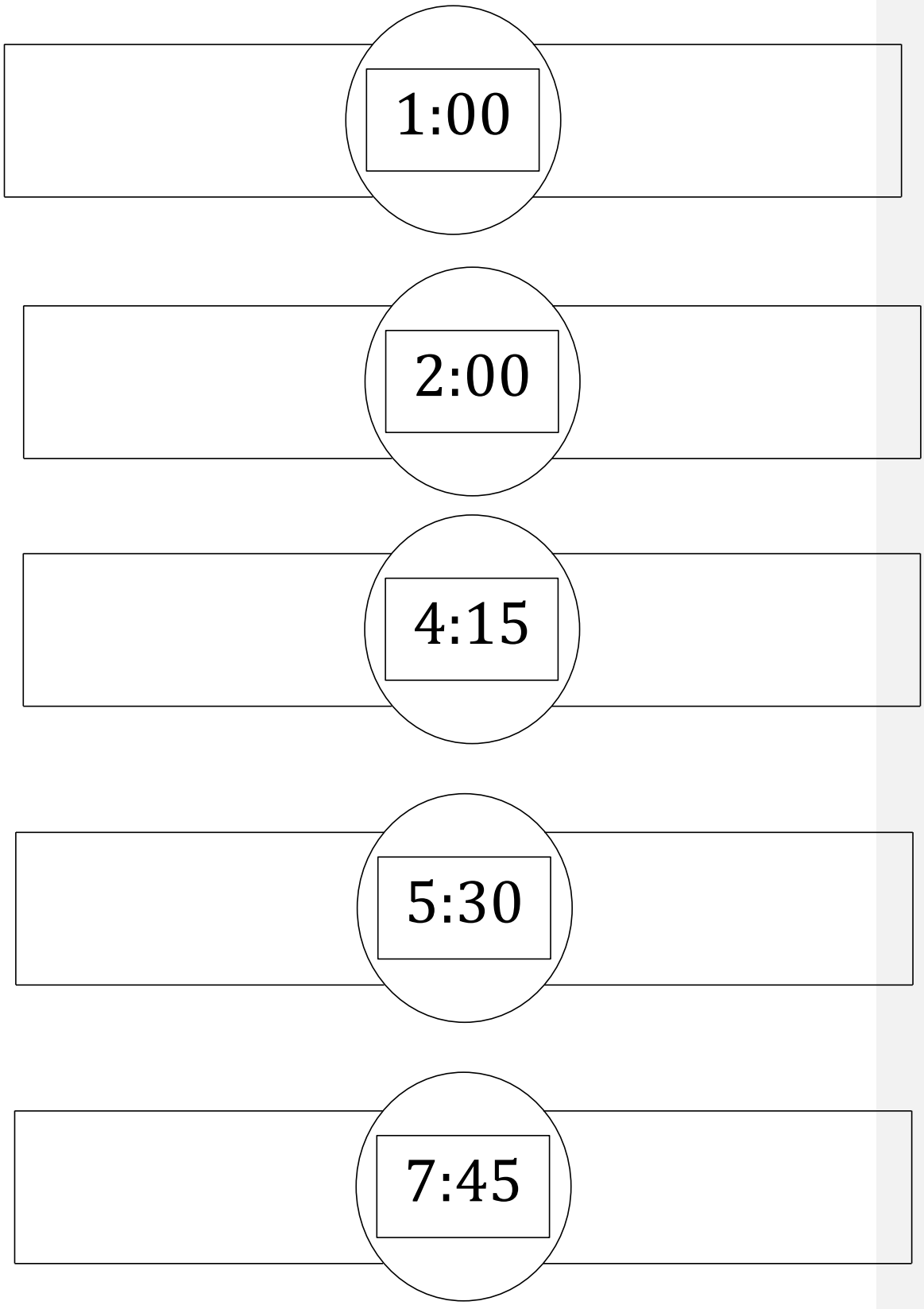
1:00
2:00
4:15
5:30
7:45

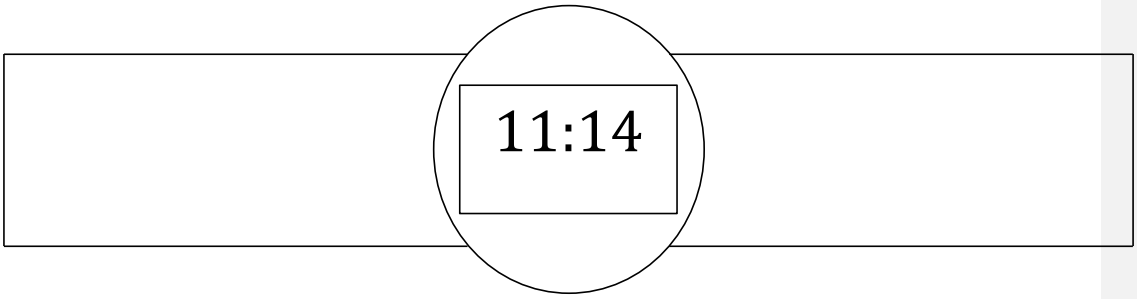
11:14

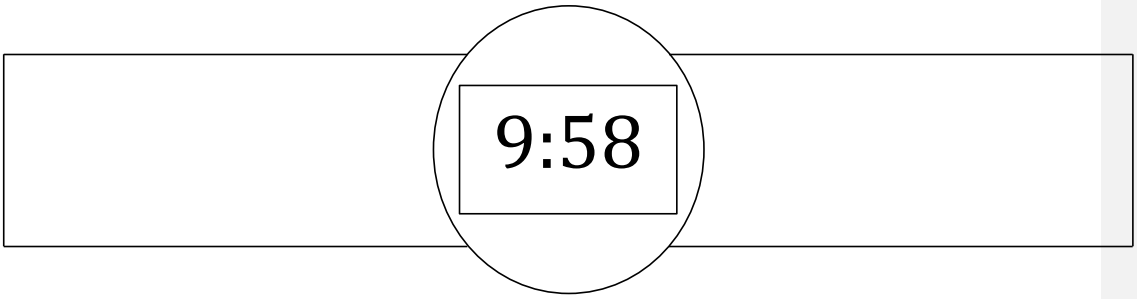
9:58

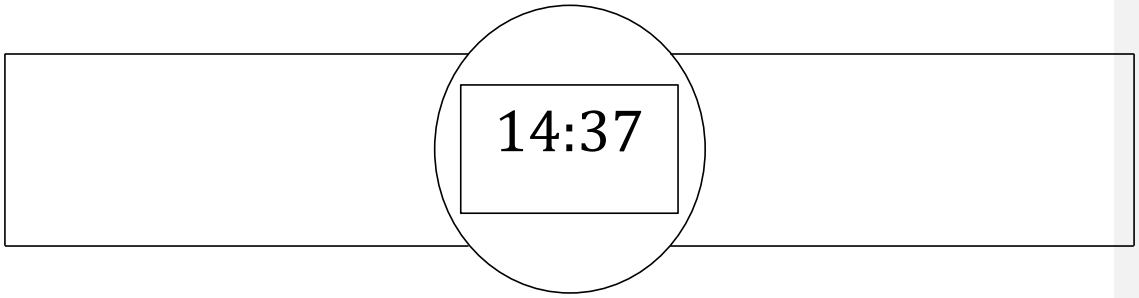
14:37

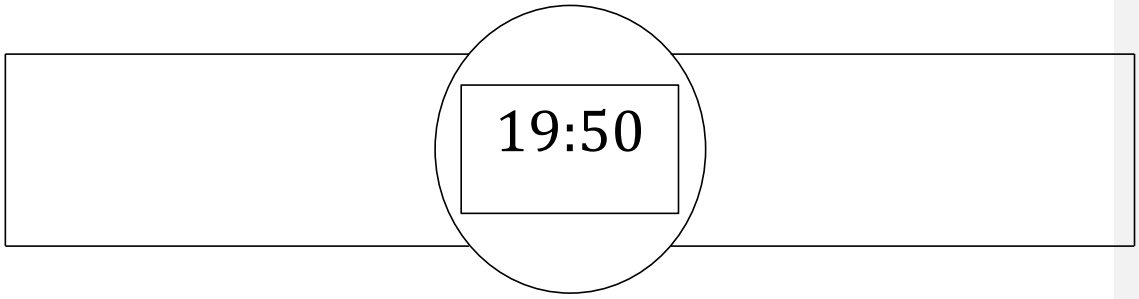
19:50

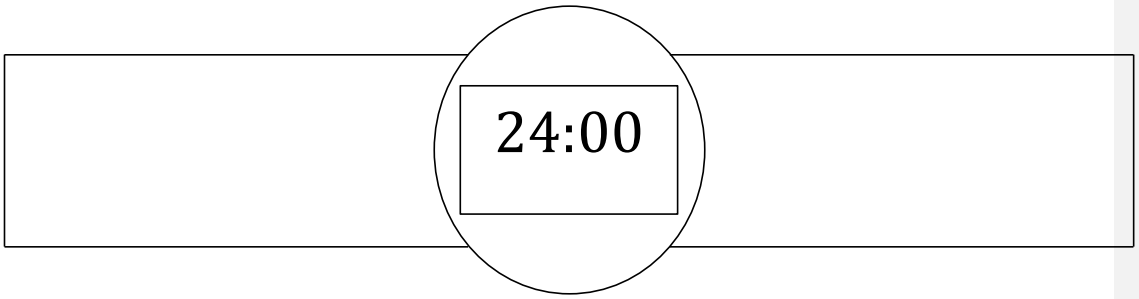
24:00



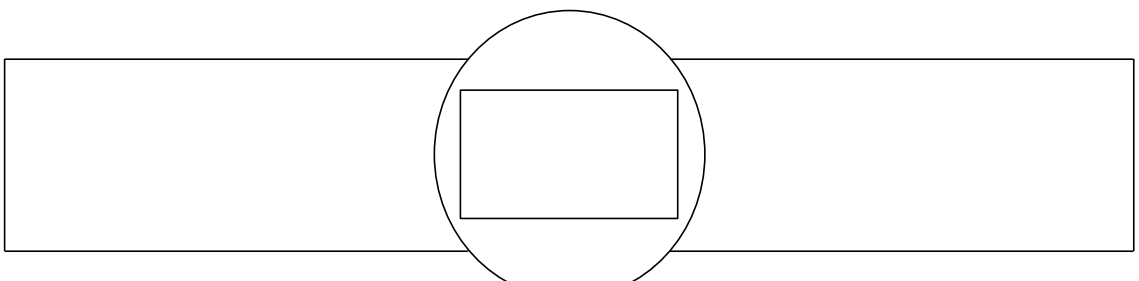

**त्योहार की बातचीत**

1. अध्यापक चार-पाँच भारतीय त्योहारों के बारे में छोटे पाठ तैयार करेगा और उसकी बहुत सी प्रतियां तैयार करेगा ताकि हर छात्र समूह को एक ही त्योहार के बारे में एक ही पाठ मिल सके (एक त्योहार के बारे में चार-पाँच छात्रों को एक पाठ दिया जाएगा) [3]
2. जिन छात्रों को समान पाठ मिले हैं, वे साथ-साथ बैठकर, पाठ पढ़ने के बाद उसकी चर्चा करेंगे।
3. सब छात्र, एक-दूसर से उन धर्मों की चर्चा करेंगे जो उनके समूहों को दिया गया था।

**दीपावली**

दीपावली का अर्थ है दीपों की पंक्ति । भारतवर्ष में मनाए जानेवाले सभी त्यौहारों में यह शायद सब से महत्त्वपूर्ण है। इसे सिख, बौद्ध तथा जैन धर्म के लोग भी मनाते हैं । माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र अपने चौदह वर्ष के वनवास के बाद लौटे थे । श्री राम के स्वागत में अयोध्या के निवासियों ने घी के दीए जलाए थे ।

दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है । कई सप्ताह पूर्व ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती है । लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई करते हैं । बाज़ारों में गलियों को भी सुनहरी झंडियों से सजाया जाता है । दीपावली के दिन भारत में विभिन्न स्थानों पर मेले लगते हैं । सुबह से ही लोग रिश्तेदारों, मित्रों, सगे-संबंधियों के घर मिठाइयाँ व उपहार बाँटने लगते हैं । दीपावली की शाम लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा की जाती है । पूजा के बाद लोग अपने-अपने घरों के बाहर दीपक व मोमबत्तियाँ जलाकर रखते हैं । चारों ओर चमकते दीपक अत्यंत सुंदर दिखाई देते हैं ।

**होली**

**होली** वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय त्योहार है। रंगों का त्योहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते है। दूसरे दिन, जिसे धुरड्डी, धुलेंडी, धुरखेल या धूलिवंदन कहा जाता है, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं।

ऐसा माना जाता है कि इस दिन लोग पुरानी कटुता को भूल कर फिर से दोस्त बन जाते हैं।

एक-दूसरे पर रंग फेंकने के बाद लोग स्नान करके नये कपड़े पहनते हैं।

शाम को लोग एक-दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

**रमज़ान**

इस्लाम धर्म में मुसलमान बनने के लिए बुनियादी पांच कर्तव्यों (फराईज़) को अमल में लाना आवश्यक है। ये फराईज़ हैं- ईमान यानी कलिमा तय्यब, नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात।

इस्लाम के ये पांचों फराईज़ इन्सान को इन्सान से प्रेम, सहानुभूति, सहायता तथा हमदर्दी की प्रेरणा देते हैं।

[3] आगे उदारहण के रूप में कुछ त्योहारों का वर्णन दिया गया है.

रोज़े को अरबी में सोम कहते हैं, जिसका मतलब है रुकना। रोज़ा यानी तमाम बुराइयों से रुकना या परहेज़ करना। ज़बान से गलत या बुरा नहीं बोलना, आंख से गलत नहीं देखना, कान से गलत नहीं सुनना, हाथ-पैर तथा शरीर के अन्य हिस्सों से कोई नाजायज़ अमल नहीं करना।
रोज़े में दिन भर भूखा व प्यासा ही रहा जाता है । जब मुसलमान रोज़ा रखता है, भूखा-प्यासा रहता है तो उसके हृदय में भूखे व्यक्ति के लिए हमदर्दी पैदा होती है।

**रक्षाबन्धन**

रक्षाबन्धन एक भारतीय त्यौहार है जो श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। श्रावण (सावन) में मनाये जाने के कारण इसे श्रावणी (सावनी) या सलूनो भी कहते हैं। रक्षाबन्धन में राखी या रक्षासूत्र का सबसे अधिक महत्त्व है।
इस दिन बहनें अपने भाई के दायें हाथ पर राखी बाँधकर उसके माथे पर तिलक करती हैं और उसकी दीर्घ आयु की कामना करती हैं। बदले में भाई उनकी रक्षा का वचन देता है। ऐसा माना जाता है कि राखी के रंगबिरंगे धागे भाई-बहन के प्यार के बन्धन को मज़बूत करते हैं। भाई बहन एक दूसरे को मिठाई खिलाते हैं। और सुख दुख में साथ रहने का विश्वास दिलाते हैं। रक्षाबन्धन आत्मीयता और स्नेह के बन्धन से रिश्तों को मज़बूती प्रदान करने का पर्व है। यही कारण है कि इस अवसर पर न केवल बहन भाई को ही अपितु अन्य सम्बन्धों में भी रक्षा (या राखी) बाँधने का प्रचलन है।

**1. स्थानांतर**

| |
|---|
| समय : १०/१५ मिनट<br>तैयारी – एक ऐसा वाक्य सोचना जिसमें सही व्याकरण के साथ एक ऐसा लक्षण हो जो एक ही व्यक्ति पर लागू हो पाए । |

a. छात्र और शिक्षक एक गोलाकार मंडल में खड़े हों और शिक्षक के पास एक खाली जगह हो ।
b. तब शिक्षक बोलेगा : (उदाहरणस्वरूप) जिसकी आंखें नीली हैं, वह मेरे पास आए ।
c. तब जिस छात्र का ऐसा लक्षण हैं (उदाहरणस्वरूप नीली आँखों वाला छात्र) वह खाली स्थान ग्रहण करेगा । अगर दो या तीन ऐसे छात्र हों, तो कोई बात नहीं, तब जो सबसे पहले चलेगा उसकी बारी होगी ।
d. फलस्वरूप एक छात्र के पास खाली जगह बनेगी ।
e. अब वही छात्र एक वाक्य बोलेगा जो शिक्षक के वाक्य से मिलता है जैसे जिसकी मां चालीस साल के ऊपर हों, वह मेरे पास आए, इत्यादि ।
f. खाली स्थान पर पहले पहुचने वाले छात्र की बारी ।
g. सभी लोगों की बारी पूरी होने तक यही प्रक्रिया जारी रहेगी ।

**चुटकुले**

अध्यापक कई छोटे चुटकुले इस तरह अलग-अलग पर्चों पर लिखेगा कि हर एक की आखिरी पंक्ति एक अलग पर्चे पर हो ।

हर छात्र को एक पर्चा मिलेगा ।

छात्र उठकर अपनी-अपनी पंक्तियाँ सुनाएँगे। जब दो छात्र सोचेंगे कि उनके पर्चों से एक चुटकुला बनता है, वे साथ-साथ खड़े होंगे ।

जब सब छात्र ऐसा कर लेंगे, वे अपने चुटकुले सुनाएँगे ।

| |
|---|
| एक आदमी पायलेट की नौकरी के लिए इंटरव्यू देने गया । वहां पर सबसे पूछा गया,आपका दिल तो कमजोर नहीं हैं?<br>उस आदमी ने कहा |
| - अजी मेरा दिल तो इतना मज़बूत है कि एक साल के अंदर मुझे चार-चार दिल के दौरे पड़े फिर भी मैं जिंदा हूं। |
| चिड़ियाघर के एक बंदर ने दूसरे बंदर के हाथ की रेखाओं को देखते हुए कहा - मुझे तुम्हारा भविष्य अंधकारमय लगता है ।<br>दूसरा बंदर- लेकिन बंदर का भविष्य तो अच्छा होता है |
| जाओगे बन इंसान बाद दिनों कुछ तुम लेकिन |
| कुश्ती देखने वालों में एक आदमी बोला - लगाओ एक घूंसा मुंह पर ! वाह सारे दांत तोड़ दो ।<br>दूसरे आदमी ने उत्सुकता से पूछा - वाह ! आप कोई अच्छे पहलवान लगते हैं । |
| अरे नहीं भाई ,मैं दांतों का डाक्टर हूँ |
| एक नए खरीदे अखबार पुराने साल पांच से यहां के कबाडी ने वकील नए-।<br>कबाडी ने पूछा - आप इनका क्या करेंगे? |
| वकील साहब बोले - इन्हें अपने ऑफिस में रखेंगे । लोग समझेंगे कि मैं पुराना प्रैक्टिशनर हूं |
| एक लड़के ने एक लड़की से कहा - मैं उस लड़की से शादी करूंगा , जो अच्छा खाना बनाना जानती हो, सादगी से रहती हो और घर को संवार सकती हो । |
| लड़की ने कहा - मेरे घर आना ! ये सभी गुण मेरी नौकरानी में हैं |
| पति ने अपनी पत्नी की सुंदरता की तारीफ़ करते हुए कहा - तुम्हारी उंगलिया तो भिंडी की तरह सुंदर हैं और गाल सेब की तरह सुंदर हैं , आंखें आलू की तरह बड़ी-बड़ी ... |
| पत्नी ने बीच में टोकते हुए कहा- बस-बस रहने दो । मुझे सब्जी मंडी समझ रखा हैं क्या ? |
| रमेश ने सुरेश से पूछा - इस खतरनाक मोड़ पर कोई साइन बोर्ड क्यों नहीं हैं ? |

| |
|---|
| सुरेश बोला - लगातार चार साल तक जब कोई दुर्घटना नहीं हुई तो इस जगह लगे साइन बोर्ड को पी.डब्ल्यू.डी वालों ने बेकार समझकर हटवा दिया । |
| लड़की के पिता ने युवक से कहा - तो तुम मेरी लड़की से शादी करना चाहते हो, और तुम उसके लिए उपयुक्त हो ? |
| युवक बोला - जी हां ! उसकी सुंदरता और आपका धन ,ऐसा लगता है कि हम एक-दूसरे के लिए ही पैदा हुए हैं । |
| एक बच्चे ने अपनी मां से जाकर पूछा - आखिर तुम मुझे स्कूल क्यों भेजती हो ?<br>मां - तुम जैसे नटखट बच्चों को इंसान बनाने के लिए । |
| लेकिन माँ, मास्टर जी तो मुझे मुर्गा बनाते हैं। |
| चिंटु - यार तुम्हारे घर की मक्खियां बहुत तंग कर रही है , बार-बार मेरे उपर आकर बैठ जाती हैं । |
| मिंटु - मैं भी इनकी इस आदत से परेशान हूं ! जो भी गन्दी चीज़ देखती हैं, उस पर बैठ जाती हैं । |

## 4. हिंदी कक्षा में कार्य-आधारित भाषा शिक्षण : सिद्धांत तथा उदाहरण

Task Based Language Teaching (TBLT) क्या है ? इसका मतलब बहुत सीधा है : कार्य पर आधारित भाषा शिक्षण । इसका बुनियादी सिद्धांत यह है कि शिक्षार्थी को एक गतिविधि दी जाती है जिसमें ध्यान सीधे भाषा पर नहीं, बल्कि कार्य पर होता है । अर्थात्, शिक्षक यह नहीं कहेगा कि, उदाहरण के लिए, "सही जगह में क्रियाओं को रखो" बल्कि "पहले फलाने वेबसाइट को एक मेल लिखना जिस में ... " । इस शिक्षण पद्धति में शिक्षार्थियों का ध्यान लक्ष्य भाषा पर केन्द्रित होता है और लक्ष्य भाषा एक साधन होती है जिसके ज़रिए शिक्षार्थी एक दिए हुए सामाजिक संदर्भ में लक्ष्य कार्यों को पूरा करने की कोशश करते हैं । यह शिक्षण पद्धति संचारात्मक सिद्धांत का ही एक रूप है ।
अस्सी के दशक में भाषा शिक्षण में प्राकृतिक पद्धति (Natural Approach) विकसित हुई । भाषाविद् स्टीफन क्रेशेन (Stephen Krashen) के मौलिक विचार के अनुसार भाषाओं का अधिग्रहण अवचेतन प्रक्रिया से होता है ।

जब हम ऐसी भाषा के संपर्क में आते हैं जिसे हम समझ सकते हैं (यानी जब भाषा का इनपुट समझने योग्य होता है) तभी अधिग्रहण की प्रक्रिया सक्रिय हो सकती है।
क्रेशेन ने कहा कि चेतनामयी अवस्था में सीखी हुई - औपचारिक अध्ययन के माध्यम से प्राप्त की गई- भाषा एक मॉनिटर के रूप में काम करती है, यानि लोगों को खुद को सुधारने और 'संपादन' करने देती है । मॉनिटर मेटा भाषाई विचार होता है, जिसका काम भाषाई निष्पादन सही करना है ।

Krashen, S.D; Terrell, T.D. (1983). *The Natural Approach*. New York: Pergamon.

स्टीफन क्रेशेन के अनुसार विदेशी भाषा में क्षमता दो तरह से विकसित होती है:

- अधिग्रहण : सहज, अवचेतन, यह सार्थक संदर्भों की बदौलत होता है
- अध्ययन : सचेतन, नियमानुरूप, क्रमानुसारी

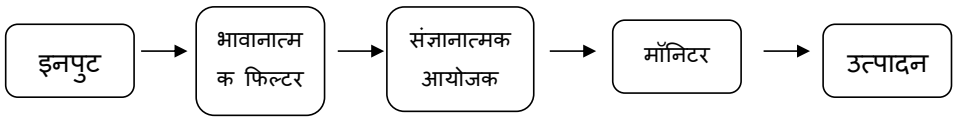


मॉनिटर नियंत्रण तब प्रभावी होता है जब

- छात्र के पास डेटा संयोजित करने के लिए समय होता है
- सामग्री का इनपुट, फार्म पर कम, अर्थ पर अधिक केंद्रित होता है
- छात्र नियम को जानता है

प्राकृतिक पद्धति के सिद्धांत की पूर्वधारणा यह है कि

- अर्थ पर केन्द्रित ध्यान

- प्राप्तकर्ता के लिए प्रामाणिक सामग्री इनपुट के रूप में
- अच्छा और शांत वातावरण

शिक्षण के लिए
अधिग्रहण और अध्ययन के बीच स्टीफन क्रेशेन द्वारा जो स्पष्ट और पूरा अंतर किया गया था उसपर आजकल विद्वान चर्चा कर रहे हैं ।
आजकल के सिद्धांत राय, अंतःक्रिया, बातचीत के आदान-प्रदान पर अधिक ध्यान देते हैं ।

सक्रिय शिक्षार्थी = सुनता है, प्रश्न पूछता है, फिर से सुनता है, दोहराता है !!

क्रेशेन के अधिग्रहण का सिद्धांत दो और सिद्धांतों की बुनियाद है ।

Immersion Teaching (निम्मजन टीचिंग) द्विभाषी समुदायों में रहनेवाले लोगों की भाषाई जरूरतों को पूरा करने के लिए विकसित किया गया । इस शिक्षण पद्धति में दोनों भाषाओं में विषयों का अध्ययन अकसर किसी औपचारिक भाषा शिक्षण के बिना स्कूल की शुरुआत से शुरू होता है ।

Content Teaching (अर्थ से शिक्षण) इस पद्धति के अनुसार भाषा किसी दूसरे विषय (उदाहरण के लिए पाकशास्त्र) के अध्ययन के माध्यम से सीखी जा सकती है ।

Task-Based Learning (टास्क आधारित अध्ययन) आजकल के चर्चित शिक्षण तरीकों में से एक है । इसका मूल 'मज़बूत' कम्यूनिकेटिव (संचारात्मक) पद्धति में है, जिस में शिक्षण संचारात्मक कार्यों के माध्यम से पूरी तरह से किया जाता है ।
कोई निर्धारित व्याकरण पाठ्यक्रम नहीं है । यह व्यापक रूप से माना जाता है कि एक कार्य पूरा करने के बाद उस में उपयोग की गई भाषा पर ध्यान देने से अधिग्रहण में बड़ी सहायता होती है । कार्य दोहराने से शिक्षार्थियों को नई भाषा का अभ्यास करने का मौका मिलता है ।

**कार्य क्या होते हैं?**
कार्य रोज़मर्रा की जिंदगी का एक रूप होते हैं - दैनिक जीवन में एक अलमारी एक कमरे से दूसरे कमरे में ले जानी है, यह एक कार्य, या अगले वित्तीय वर्ष के लिए बजट की योजना बनानी है, यह भी एक कार्य हो सकता है । कक्षा में संचार हमेशा प्रक्रिया का हिस्सा होता है, चाहे कार्य रचनात्मकता हो या समस्या को हल करने का, योजना बनाने का या एक सौदे को पूरा करने का ।
छात्र सक्रिय रूप से संचार में शामिल हो जाते हैं और उनका ध्यान एक विशेष लक्ष्य को प्राप्त करने पर केंद्रित हो जाता । लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उनको समझना, बातचीत करना, विचार विमर्श करना, विचारों को व्यक्त करना होता है । कक्षा में कार्य लाने का नतीजा यह है कि भाषा सीखने का ध्यान अर्थ और लक्ष्य पर होता, संचार के फार्म पर नहीं । विशिष्ट छात्रों के लिए कोर्स प्रासंगिक बनाने के लिए 'असली जीवन से प्रेरित' कार्यों का चयन किया जा सकता है ।

**गतिविधि १ : फोटो योजना**

विधि

१. टीम बनाएँ ।
२. हर टीम को कार्य पत्र (नीचे देखें) दें ।
३. यह समझाएँ कि उनको डिजिटल फोटो देनी होगी ।

**कार्य पत्र**

**लक्ष्य :**

- दिए गए लिखित विवरण के अनुसार इन्हीं लोगों के चित्र खींचने हैं ।

**आवश्यक सामग्री:**

- हर टीम में कम से कम दो दो छात्र होने चाहिए (यह बेहतर होगा अगर प्रत्येक छात्र के पास एक डिजिटल कैमरा या स्मार्टफ़ोन हो) ।
- कंप्यूटर में चित्रों का ट्रान्सफर करने के लिए एक केबल होनी चाहिए ।

**मूल्यांकन :**

- प्रत्येक तस्वीर जो पूरी तरह से वर्णन के अनुकूल है : १० अंक ।
- प्रत्येक तस्वीर जो आंशिक रूप से वर्णन के अनुकूल है, प्रत्येक आइटम के लिए १ अंक ।
- बोनस/ अधिलाभ: प्रत्येक तस्वीर जो आंशिक रूप से वर्णन के अनुकूल है, यदि इसमें जो व्यक्ति है वह मुस्कुरा रहा है, नमस्ते कर रहा है और समूह के कम से कम एक सदस्य के साथ फ़ोटो में दिखाई दे रहा है : ३ अंक ।

नोट: प्रत्येक विवरण के लिए केवल एक फ़ोटोग्राफ प्रस्तुत की जा सकती है ।

**स्कोर:**

- 40 अंक से कम: अपर्याप्त
- 41 अंक से 60 अंक तक : अच्छा
- 61 अंक से : उत्कृष्ट

**कार्य:**

- अपने साथिओं के साथ सड़क पर जाना है । वहाँ लोगों को गौर से देखकर एेसे व्यक्तियों की तलाश करनी है जो पूरी तरह से या आंशिक रूप से नीचे दिए १० लिखित विवरणों से मिलते हैं । उनसे मिलकर उनकी एक तस्वीर खींचनी है ।

**विवरण**

१. एक लंबा, हलके भूरे बालों वाला आदमी जो चश्मा पहने हुआ है।
२. एक छोटा, पतला और काले बालों वाला लड़का।
३. छोटे सफेद बालों वाली ४० और ५० साल के बीच की उम्र वाली मोटी सी महिला ।
४. एक पतला, लंबे भूरे रंग के बाल वाली महिला ।
५. टाई वाले नीले रंग का सूट पहना हुआ, चश्मावाला आदमी, जिसके मुंह में एक सिगरेट है ।
६, बैग और आईपॉड लेकर १५/२० साल का एक लड़का।
७, कम से कम एक टैटू वाली, स्कर्ट कमीज़ पहनी हुई लड़की जो अपने बॉयफ्रेंड को चूम रही हो।
८. जूते पहने हुए घुंघराले बाल वाली एक छोटी सी लड़की।
९. जैकेट, काले जूते और नीले रंग की कमीज़ पहना हुआ एक मोटा आदमी।
१०. मिनिस्किर्ट, ऊँची एड़ी के जूते पहनी हुई लंबे बालों वाली लड़की।

## मूल्याँकन

1. मूल्यांकन के लिए समूह बनाना ।

हर समूह में कम से कम हर टीम का एक एक सदस्य होना चाहए, ताकि सदस्यों का समान वितरण हो ।
उदाहरण के लिए, अगर निम्नलिखित टीमें हैं :
- टीम ए (क , ख , ग , घ )
- टीम बी (च , छ , ज, झ)
- टीम सी (ट, ठ, ड, ढ)
- टीम डी (त, थ, द, ध)

तो निम्नलिखित समूह बनेंगे :
समूह 1(क, च, ट, त)
समूह 2 (ख, छ, ठ, थ)
समूह 3 (ग, ज, ड, द)
समूह 4 (घ, झ, ढ, ध)

2. यह समझाएँ कि आप ने पहले से ही सभी टीमों के कार्यों का मूल्यांकन कर लिया है और सही स्कोर लगा चुके हैं । मूल्यांकन में समूहों का उद्देश्य यह होगा कि उनको शिक्षक द्वारा लगाए गए स्कोर के अधिक से अधिक क़रीब पहुँचना है । जो समूह सबसे कम अंको से शिक्षक द्वारा लगाए गए स्कोर के करीब होंगे (५ अंक ऊपर या नीचे) उनको पुरस्कार मिलेगा अर्थात समूह के प्रत्येक सदस्य को एक मिठाई प्राप्त होगी ।
3. यह स्पष्ट करें कि मूल्यांकन के दौरान छात्रों के बीच संचार या बातचीत केवल हिंदी में होनी चाहिए । यदि अन्य भाषाएँ सुनाई देती हैं तो ऐसा करनेवालों को पाँच मिनट तक खड़ा होना पड़ेगा ।
4. हर समूह में अलग-अलग सदस्यों को निम्नलिखित भूमिकाएँ आवंटित करें :
क) “मुंशी” जिसको मूल्यांकन पात्र (नीचे देखें) दिया जाता है । उस पर सिर्फ़ वही लिख सकता है । अन्य सदस्यों के क़लम आप ले लें ।
ख) “प्रवक्ता” जो आपसे बात कर सकता है : संवाद करने की अनुमति उसी को दी गई है । इसलिए यदि दूसरों को कोई सवाल पूछना है या उनको किसी स्पष्टीकरण की ज़रूरत है, तो उनको प्रवक्ता के माध्यम से यह करना होगा ।
ग) “शब्दकोश का उपयोगकर्ता”, जो द्विभाषी शब्दकोश में शब्द खोज सकते हैं।

5. आपके पास यदि प्रोजेक्टोर है तो कक्षा में टीमों द्वारा जो फ़ोटो खींची गई हैं उनका प्रदर्शन करें । नहीं तो, प्रिंट करके दिखाएँ ।
6. हर एक फोटो का मूल्यांकन करने के लिए निश्चित समय रखें ।
7. जब हर टीम के काम का पूरी तरह से मूल्यांकन हो जाएगा, तो सब मुंशी कुल अंक जोड़कर अपने मूल्यांकन पत्र (नीचे देखें) में उसको लिखकर आपको दे देंगे । उन अंकों की तुलना अपने स्कोर से करें । जिन समूहों के

स्कोर आपके द्वारा लगाए अंकों के क़रीब हों (५ अंक के अधिकतम फ़र्क़ से) उनको मिठाइयाँ दे दें (एक टॉफ़ी ठीक रहेगी!)।
इस बात का ध्यान रखें: स्कोर की सार्वजनिक रूप से घोषणा करना अनुचित है, क्योंकि जिन टीमों के अंक अपर्याप्त होंगे वे शर्मिंदा होकर घबरा सकते हैं ।
8. सभी टीमों के लिए यह मूल्यांकन विधि पूरी करके फिर से टीमों को इकट्ठा करें । हर एक टीम में एक "प्रवक्ता" का चयन करें । हर एक टीम को उनका अंकपत्र दे दें और मूल्यांकन पर चर्चा का मौक़ा दें ।

**मूल्यांकन पत्र**

**परियोजना टीम मूल्यांकन _____**

वर्णन

विवरण

1. एक लंबा, हलके भूरे बालों वाला आदमी जो चश्मा पहना हुआ है।

____ अंक

2. एक छोटा, पतला और काले बालों वाला लड़का।

____ अंक

3. छोटे सफेद बालों वाली ४० और ५० साल के बीच की उम्र वाली मोटी सी महिला ।

____ अंक

4. एक पतला, लंबे भूरे रंग के बाल वाली महिला ।

____ अंक

5. टाई वाले नीले रंग का सूट पहना हुआ, चश्मावाला आदमी, जिसके मुंह में एक सिगरेट है ।

____ अंक

6. बैग और आईपॉड लेकर १५/२० साल का एक लड़का।

____ अंक

7. कम से कम एक टैटू वाली, स्कर्ट कमीज़ पहनी हुई लड़की जो अपने बॉयफ्रेंड को चुंबन हो रही है ।

____ अंक

8. जूते पहने हुए घुंघराले बाल वाली एक छोटी सी लड़की।

____ अंक

9. जैकेट, काले जूते और नीले रंग की कमीज़ पपहना हुआ एक मोटा आदमी।

____ अंक

10. मिनिस्किर्ट, ऊँची एड़ी के जुटे पहनी हुई लंबे बालों वाली लड़की।

____ अंक

**गतिविधि 2 : हिंदी कार्टून परियोजना "और आख़िरी आदमी दरवाज़ा बंद करे !"**

इस गतिविधि का शीर्षक इतालवी राष्ट्रीय टीवी के एक पुराने बहुत लोकप्रिय कार्यक्रम "Gulp! Fumetti in TV" से लिया गया है जिसमें कार्टून स्ट्रिप से बनाई गई फ़िल्में प्रसारण की जाती थीं। एनिमेटेड स्ट्रिप्स पारंपरिक एनीमेशन के आधार पर नहीं बनाए जाते हैं। पात्र स्क्रीन पर नहीं चलते हैं, बल्कि कैमरा चलता है और स्ट्रिप पर ज़ूम करता है।

पियन अल्बेरतो गतिविधि यह मैंने(Alberto Pian, शिक्षक, लेखक, अनुसंधानकर्त्ता http://didanext.www76.a2hosted.com/) बनाई से सहायता की।
मैंने यह गतिविधि अल्बेरतो पियन की सहायता से बनाई (Alberto Pian, शिक्षक, लेखक, अनुसंधानकर्त्ता http://didanext.www76.a2hosted.com/)।

**1. छोटी कहानी की रचना**

लक्ष्य : एक छोटी कहानी लिखना।

मान लें कि आप भारतीय हैं। आपको अपने बारे में कुछ बताना है। आप कैसे दिखते हैं ? क्या सोचते हैं ? आपकी ज़िन्दगी का एक उपाख्यान सुनाना है।

जोड़ी बनाकर दी गईं दस तस्वीरों में से ४ चुन लें। हर एक तस्वीर से उपाख्यान के लिए एक अलग सीक्वेन्स बनाएँ जो ज़्यादा छोटा न हो न ही ज़्यादा लम्बा।

स्रोत :free to use Google images

| | |
|---|---|
| कहानी में निम्नलिखित ४ स्थानों में से किसी एक का उल्लेख होना चाहिए । इसका मतलाब यह नहीं कि कहानी का स्थल वही होना चाहिए । बस यही कि वह जगह किसी तरह से कहानी में होनी चाहिए ।<br>1. वाराणसी का एक घाट<br>2. एक सड़क<br>3. एक गाँव<br>4. गोआ का समुद्र तट | कहानी में निम्नलिखित वाक्य होना चाहिए :<br>“अच्छा, उसे कहना कि देर हो रही है” |

**2. कहानी से पटकथा तक**

पटकथा क्या है ? शिक्षार्थियों को मनोहर श्याम जोशी का लेख दें । वे खुद जोड़ी बनकर उसको पढ़ेंगे और उस पर अगली क्लास में विचार विमर्श करेंगे ।

शिक्षार्थियों को अपनी कहानी से एक छोटी सी पटकथा बनानी होगी और पात्रों के लिए संवाद की पंक्तियाँ भी लिखनी होंगी ।

**3. पटकथा से फ़िल्म तक**

इस गतिविधि के लिए यह जरुरी नहीं कि कि आपको फ़िल्में बनाना आता हो या आपको अच्छी तरह चित्र बनाना आता हो। फिल्म सिर्फ़ कंप्यूटर के प्रोग्रामों का प्रयोग करके बनानी है : Comic Life, http://plasq.com

और PhotoToMovie, http://www.lqgraphics.com/software/download.php. । इन प्रोग्रामों का ट्रायल संस्करण आप मुफ़्त में डाउनलोड कर सकते हैं।

## ग्रन्थ सूची


Andorno, Cecilia. 2010. *Lo sviluppo della morfosintassi in studenti cinesi*. in S. Rastelli (ed), *Italiano di cinesi, italiano per cinesi: dalla prospettiva della didattica acquisizionale*, Guerra, Perugia, pp. .122-89

Balboni P. E. 2013. *Fare educazione linguistica. Insegnare italiano, lingue straniere e lingue classiche*. Torino: Utet.

Leaver, Betty Lou and Jane R Willis (eds). .2004*Task-based Instruction in Foreign Language Education*: Practices and programs. Georgetown University Press

Nunan David. 2004. *Task-Based Language Teaching*, Cambridge University Press, Cambridge.

Willis , Dave and Jane Willis. .2007*Doing Task-based Teaching*. London: Oxford University Press.

Willis, Jane .1996 *.A Framework for Task-Based Learning*. Edinburgh : Addison Wesley Longman

## 5. हिंदी कक्षा में विषय वस्तु आधारित शिक्षण : सिद्धांत तथा उदाहरण

विषय वस्तु आधारित दूसरी भाषा का शिक्षण (Content based instruction, CBI) : यह क्या है?

हालांकि विषय वस्तु आधारित अनुदेश ज़्यादातर 1965 में कनाडा में भाषा विसर्जन शिक्षा की उत्पत्ति के साथ जुड़ा हुआ है, सीबीआई मुश्किल से एक नई पद्धति है।
खास तौर पर उत्तरउपनिवेश की परिस्थितियों में यह भाषा सिद्धांत बहुत महत्त्वपूर्ण है ।
"राष्ट्रवाद के उदय से पहले केवल महान साम्राज्यों, धर्मों, और सभ्यताओं की भाषाएँ एक औपचारिक पाठ्यक्रम की सामग्री और विषय वस्तु बनने के सक्षम या योग्य मानी जाती थीं ।
(स्वेन एंड जॉनसन, 1997, पृ. 1)[4]
भारत में आजकल भी अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य स्पष्ट है ।

सीबीआई "... भाषा शिक्षण के लक्ष्य और विशेष विषय के शिक्षण का समन्वय करना है ... शैक्षिक विषय और विदेशी भाषा कौशल में शिक्षण एक साथ होता है (ब्रिंटोन आदि , 1989, पृ. 2)।
"...the integration of particular content with language teaching aims...the concurrent teaching of academic subject matter and second language skills" (Brinton et al., 1989, p. 2).

सीबीआई पद्धति के अनुसार लक्ष्य भाषा बड़े पैमाने पर अध्ययन के तत्काल वस्तु के रूप में नहीं बल्कि वाहन के माध्यम के रूप में मानी जाती है । सीबीआई का उद्देश्य है दूसरी या विदेशी भाषा में उपयोग-उन्मुख कौशल का विकास करना (Wesche, 1993) ।
सीबीआई भाषा शिक्षा के लिए एक पद्धति है जो दूसरी या विदेशी भाषा शिक्षण के संदर्भ में पढ़ाई के विषयों (गणित, सामाजिक अध्ययन, भूगोल आदि जैसे) का एकीकरण करता है (Crandall and Tucker, 1990, p. 187) ।

'content' क्या है ? Genesee (1994) से पता चलता है कि यह जरूरी नहीं है कि विषय अकादमिक हो ।
कोई भी विषय या प्रसंग, जो शिक्षार्थियों की रुचि या दिलचस्पी जगा सके, जो उनके लिए महत्वपूर्ण हो, वह ठीक होगा ।
हम यही सिखाते हैं ।

किसी भी प्रकार के सीबीआई वाले कोर्स पढ़ाने में हम विषय ही नहीं पढ़ाते है, बल्कि उस विषय के डिस्कोउर्स का कोई रूप ।
हम हिंदी भाषी दुनिया में ज्ञान के संदर्भ में उस विषय को कम, उस विषय के डिस्कोउर्स का कोई रूप ज़्यादा सिखाते हैं ।
इसका मतलब यह है कि यह महत्त्वपूर्ण है कि हम शिक्षार्थियों को उनकी की मूलभाषा की मान्यताओं, रीतियों, और प्रणालियों के आधर पर हिन्दीभाषी डिस्कोर्स समूहों की मान्यताओं, रीतियों, और प्रणालियों की तरफ

[4] "Until the rise of nationalism, few languages other than those of the great empires, religions, and civilizations were considered competent or worthy to carry the content of a formal curriculum" (Swain & Johnson, 1997, p. 1).

Formatted: English (U.S.)

जाने में मदद करें । शिक्षकों की समस्या यह है कि हिन्दीभाषी डिस्कोर्स समूहों की ओर शिक्षार्थियों को कैसे ले जाया जाए ? और शिक्षार्थियों के लिए समस्या यह है कि उन समूहों के सांस्कृतिक डिस्कोर्स कैसे अपनाएँ ? (Eskey, 1997, pp. 139-140)।

प्राकृतिक भाषा का अधिग्रहण संदर्भ में होता है; प्राकृतिक भाषा अर्थ से कभी अलग नहीं हो सकती है, और सीबीई शिक्षा सार्थक संचार के लिए एक संदर्भ प्रदान करती है (Grabe & Stoller 1997; Curtain 1995; Met 1991) । यह नहीं होता है कि लोग पहले भाषाओं को सीखते और फिर उनका इस्तेमाल करने लगते हैं । लोग भाषाओं का उपयोग करते करते भाषाओं को सीख लेते हैं । इसका मतलब यह नहीं है कि फॉर्म महत्त्वपूर्ण नहीं । दोनों फार्म और अर्थ महत्त्वपूर्ण हैं और भाषा सीखने में उनको आसानी से अलग करना संभव नहीं है (Lightbown & Spada 1993; Met 1991; Wells 1994)। संज्ञानात्मक शैक्षणिक भाषा प्रवीणता (Cognitive Academic Language Proficiency) विकसित करते समय छात्रों को अर्थ (content) सीखना होता है । भाषा और विषय अलग अलग सीखने के लिए पर्याप्त समय नहीं है । Content instruction को उस समय तक स्थगित करना जब तक छात्रों की (अकादमिक) भाषा अधिक उन्नत और विकसित न हो जाए यह न केवल अव्यावहारिक है, यह छात्रों की ज़रूरतों, दिलचस्पी और संज्ञानात्मक स्तर को भी उपेक्षित करता है (Byrnes 2000) । पारंपरिक भाषा अनुदेश में जहाँ ध्यान भाषा पर ही केन्द्रित है भाषा सीखना भावात्मक/अमूर्त होता है । सीबीआई से भाषा सीखना भावात्मक से अधिक ठोस हो जाता है (Genesee, 1994) । सीबीआई में शिक्षार्थी एक दूसरे के सहयोग और सहायता से दूसरी भाषा सीखते हैं और इससे सीखने की प्रक्रिया में सुधार आता है ।

(Slavin, 1995; Crandall, 1993) । सीबीआई असली जीवन और वास्तविक दुनिया कौशल से संबंधित है (Curtain, 1995)। सीबीआई पाठ्यक्रम और गतिविधियों में बेहतर फ्लेक्सेबिलिटी (flexibility) लाने का मौका देता है । छात्रों की जरूरतों और रुचियों के अनुसार पाठ्यक्रम को बदलने के लिए और अधिक अवसर देता है । भाषा के हर स्तर पर भाषा और विषय (content) का एकीकरण इसीलिए भी उपयोगी है क्यों कि बुनियादी भाषा और उन्नत साहित्य और सांस्कृतिक अध्ययन के बीच अंतर की जो चुनौती होती है, जो अकसर विश्वविद्यालय के भाषा विभागों में देखी जाती है, उसमें उससे निपटने की क्षमता होती है ।

**भूगोल सम्बंधित कुछ गतिविधियाँ**

1. नक़्शा पढ़ना[5]

सब अभ्यास जोड़ी बनाकर करने हैं ।

इस गतिविधि में छात्र क्या सीखेंगे ?

1. एशिया के देश नक़्शे पर पहचानना और उनके हिंदी में नाम बताना ।
2. भारत के राज्यों के नाम बताना।
3. दिशाएँ दिखाना ।

शिक्षार्थियों को एशिया और दक्षिण एशिया के कुछ नक़्शे दें जो देवनागरी में हों । (स्रोत पुस्तक : *ड्रीमलैंड स्कूल एटलस*, ड्रीमलैंड पब्लिकेशन , नई दिल्ली १९९९) ।

**दिशाएँ**

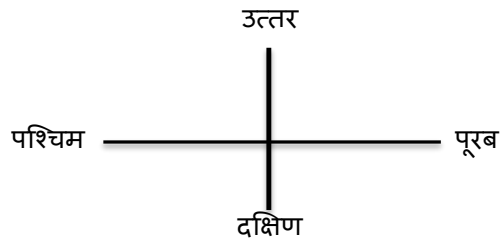

[5] इस खंड के नक्षों का स्रोत : *ड्रीमलैंड स्कूल एटलस* , ड्रीमलैंड पब्लिकेशन , नई दिल्ली १९९९

क) शिक्षार्थियों को नक्शों का प्रयोग करके भारत के राज्यों और महानगरों के नाम बताने हैं ।

जोड़ी बनाकर एक दूसरे से सवाल पूछकर और उचित दिशाओं का प्रयोग करके जवाब देना है:
उदाहरण :

- कोलकत्ता भारत में कहाँ है ? कोलकत्ता उत्तर पूर्व भारत में है ।
- महाराष्ट्र भारत में कहाँ है ? मध्य भारत में है ।

ख) उदाहरण के रूप में भारत के संबंध में स्थान बताना :
उदाहरण :

- पाकिस्तान कहाँ हैं ? भारत के पश्चिम में है ।
- श्री लंका कहाँ है ? भारत के दक्षिण में है ।

यह अभ्यास अपने देश के राज्यों या शहरों से किया जा सकता है ।

ग) तालिका पूरी करना :

| **देश** | **सीमा पर अवस्थित भारतीय राज्य** |
|---|---|
| पाकिस्तान | _____ ,राजस्थान ,_____ ,और _____ |
| अफ़ग़ानिस्तान | _____ |
| तजाकिस्तान | _____ |
| चीन | जम्मू कश्मीर ,_____ ,उत्तराखंड_____ ,और _____ |
| नेपाल | _____ _____ ,_____ ,_____ , और पश्चिम बंगाल |

| | |
|---|---|
| भूटान | सिक्किम_____ ,_____ ,और_____ |
| बांग्लादेश | _____ ,_____ ,और त्रिपुरा |
| म्यांमार | अरुणाचल प्रदेश_____ ,_____ ,और _____ |

हल :

| देश | सीमा पर अवस्थित भारतीय राज्य |
|---|---|
| पाकिस्तान | गुजरात ,राजस्थान ,पंजाब और जम्मू कश्मीर |
| अफ़ग़ानिस्तान | जम्मू कश्मीर |
| तजाकिस्तान | जम्मू कश्मीर |
| चीन | जम्मू कश्मीर ,हिमाचल प्रदेश ,उत्तराखंड ,सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश |
| नेपाल | उत्तराखंड ,उत्तर प्रदेश ,बिहार ,सिक्किम और पश्चिम बंगाल |
| भूटान | सिक्किम ,पश्चिमी बंगाल ,असम और अरुणाचल प्रदेश |
| बांग्लादेश | पश्चिम बंगाल ,असम ,मेघालय और त्रिपुरा |
| म्यांमार | अरुणाचल प्रदेश ,नागालैण्ड ,मणिपुर और मिजोरम |

**२. संख्याओं के माध्यम से भारत**

इस गतिविधि का उद्देश्य क्या है ?

- भारत जनसांख्यिकी के संदर्भ में हिन्दी में जटिल संख्याओं की समीक्षा करना
- बातचीत का अभ्यास करना
- भारत की जनसांख्यिकी स्थिति की जानकारी हासिल करना
- अपने देश से तुलना करना

पाठ से पहले शिक्षक संख्याओं (विशेष रूप से लाखों, कड़ोरों और अरबों) की संक्षेप में समीक्षा दें ।
चूँकि यूरोप में गिनने की प्रणाली अलग है, इसलिए ज़्यादातर छात्रों को बड़ी संख्या का उपयोग करने में कठिनाई होती है ।

इस गतिविधि में छात्र क्या सीखेंगे ?

अपनी भाषा और हिंदी में महत्वपूर्ण जीवन संबंधी आंकड़ों की शब्दावली समझना और उसका उपयोग करना ।

1. अपने देश और भारत जनसांख्यिकी की तुलना करना ।

सांस्कृतिक:

2. जनसांख्यिकीय आँकड़ों के माध्यम से भारत के लोगों और भारत की संस्कृतियों के बारे में और अधिक भाषा जानना और समझना: अनिवार्य विषय content obligatory
3. बड़ी संख्याओं का प्रयोग (लाख, कड़ोर और अरब) करके भारत की जनसँख्या के बारे में पूछे हुए प्रश्नों का उत्तर देना । उदाहरण के लिए: भारत की आबादी एक अरब, इक्कीस कड़ोर, एक लाख, तिरानवे हज़ार, चार सौ बीस (1,21,01,93,422 ) है ।
4. जनसांख्यिकीय आँकड़ों को रिपोर्ट करने के लिए सामान्य आधुनिक और नई शब्दावली का प्रयोग करना, जैसे आबादी, जनसंख्या घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात, आदि ।
5. तुलनात्मक विशेषणों का इस्तेमाल करके भारत और इटली के बीच तुलना करना, जैसे बड़ा/छोटा, अधिक, सबसे ... उदाहरण के लिए : भारत की आबादी इटली की आबादी से बड़ी है

वस्तु सुसंगत (content compatible) भाषा

1. छात्र कोई भी स्पष्टीकरण माँगने के लिए विनम्र अभिव्यक्ति का उपयोग करेंगे । उदाहरण के लिए : क्षमा कीजिये, मैं नहीं समझा ।
2. औपचारिक और अनौपचारिक निवेदन करना : फिर बोलिए । फिर बोलियेगा । फिर बोलना । फिर बोलो।

सीखने की रणनीति / सामाजिक और कौशल विकास:

छात्र...

भारत के जनसांख्यिकी डेटा का विश्लेषण करेंगे और उस पर विचार विमर्श करेंगे ।

प्रामाणिक जनसांख्यिकीय आँकड़ों से अर्थ का ग्रहण, अनुमान, और निष्कर्ष निकालेंगे ।

अंतिम या समापक चर्चा में महत्त्वपूर्ण सोच कौशल का विकास होगा ।

जानकारी हासिल करने के लिए गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेंगे ।

**जनगणना रिपोर्ट**

2011 जनगणना

| | | |
|---|---|---|
| **जनसंख्या** | कुल | 1,210,854,977 |
| | पुरुष | 623,270,258 |
| | महिलायें | 587,584,719 |
| **साक्षरता** | कुल | %74.04 |
| | पुरुष | %82.14 |
| | महिलायें | %65.46 |
| **जनसंख्या घनत्व** | प्रति वर्ग किमी | 382 |
| **लिंगानुपात** | प्रति 1000 पुरुषों पर | 940महिलायें |

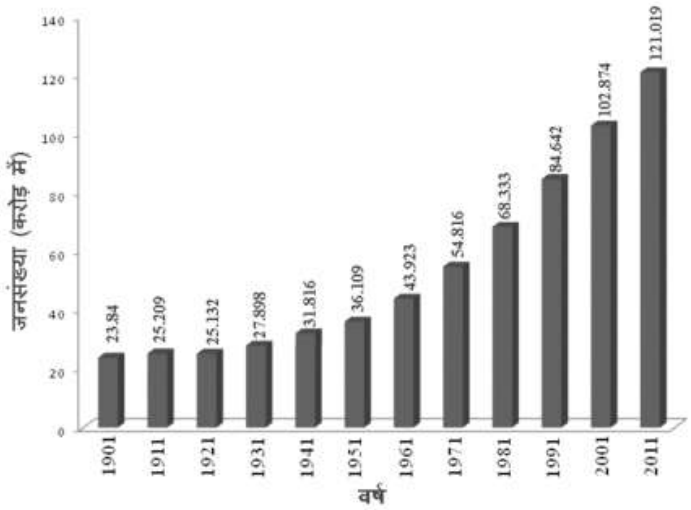


भारतीय जनसंख्या में दशकवार वृद्धि (1901-2011)।

## 2011 राज्यानुसार जनगणना रिपोर्ट

| क्रमांक | केंद्र शासित प्रदेश/ राज्य का नाम | टाइप | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत (%) | पुरुष | महिलाएं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | अंडमान और निकोबार द्वीप समूह | केंद्र शासित प्रदेश | 3,79,944 | 0.03 | 202330 | 177614 |
| 2 | आंध्र प्रदेश | राज्य | 8,46,65,533 | 7.00 | 42509881 | 42155652 |
| 3 | अरुणाचल प्रदेश | राज्य | 13,82,611 | 0.11 | 720232 | 662379 |
| 4 | असम | राज्य | 3,11,69,272 | 2.68 | 15954927 | 15214345 |
| 5 | बिहार | राज्य | 10,38,04,637 | 8.48 | 54185347 | 49619290 |
| 6 | चंडीगढ़ | केंद्र शासित प्रदेश | 10,54,686 | 0.09 | 580282 | 474404 |
| 7 | छत्तीसगढ़ | राज्य | 2,55,40,196 | 2.11 | 12827915 | 12712281 |
| 8 | दादरा और नगर हवेली | केंद्र शासित प्रदेश | 3,42,853 | 0.03 | 193178 | 149675 |
| 9 | दमन और दीव | केंद्र शासित प्रदेश | 2,42,911 | 0.02 | 150100 | 92811 |
| 10 | दिल्ली | केंद्र शासित प्रदेश | 1,67,53,235 | 1.38 | 8976410 | 7776825 |
| 11 | गोवा | राज्य | 14,57,723 | 0.12 | 740711 | 717012 |
| 12 | गुजरात | राज्य | 6,03,83,628 | 4.99 | 31482282 | 28901346 |
| 13 | हरियाणा | राज्य | 2,53,53,081 | 2.09 | 13505130 | 11847951 |
| 14 | हिमाचल प्रदेश | राज्य | 68,56,509 | 0.57 | 3473892 | 3382617 |
| 15 | जम्मू और कश्मीर | राज्य | 1,25,48,926 | 1.04 | 6665561 | 5883365 |
| 16 | झारखंड | राज्य | 3,29,66,238 | 2.72 | 16931688 | 16034550 |
| 17 | कर्नाटक | राज्य | 6,11,30,704 | 5.05 | 31057742 | 30072962 |
| 18 | केरल | राज्य | 33,387,677 | 2.76 | 16021290 | 17366387 |

| क्रमांक | केंद्र शासित प्रदेश/ राज्य का नाम | टाइप | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत (%) | पुरुष | महिलाएं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | लक्षद्वीप | केंद्र शासित प्रदेश | 64,429 | 0.01 | 33106 | 31323 |
| 20 | मध्य प्रदेश | राज्य | 72,597,565 | 6.00 | 37612920 | 34984645 |
| 21 | महाराष्ट्र | राज्य | 11,23,72,972 | 9.29 | 58361397 | 54011575 |
| 22 | मणिपुर | राज्य | 27,21,756 | 0.22 | 1369764 | 1351992 |
| 23 | मेघालय | राज्य | 29,64,007 | 0.24 | 1492668 | 1471339 |
| 24 | मिजोरम | राज्य | 10,91,014 | 0.09 | 552339 | 538675 |
| 25 | नागालैंड | राज्य | 19,80,602 | 0.16 | 1025707 | 954895 |
| 26 | उड़ीसा | राज्य | 41,947,358 | 3.47 | 21201678 | 20745680 |
| 27 | पांडिचेरी | केंद्र शासित प्रदेश | 12,44,464 | 0.10 | 610485 | 633979 |
| 28 | पंजाब | राज्य | 2,77,04,236 | 2.29 | 14634819 | 13069417 |
| 29 | राजस्थान | राज्य | 68,621,012 | 5.67 | 35620086 | 33000926 |
| 30 | सिक्किम | राज्य | 6,07,688 | 0.05 | 321661 | 286027 |
| 31 | तमिलनाडु | राज्य | 7,21,38,958 | 5.96 | 36158871 | 35980087 |
| 32 | त्रिपुरा | राज्य | 36,71,032 | 0.30 | 1871867 | 1799165 |
| 33 | उत्तराखंड | राज्य | 1,01,16,752 | 0.84 | 5154178 | 4962574 |
| 34 | उत्तर प्रदेश | राज्य | 199,581,477 | 16.49 | 104596415 | 94985062 |
| 35 | पश्चिम बंगाल | राज्य | 9,13,47,736 | 7.55 | 46927389 | 44420347 |
| | *कुल* | | *21,01,93,422 ,1* | *100* | *623724248* | *586469174* |

स्रोत : विकिपिडिया

**३. भारत के पर्वतों के बारे में आप क्या जानते हैं?**

यह पाठ इंदिरा गजेवा द्वारा रचित (२००६: ७४-७९) एक अभ्यास पर आधारित है ।
सब गतिविधियाँ और अभ्यास जोड़ी बनाकर किए जाते हैं ।

इस पाठ में भौगोलिक टेक्स्ट द्वारा कुछ भाषा के अभ्यास किए जाते हैं (१-७)
गतिविधि ८ करवाने से पहले शिक्षिका कक्षा में बातचीत करवाएगी। यदि कक्षा में इन्टरनेट उपलब्ध है तो शिक्षार्थयों को समूह बनाकर प्रश्नों के उत्तर की तलाश करने होंगे । नहीं तो घर के काम के रूप में यह करवाया जा सकता है ।

भारत की भू-आकृति बहुत विभिन्न है। उसके क्षेत्र में बहुत ऊँचे पर्वत और निचले मैदान भी स्थित हैं। भारत अपनी अद्भुत पहाड़ी भू-आकृति के लिए मशहूर है ।
हिमालय यह तो विश्व की सब से ऊँची पर्वत-माला हैं। वे भारत, नेपाल, चीन, पाकिस्तान, भूटान के क्षेत्र में स्थित हैं। इनकी लम्बाई २४०० किलोमीटर से अधिक है, चौड़ाई ३५० किलोमीटर तक है। औसत ऊँचाई क़रीब ६००० मीटर है, सब से बड़ी ऊँचाई ८८४८ मीटर है – यह तौ चोमोलंगमा (एवरेस्ट) है। कई पहड़ ८००० मीटर से ऊँचे हैं जैसे कंचनजंघा, धौलागिरी, नंगा पर्वत ।
हिमालय के अतिरिक्त भारत में ६ बड़ी पर्वत-मालाएँ मिलती हैं – पूर्वांचल (पूर्व पठार), अरावली, विंध्य, सतपुड़ा, सह्याद्री (पश्चिम घाट), पूर्वी घाट ।
भारत के उत्तरी क्षेत्र में हिमालय पर्वत-श्रेणियाँ और घाटियाँ हैं । यहाँ कम ऊँचाईवाली शिवालिक पर्वत-माला (९००-१२०० मीटर), पीर-पँजाल पर्वत-श्रेणी (३०००-३६०० मीटर), कश्मीर घाटी (१५००-१८०० मीटर), ज़ास्कार पर्वत-श्रेणी (६१०० मीटर तक), सिंधु नदी की घाटी के ऊपरी क्षेत्र में, लद्दाख, चोटी नंदादेवी (७८१७ मीटर) और काराकोरम पर्वत-श्रेणी हैं । काराकोरम की बहुत चोटियाँ ७६०० मीटर से ऊँची हैं, उनमें से के-२ (जिसके दूसरे नाम छोगोरी, गॉडविन आस्टिन हैं) की ऊँचाई ८६११ मीटर है । पूर्व में काराकोरम पर्वत-माला तिब्बत का पठार बन जाती है।
भारत में पूर्वी हिमालय की विशेषता बड़ी ऊँचाई है, मगर इन पर्वतों की रचना ज़्यादा अद्भुत नहीं। उत्तर में छोटे हिमालय (३००० मीटर तक) पर्वत-श्रेणियाँ मौजूद हैं। ऊँचाई की अगली सीढ़ी विशाल हिमालय बनता है, जिसमें चोमोलंगमा (एवेरेस्ट, ८८४८ मीटर) नेपाल में और कंचनजंघा (८५९८ मीटर) – भारत का सब से ऊँचा शिखर हैं । पूर्व में भारत और बर्मा के बीच के पहाड़ भिन्न भिन्न नामों से ख्यात हैं, जिनमें पटकई बुम, बरेल पर्वत श्रेणी और शिलांग और लूशाई के पठार शामिल हैं ।
भारत के केंद्र में एक पठार है, जिस को कभी-कभी राजपुताना टीला कहते हैं। उसके मध्य में मालवा का पठार, जो लावे से बना है। पश्चिम में अरावली पर्वत-श्रेणी है। ये पहाड़ बहुत प्राचीन और ऊँचे पर्वतों के अवशेष हैं, और अभी इनकी ऊँचाई १०५२ मीटर से अधिक नहीं है । दक्षिण में विंध्यांचल श्रेणी स्थित है, जिसकी औसत ऊँचाई ७००-८०० मीटर है। ये पर्वत क़रीब सारे हिंदुस्तान प्रायद्वीप में पश्चिम से पूर्व तक फैले हैं।
विंध्य से दक्षिण में शुष्क और अनुपजाऊ दक्कन का पठार मौजूद है। उसका रूप त्रिभुज का है । उस की ऊँचाई ३०० से ९०० मीटर तक है, कई पर्वत-मालाओं की ऊँचाई १२०० मीटर तक है। दक्कन की भू-आकृति लाजवाब है

। पठार के उत्तर-पश्चिम में लावा पठार स्थित है, जिसका क्षेत्रफाल ५२० वर्ग किलोमीटर है । उस में कई संयुक्त पठार, जैसे तेलंगाना (जो हैदराबाद के पास स्थित है) और करनाटक (जो दक्षिण-पश्चिम में स्थित है) शामिल हैं। पर्वत सत्पुरा, महादेव और मैकल पर्वत-मालाएँ और उत्तर-पूर्व में छोटा नागपुर का पठार (१२२५ मीटर) वहाँ मौजूद हैं ।

पठार की दो तरफ़ पश्चिम घाट और पूर्व घाट स्थित हैं। पश्चिम घाट (सह्याद्री) ज़्यादा ऊँचा है और उसका क्षेत्रफल भी ज़्यादा बड़ा है। यह तो सँकरे तटीय निम्न मैदान (जिसका नाम मलाबार है) के पास विशाल दीवार है । पूर्व घाट ज़्यादा नीचा है, मगर कई चोटियों की ऊँचाई १६०० मीटर से अधिक है। पश्चिम घाट और अरब सागर, पूर्व घाट और बंगाल की खाड़ी के बीच तटीय मैदान मौजूद है । भारत का दक्षिणी छोर नीलगिरि पर्वत-माला (२६७० मीटर तक) से, जो पूर्व घाट और पश्चिम घाट सम्मिलित है, और कर्दमन पर्वतों (सब से ऊँची चोटी २६९५ मीटर की है) से बना है । इलायची की पहाड़ियाँ क़रीब कन्यकुमारी केप (हिंदूस्तान का दक्षिणतम छोर) तक फैली हैं । दक्षिण-पूर्व में जावादी, शेवारोय और पालनी पर्वत फैले हैं ।

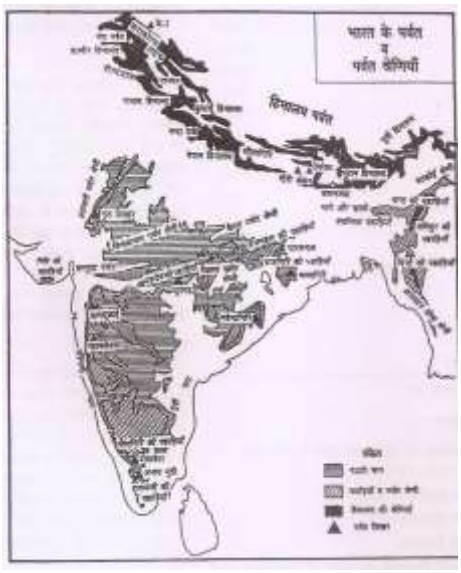


स्रोत: http://rashidfaridi.files.wordpress.com/2014/04/map2.jpg?w=239&h=300

**अभ्यास**

**१. सवालों के जवाब दें :**

१) भारत का सबसे ऊँचा पर्वत कौनसा है?

२) निम्नलिखित पर्वत-मालाओं में से कौन सी ज़्यादा ऊँची है – पूर्वी घाट या पश्चिमी घाट?

३) हिंदुस्तान के दक्षिणतम छोर तक कौन से पर्वत फैले हैं?
४) भारत की ७ बड़ी पर्वत-मालाएँ बताइए ।
५) हिमालय किन देशों में स्थित हैं ?

**२. हर वाक्य में एक ग़लती है, उसे ढूँढ़ें :**

१) हिमालय के अतिरिक्त भारत में ६ बड़ी पर्वत-मालाएँ हैं – पात्काई (पूर्व पठार), अरावली, विंध्य, सत्पुरा, सह्याद्री (पूर्वी घाट), पश्चिमी घाट।
२) दक्कन में कई संयुक्त पठार, जैसे तेलंगाना (वह दिल्ली के पास स्थित है) और करनाटक (इससे दक्षिण-पश्चिम में स्थित है) अंतर्गत हैं।
३) भारत का उत्तरी क्षेत्र में हिमालय पर्वत-श्रेणियाँ और घाटियाँ हैं।
४) विंध्य पर्वत क़रीब सारे हिंदुस्तान प्रायद्वीप को पश्चिम से पूर्व तक फैले हैं।
५) विंध्यांचल के दक्षिण में शुष्क और उपजाऊ पठार मौजूद है।

**३. निम्नलिखित वाक्यों को सही विकल्पों से मिलाएँ ।**

| | |
|---|---|
| १) राजपूताना टीला के दक्षिण में विंध्य पर्वत स्थित हैं , | क) जिसकी ऊँचाई ८६११ मीटर है। |
| २) क़राकोरम की बहुत चोटियाँ ७६०० मीटर से ऊँची हैं ,उनमें से चोगोरी , | ख) जिनकी सब से बड़ी ऊँचाई ८८४८ मीटर है। |
| ३) दक्कन के पठार के अंदर उत्तर-पश्चिम में लावा पठार स्थित है , | ग) जिनकी औसत ऊँचाई ७००-८०० मीटर है। |
| ४) नीलगिरि के सिवा भारत का दक्षिणी छोर कर्दमन पर्वतों से निर्मित है , | घ) जिसका क्षेत्रफाल ५२० वर्ग किलोमीटर है। |
| ५) हिमालय यह तो विश्व की सब से ऊँची पर्वत-मालाएँ हैं | ङ) जिनकी सब से ऊँची चोटी २६९५ मीटर की है। |

**४. पढ़िए कौन-कौन सी बातें सही हैं, वहाँ ✓ लगाइए :**
१) जावादी, शेवारोय और पालनी पर्वत उत्तर भारत में फैले हैं।
२) के-२ (जिसके दूसरे नाम छोगोरी, गॉडविन आस्टिन हैं) की ऊँचाई ८६११ मीटर है।
३) दक्कन के पठार की कई पर्वत-मालाओं की ऊँचाई १२०० मीटर तक है।
४) नीलगिरि पर्वत में पूर्व घाट और पश्चिम घाट सम्मिलित हैं।
५) चोमोलंगमा यह तो भारत का सबसे ऊँचा पर्वत है।

**५. हर शब्द को उसके समानार्थक शब्द से मिलाएँ :**

| | |
|---|---|
| १ .के अतिरिक्त | क (चोटी |
| २ .पर्वत | ख (लाइन |
| ३ .शिखर | ग (के सिवा |
| ४ .मैदान | घ (सम्मिलित |
| ५ .माला | ड (पहाड़ |
| ६ .संयुक्त | च (क्षेत्र |

**६. नीचे लिखे वाक्यों में खाली जगहों को नीचे दिए शब्दों से भरें:**

मशहूर, चौड़ाई, भू-आकृति, स्थित, ऊँचे, पर्वत-मालाएँ, हिमालय, निम्न मैदान, औसत, लम्बाई

भारत का ..... बहुत विभिन्न है। उसके क्षेत्र में सबसे ऊँचे पर्वत और ..... भी स्थित हैं। भारत अपनी अद्भुत पहाड़ी भू-आकृति के लिए ..... है।
..... यह तो विश्व की सब से ऊँची पर्वत-मालाएँ हैं। वे भारत, नेपाल, चीन, पाकिस्तान, भूटान के क्षेत्र में ..... हैं। इनकी ..... २४०० किलोमीटर से अधिक है, ..... ३५० किलोमीटर तक है। ..... ऊँचाई क़रीब ६००० मीटर है, सब से ज़्यादा ऊँचाई ८८४८ मीटर है – यह तौ चोमोलंगमा (एवेरेस्ट) है। कई पहड़ ८००० से ..... हैं।
हिमालय के अतिरिक्त भारत में ६ बड़ी ..... हैं – पात्काई (पूर्व पठार), अरावली, विंध्य, सात्पूरा, सह्याद्री (पश्चिमी घाट), पूर्वी घाट।

**७. अनुवाद कीजिए :**

१) One of India's main features is the complex topography of its territory, with mountains, highlands, valleys and planes.
२) Himalaya is not a single mountain, but many parallel mountain chains having deep valleys in between.
३) Himalaya forms a natural border in northern India.
४) Himalaya and Karakorum – highest mountains in he world – degrade towards the Indo-gangetic plane with three giant steps.

**८. अपने आप सवालों के जवाब खोजिए :**
(उदाहरण के लिए यहाँ देखिये :

http://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%AF
http://www.bbc.co.uk/hindi/science/story/2003/10/031028_everest_greatarc.shtml)

१) भारत की ५ सब से ऊँची चोटियों में से कितनी और कौन सी हिमालय पर्वत-माला में मौजूद हैं?

२) हिमालय कैसे बने थे?

३) हिमालय की औसत ऊँचाई क्या है?

४) क्या हिमालय की ऊंचाई हर वर्ष बढ़ रही है?

४. **ऐल्प्स पर्वत**

**इटली का भव्य एल्प्स पर्वत**- ट्रिन्टिनो-एल्टो एडिगे की विलनोएस घाटी में बसा छोटा सा गांव सैन पिट्रो इन गार्डना दक्षिणी टोरोल एल्प्स भी कहलाता है। यह विस्तीर्ण पर्वत-श्रेणी दक्षिण में आस्ट्रिन की सीमा से इटली के बेल्ज़ानो व ट्रिन्टो प्रान्तों तक फैली है। इतालवी एल्प्स पर्वत शृंखला उत्तरी सीमा से देश को फ्रांस, स्विट्ज़रलैण्ड, आस्ट्रिया और स्लोवेनिया से पृथक करती है।

स्रोत : *ड्रीमलैंड स्कूल एटलस* , ड्रीमलैंड पब्लिकेशन , नई दिल्ली १९९९

**निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके यह वर्ग-पहेली भरें ।**

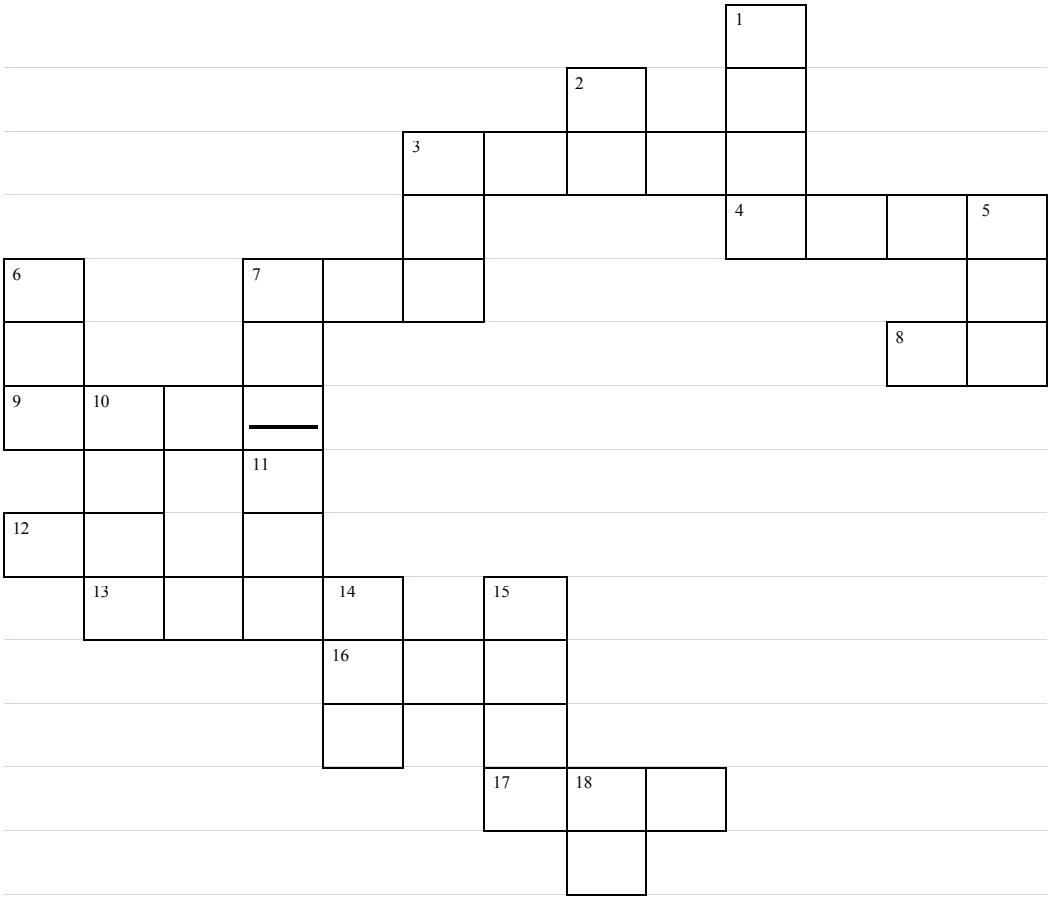


घाटी - कहलाना - त्रिकोणीय - नहलाना – नाविक – पतन – पर्वत श्रेणी - पृथक - प्रांत - फैलना - भव्य - लभन - विस्तीर्ण– शृंखला – सीमा - स्वर्णकाल – हनुमान

***बाएं से दाएं***

.3भूगोल शास्त्र में ,पहाड़ों की श्रृंखला जो दूर तक समानांतर चली गई हो। ढालू टीला या पहाड़ी

.4एकाएक। अचानक ही

.7समाज में विशेषतः समाज के उच्च वर्गों द्वारा किये जाने वाले बनाव-श्रृंगार धारण की जानेवाली वेश-भूषा आदि का इस रूप में होनेवाला प्रयत्न जिसे जन-साधारण भी अपनाने में अग्रसर हो रहा हो। ढंग। रीति।

.8दो पर्वत-श्रेणियों के बीच का तंग या सकरा मार्ग। पर्वतीय प्रदेशों के बीच में पड़नेवाला मैदान।

.9कहने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी के द्वारा किसी के पास संदेशा भेजना।

.11एक दूसरी में पिरोई हुई बहुत सी कड़ियों का समूह। कतार। श्रेणी। जंज़ीर

.12किसी प्रदेश या स्थान के चारों ओर की विस्तार की अंतिम रेखा या स्थान। हद। सरहद। आंचल । किनारा

.16फैला या फैलाया हुआ हो। विस्तृत । व्यापक सूत्रवाला। बहुत चौड़ा। बहुत बड़ा। विपुल।

.17प्राप्त करना। हासिल करना। पाना।

***ऊपर से नीचे***

.1त्रिकोण जैसा ,तिकोना ,त्रिकोणाकार

.2भारत में ,अँगरेजी शासन में वह शासनिक इकाई जिसमें कई प्रमंडल होते थे ,तथा जिसका प्रधान शासक राज्यपाल होता था। प्रदेश।

.3ऊपर से नीचे आने या गिरने की क्रिया या भाव। नाश । बिगड़ जाना ।

.5समिति ,पैनल ,पेनल ,कमीशन ,कमिशन ; किसी विशेष कार्य के लिए बनी हुई सभा , लोगों का औपचारिक दल या संगठन

.6अलग ,एकान्त ,भिन्न

.7किसी चीज का चारों ओर दूर तक विस्तृत प्रदेश में स्थित रहना या होना। विस्तार से युक्त होना।

.10रामायण में एक वानर जिन्होंने सीता-हरण के उपरान्त राम की पूरी सेना और सहायता की थी। रामचन्द्र के परम भक्त कहे गये हैं और देवताओं के रूप में माने जाते हैं।

.13किसी को नहाने में प्रवृत्त करना। स्नान करवाना।

.14वह जो नौका खेता हो। मल्लाह। माँझी।

.15प्राचीन यूनानी पौराणिक कथाओं) ग्रीक मिथालजी (में सत्ययुग । इस युग में भगवान के मत्स्य ,कूर्म ,वराह और नृसिंह ये चार अवतार हुए थे। इस काल में स्वर्णमय व्यवहारपात्रों की प्रचुरता थी। मनुष्य अत्यंत दीर्घाकृति एवं अतिदीर्घ आयुवाले होते थे। इस युग का प्रधान तीर्थ कुरुक्षेत्र था।

.18जो देखने में बड़ा और सुन्दर जान पड़े। शानदार। शुभ। शानदार । बहुत बढ़िया। उत्कृष्ट

## संदर्भग्रंथ सूची

1995 video entitled *"Helena Curtain: Integrating Language and Content Instruction,"* available through the NFLRC Second Language Teaching and Curriculum Center at the University of Hawai'i at Manoa.

Anderson, J. R. (1990). *Cognitive psychology and its implications* (3rd ed.). NY: W. H. Freeman.

Anderson, J. R. (1993). *Problem solving and learning. American Psychologist, 48*, 35-44.

Brinton, D., Snow, M. A., & Wesche, M. B. (1989). *Content-based second language instruction.* Boston: Heinle & Heinle Publishers.

Byrnes, H. (2000). *Languages across the curriculum—interdepartmental curriculum construction*. In M-R. Kecht & K. von Hammerstein (Eds.), *Languages across the curriculum: Interdisciplinary structures and internationalized education*. National East Asian Languages Resource Center. Columbus, OH: The Ohio State University.

Crandall, J. (1993). *Content-centered learning in the United States*. In W. Grabe, C. Ferguson, R. B. Kaplan, G. R. Tucker, & H. G. Widdowson (Eds.), *Annual Review of Applied Linguistics, 13. Issues in second language teaching and learning* (pp. 111-126). NY: Cambridge University Press.

Crandall, J., & Tucker, G. R. (1990). *Content-based instruction in second and foreign languages*. In A. Padilla, H. H. Fairchild, & C. Valadez (Eds.), *Foreign language education: Issues and strategies.* Newbury Park, CA: Sage.

Curtain, H. A., & Pesola, C. A. (1994). *Languages and children: Making the match* (2nd ed.). NY: Longman.

Csikszentmihalyi, M. (1997). *Finding flow: The psychology of engagement with everyday life.* New York: Harper Collins.

Cummins, J. (1981). *The role of primary language development in promoting educational success for language minority students*. In *Schooling and language minority students: A theoretical framework* (pp. 3-49). Los Angeles: California State University, Evaluation, Dissemination, and Assessment Center.

Elley, W. (1991). Acquiring literacy in a second language: The effect of book-based programs. *Language Learning, 41,* 375-411.

Eskey, D. E. (1997). *Syllabus design in content-based instruction*. In M. A. Snow & D. A. Brinton (Eds.), *The content-based classroom: Perspectives on integrating language and* content (pp. 132-141). White Plains, NY: Longman.

Газиева Индира Адильевна, Гришина Александра Дмитриевна, Кононова Татьяна Владимировна, Сеничкина Алена Владимировна. 2006. *Откройте для себя Индию. География. Учебное пособие по лингвострановедению*. Москва.

Genesee, F. (1994). *Integrating language and content: Lessons from immersion*. Educational Practice Report 11. National Center for Research on Cultural Diversity and Second Language Learning.

Grabe, W., & Stoller, F. L. (1997). *Content-based instruction: Research foundations*. In M. A. Snow, & D. M. Brinton (Eds.), *The content-based classroom: Perspectives on integrating language and content* (pp. 5-21). NY: Longman.

Krashen, S. (1982). *Principles and practices in second language acquisition.* NY: Pergamon Press.

Krashen, S. (1985). *The input hypothesis: Issues and implications.* NY: Longman.

Lantolf, J. (1994). (Ed.) *Sociocultural theory and second language learning.* [Special issue of *The Modern Language Journal, 78*(4).]



Formatted: English (U.S.)

Lantolf, J. & Appel, G. (Eds.) *Vygotskian approaches to second language research.* Norwood, NJ: Ablex.
Lightbown, P. M. & Spada, N. (1993). *How languages are learned.* NY: Oxford University Press.
Lyster, R. (1987). Speaking immersion. *The Canadian Modern Language Review, 43*(4), 701-717.
Met, M. (1991). Learning language through content: Learning content through language. *Foreign Language Annals, 24*(4), 281-295.
Met. M. (1999, January). *Content-based instruction: Defining terms, making decisions.* NFLC Reports. Washington, DC: The National Foreign Language Center.
O'Malley, J. M., & Chamot, A. U. (1990). *Learning strategies in second language acquisition*. NY: Cambridge University Press.
Singer, M. (1990). *Psychology of language: An introduction to sentence and discourse processing.* Hillsdale, NJ: Erlbaum.
Slavin, R. E. (1995). *Cooperative learning* (2nd ed.). Boston: Allyn and Bacon.
Stoller, F. (2002, March). *Content-Based Instruction: A Shell for Language Teaching or a Framework for Strategic Language and Content Learning?* Keynote presented at the annual meeting of Teachers of English to Speakers of Other Languages, Salt Lake City. (full transcript available at the CoBaLTT website).
Swain, M. (1985). *Communicative competence: Some roles of comprehensible input and comprehensible output in its development*. In S. Gass & C. Madden (Eds.), *Input in second language acquisition* (pp. 235-253). Rowley, MA: Newbury House.
Swain, M. & Johnson, R.K. (1997). *Immersion education: A category within bilingual education*. In R. K. Johnson & M. Swain (Eds.) *Immersion Education: International Perspectives* (pp. 1-16). NY: Cambridge University Press.
Wells, G. (1994). The complementary contributions of Halliday and Vygotsky to a "language-based theory of learning." *Linguistics and Education, 6,* 41-90.
Wesche, M. B. (1993). *Discipline-based approaches to language study: Research issues and outcomes.* In M. Krueger & F. Ryan (Eds.) *Language and content: Discipline- and content-based approaches to language study.* Lexington, MA: D.C. Heath.

Field Code Changed

## 6. हिंदी कक्षा में कथनात्मक अध्यापन: सिद्धांत तथा उदाहरण

पढ़ने से पहले कुछ प्रश्न :

जब आप छोटे थे:
• आप कहानियों को कहाँ सुना करते थे ?
• कहानी सुनने/सुनाने का वक्त आम तौर पर क्या था?
• आपको कहानियाँ कौन सुनाया या पढ़ाया करता था?
• कहानियों के प्रति आपकी कौन सी प्रतिक्रिया थी?

अब आप बड़े हुए हैं:
• क्या आप (माँ बाप के रूप में) कहानियाँ सुनाते हैं ?
• माता पिता की भूमिका में अपनी भावनाएं क्या होते हैं?

**कहानी क्यों?**

भाषा सीखने की मूलभूत वस्तु के रूप में कथा (सैद्धांतिक आधार)

कथा संरचना आदमी के सोचने की बुनियाद है, हमारा एक कथा मस्तिष्क और एक कथा स्मृति होती है (Smorti: 5)। अनुसन्धान से पता चला कि विदेशी भाषा सीखना में कथा का उपयोग सीखने की सुविधा को बढ़ाता है ।
शिक्षार्थियों की विदेशी भाषा शिक्षा में वृद्धि के लिए और उनको विदेशी भाषा में ध्वनियों और वाक्यांशों के उच्चारण को प्रोत्साहित करने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें एक अनुकूल वातावरण मिले जिससे उन्हें मनोवैज्ञानिक प्रतिरोध का सामना करने में आसानी हो ।
सहभागी कथा अनुभव और रोल प्ले तथा अन्य रणनीतियों की सहायता से, शिक्षार्थी एक प्रतीकात्मक दुनिया में प्रवेश कर सकेंगे । इसमें वो अर्थों को खोजने के अलावा होने वाले गतिविधियों क्रियाओं के न्यूनतम समझ वाली संरचना से परिचित हो सकेंगे ।
सुनाई गई कहानियों में काल्पनिक रूप में परिचित परिस्थितियों और अनुभवों को पेश करते हैं । वे भाषा सीखने के प्राकृतिक वातावरण के पुनः अनुभव का सृजन करते हैं ।

मार्गरेट रीड मैक डोनाल्ड ने लिखा कि कहानी कहने और सुनने में जो मूल्य प्रतिभागियों के मन में बिठा दिए जाते हैं, उन में से यह भी है कि वह "हमारे साहित्यिक और कल्पनाशील कौशल की गरिमा बढाने के साथ-साथ हमारी सुनने की, बात करते करने की , कल्पना करने की, वाक्यांश रचने की और कहानियाँ बनाने की क्षमता सुधार दी जाती है "(1993: १०१) ।

कहानी कहने की कला अन्य संस्कृतियों और हमारी अपनी संस्कृति के बारे में जागरूकता बढ़ाती  है । वह हमें ख़ुद को बेहतर समझने का मौका देता है । वह हमें एक समूह का भाग होने की भावना देती है और हमारे शब्दसंग्रह को बढ़ाती है।
जैक मगीर ने रचनात्मक कहानी में लाभों को सूचीबद्ध करते हुए निम्नलिखित को महत्व दिया :

1. छात्रों को भाषा में पैटर्न पहचानने में मदद करना
2. छात्रों की रचनात्मकता की शक्ति को प्रोत्साहन देना
3. छात्रों को समस्या सुलझाने और निर्णय गतिविधियों को पेश करने की क्षमता देना
4. उद्देश्य, तर्कसंगत और व्यावहारिक अनुप्रयोगों को बनाने की क्षमता को तेज़ करना
5. छात्रों के संवाद सहयोगी और पारस्परिक व्यवहार में कौशल विकसित करना
6. छात्रों को प्रतीकों से और विभिन्न सांस्कृतिक धरोहरों की परंपराओं से परिचित कराना जिन्हें उनके आसपास के लोग मानते हैं या जिनका उनके आसपास के लोग इस्तेमाल करते हैं ।

दूसरी भाषा सीखनेवालों की मौखिक भाषा को बढ़ाने के लिए कहानी रचना और सुनना एक बहुत अच्छी रणनीति है, जिससे ज़बरदस्त लाभ मिल सकता है ।

इसमे राजी कोदेल (Esmé Raji Codell जो शिक्षक और बच्चों के साहित्य विशेषज्ञ हैं) की वेबसाइट में कहानी कहने की कला की एक बहुत अच्छी परिभाषा है । जब शिक्षार्थियों से यह समझाना है कि कहानी कहने की कला क्या है, तो वह ऐसा कहेंगी :

> अफ्रीका में एक कहावत है: हर आदमी दो मौतें मरता है। सबसे पहले, जब उसका शरीर मरता है। दूसरा, जब उसको याद करता हुआ अंतिम व्यक्ति मर जाता है। कहानियां भी मरती हैं जब अंतिम व्यक्ति जो कहानी को जानता है मर जाता है। तो तरक़ीब यह है कि न केवल कहानी को पता हो, लेकिन ~~कि~~ लोगों को कहानी याद रहे, ताकि कहानी जिंदा रहे । शारीरिक भाषा और चेहरे का भाव कहानी यादगार बनाने के, इसे जिंदा रखने के उपाय हैं । समय बीत जाने के बाद, दर्शकों को संभवत: सबसे अधिक यह याद नहीं होगा कि तुम कितने मूर्ख दिखाई दे रहे थे या ख़राब अभिनय कर रहे थे, उनको यह याद रहेगा कि कहानी कितनी मज़ेदार/ आनंदमयी थी । इसका मतलब यह है कि तुमने एक कथाकार के रूप में अच्छा काम किया है।

भाषा के शिक्षक के हाथों में कहानी एक विशिष्ट शक्तिशाली भाषाई और मनोवैज्ञानिक तकनीक है। हालांकि कहानी को सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त किए जाने की जरूरत है, फिर भी उसका उपयोग किसी भी उम्र के लोगों के साथ और किसी भी संस्कृति के लोगों के साथ किया जा सकता है ।
कहानी सुनाने की शक्ति इस तथ्य में है कि शिक्षक कक्षा से सीधे संपर्क में होता है ।

**कहानी की गतिविधियाँ**

**१. बहु-आवाज कहानी सुनाना**

यह तकनीक मुझे वास्तव में पसंद है । यह है श्रोताओं की मदद से एक कहानी कहना । यह कैसे होता है मैं बताती हूँ :
• मैं कक्षा के समूह के सामने बैठती हूँ
दो शिक्षार्थियों से यह कहती हूँ कि वे मेरे दोनों तरफ़ थोड़ा पीछे हटकर बैठ जाएँ । हम तीनों कक्षा के समूह की ओर देख रहे होंगे ।

फिर मैं सुनाने लगती हूँ :

इस कहानी में तीन लोग हैं, जो भारत के एक गांव में रहते थे । वह छोटा सा गांव था और वहां एक बड़ी नदी बहती थी ... बस मुझे यही याद नहीं कैसी थी और किधर बहती थी ... [सहायकों में से एक की ओर मुड़कर] तुमको मुझ से एक बेहतर स्मृति है? क्या तुम इसका वर्णन कर सकोगे/सकोगी ?
• (दोनों सहायक गांव में नदी के बहने की जगह के बारे में बताने के लिए अपने सुझाव देते हैं )
• फिर मैं कहानी में आगे बढ़ जाती हूँ । पांच या छह बार मैं रुककर सहायकों से कहती हूँ कि वे अपने विवरणों और शब्दों से कहानी को और खुबसूरत बनाए । मैं इस बात पर बहुत ध्यान देती हूँ कि लगभग अंत तक कथावस्तु अपने हाथों में रखूँ । इसके बाद सभी छात्रों को कहानी का अंत लिखने के लिए कहती हूँ, जो वे अपनी कल्पना में देखते हैं ।

• वे एक दूसरे के लिए अपनी कहानियों के अंत पढ़ देते हैं । अंत में मैं भी उनके लिए अपनी समाप्ति पढ़ देती हूँ । इस तरीके से कही कहानी पूरे समूह की होगी, लेकिन ऐसा नहीं हो पाता अगर मैं ही अपनी कहानी सुनाती ।

**२. सैंडविच कहानी रचनात्मक लेखन तकनीक**

ऊपर तकनीक के एक रचनात्मक लेखन संस्करण की पेशकश दिखाने के लिए मैं पापुआ न्यू गिनी से एक अनुकूलित कहानी का उपयोग करनेवाली हूँ (पूरी कहानी देखें Slone 2001: 103) ।

उदाहरण:
• कहानी के पहले लाइनें लिखवा दें :/ कहानी से पहले लाइनों का श्रुतिलेख दें :
*क्या आप जानते हैं क्यों पापुआ न्यू गिनी में जब कुत्ते मिलते हैं तो वे हमेशा एक दूसरे की पूंछ सूंघ लेते? खैर, आपको जल्द ही पता चल जाएगा। एक था द्वीप* जिसके *सब कुत्ते एक महफ़िल के लिए पहाड़ी की चोटी पर आए थे ।*
• शिक्षार्थियों से जो अलग-अलग कुत्ते महफ़िल में आए थे, उनका वर्णन करवाएं । छात्रों को कुत्ते के बारे में लिखने के लिए समय दें । इसके बाद फिर से उन से जो आप कहेंगे लिखवा दें , और अगला वाक्य को बताएँ :

*महफ़िल की जगह पहाड़ी की चोटी पर एक विशाल भवन था।*
• अभी उन्हें जिस इमारत की कल्पना वे कर रहे हैं, उसका वर्णन करवा दें । उन्हें अपने विवरण लिखने के लिए थोडा समय दें । इसके बाद फिर से कहानी के अगले भाग को लिखवा दें :
*कुत्तों के आने से पहले वह जगह बहुत, बहुत ही शांत होती थी । अभी तो ...*
• १००० से अधिक कुत्ते चारों ओर घूम रहए थे। छात्रों से पूछें कि अभी वह जगह कैसी लग रही होगी ? उसका ~~का~~ वर्णन लिखवाने के लिए थोडा समय दें । इसके बाद कहानी लिखवाएँ :
*इससे पहले कि वे महान शाला में प्रेवश करें सभी कुत्तों को एक विशेष पूंछ-घर में अपनी पूंछ लट*कानी थी ।'
• कुत्ते क्यों अपनी पूंछ लेकर महान शाला में प्रेवश नहीं कर सकते ? शिक्षार्थियों को स्पष्टीकरण लिखने के लिए समय दें । फिर कहानी जारी करें ।
*महफ़िल के दौरान कुत्तों को* लगने *लगा कि कुछ जल रहा है । वे महाशाला के* दरवाज़े तक तेज़ी *से दौड़ने लगे और उन्होंने देखा कि पूंछ-घर से धुआं लहरा रहा है ।*
• अभी छात्रों से पूछो कि कहानी कैसे ख़त्म हुई ? उनसे अपनी मर्ज़ी कहानी का अंत लिखवा लें ।
• तीन तीन के समूह बनाएं । सहपाठियों को अपने पाठ को पढ़ने को कहें । दोनों एक दूसरे के लिखे हुए हिस्से और अपने ~~से~~ लिखे हुए हिस्से पढ़ दें ।
पापुआ न्यू गिनी की कहानी का अंत यह है कि कुत्तों ने पूंछघर में पहुंचकर धुएं में किसी की भी पूंछ ~~को मिलकर~~ पकड़ ली । उस दिन से सब कुत्ते अपनी पूंछ को खोजते रहते हैं, जो महान महफ़िल के दिन पर खो गई !

मेरे अनुसार यह सैंडविच कहानी रचनात्मक लेखन तकनीक निम्नलिखित कारणों से उत्कृष्ट है:
• अंतिम कहानी का आधा हिस्सा पूरी तरह से सही हिंदी में है, यह है शिक्षक द्वारा लिखवाया हुआ हिस्सा
• आधी कहानी छात्रों का खुद का कलात्मक लेख है ।
• मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से , छात्र शिक्षक के हिस्से को अपनाते हैं क्यों कि यह अपना लगता है अपने ही रचनात्मक सहयोग की वजह से ।
• यह शिक्षार्थियों के भाषाई आत्मविश्वास को बढ़ा देता है ।

**३. दो कथाएँ, एक कहानी**

अपने जीवन से दो घटनाओं के बारे में सोचें जो आप क्लास को बताने के लिए तैयार हैं । मानसिक रूप से इनको
संक्षिप्त उपाख्यानों के रूप में बताएं । इसके अलावा, कुछ है जो आप को हुआ हो सकता था लेकिन जो नहीं हुआ , इसकी कल्पना करें । काल्पनिक कहानी दो वास्तविक जीवन की कहानियों की तरह विश्वास से बताने के लिए तैयार हो जाएँ ।
• कक्षा में पहुंचकर छात्रों को बताएं कि अभी मैं तीन अलग-अलग बातें तुमको सुनाउंगी जो कुछ समय पहले मेरे साथ हुई हैं ।

• सुनाने के बाद यह समझा दें कि इन उपाख्यानों में से दो वास्तविक जीवन की घटनाएँ थे, जबकि एक काल्पनिक थी।
• पाँच पाँच के समूह बनाएं । छात्रों को तय करना है कि 'काल्पनिक' कहानी कौनसी है । उन्हें अपनी राय का कारण देना होना और समझाना होगा कि वे ऐसा क्यों सोचते हैं । विचार विमर्श के लिए कुछ समय दे दें ।
• हर समूह पूरी कक्षा को अपने विचार बताएगा ।
• पीयर वोट या सहपाठियों के मत लेकर बनी हुई कहानी का चुनाव करवा दें ।
शिक्षार्थियों को झूठ का पता लगाने में बहुत मज़ा अंत है, ख़ास तौर पर जब शिक्षक 'झूठा' है !

---

अपनी कहानी तकनीक क्या होती है ?

ध्यान दें!
ध्यान हमारे छात्रों के ऊपर है ! हमारी किताब या हमारी कहानी पर , नहीं।

पूरे सबक के दौरान, जब हम सिखा रहे हैं, छात्रों के साथ लगातार (eye contact) आँख से संपर्क बनाकर रखना ताकि यह स्पष्ट हो कि वे 100 प्रतिशत समझ रहे हैं ।

लेकिन मेरे पास एक पाठ्यपुस्तक है ...

हालाँकि मैं तो यहाँ पाठ्य पुस्तकों के बिना खड़ी हुई हूँ लेकिन उन लोगों के पक्ष में कुछ कहना चाहती हूँ जिनके पास पाठ्यपुस्तकें हैं ।

कई शिक्षक सोचते हैं कि पाठ्यपुस्तकों में जो कुछ है , वही पढ़ाना पड़ेगा । मैं जानती हूँ कि शिक्षकों को एक पाठ्यक्रम के अनुसार चलना पड़ता है जो केन्द्रीय संस्थाओं द्वारा दिया जाता है । लेकिन साथ ही यह बात भी है कि उन पुस्तकों में हर छोटी बात तो नहीं शामिल हो सकती है ।
पाठ्यपुस्तकें तो इसीलिए बनाई जाती हैं ताकि आप उन्हें खरीदते रहें । लेकिन दुनिया में महत्वपूर्ण सांस्कृतिक बदलाव होते रहते हैं, जो सांस्कृतिक मानदंडों को बदलते हैं (उदाहरण के लिए, प्रतिबंध क्यूबा के साथ समाप्त) ।
नए संस्करण छपने से पहले भाषा बदल दी जाती है। मान लीजिये, जब मैं अपना काम शुरू कर रही थी तो प्रौद्योगिकी खंड शब्दसूची में "फ्लॉपी डिस्क" था।
जब शिक्षक एक पाठ्यपुस्तक से बंधे हुए हैं तो वे शिक्षार्थियों को शिक्षण देना बंद करते हैं और धकेलना शुरू करते हैं। हम प्रति यूनिट में उन पर ४५ नए शब्दों को डालते हैं, हम उन पर तीन चार अलग व्याकरणिक अवधारणाएँ डाल देते हैं, और हम अपने छात्रों पर पुरानी सांस्कृतिक संदर्भ डाल देते हैं । वे सब नहीं ले जा सकते हैं । और हमे यह मालूम होता है । तो फिर हम रटना करने के लिए उन पर "अध्ययन कौशल" धकेलते हैं और उनसे कहते हैं कि परीक्षा/प्रश्नोत्तरी से पहली दो रातों को मेहनत करें। हम प्रार्थना करते हैं कि यह उनके दिमाग़ में चिपक जाए ।

पाठ्यपुस्तकें उपकरण हैं, न कि जीवन की एक योजना !
कहानी की रचना और कथनात्मक गतिविधियों का मूल्यांकन कैसे हो सकता है ?

शिक्षार्थियों का ध्यान कहानी कहने का महत्व यांत्रिकी पर केंद्रित किया जाएगा :

- जोर से, विश्वासभरी आवाज़ में बोलें ताकि दर्शक स्पष्ट रूप से सुन सकें
- दर्शकों के साथ आँख से संपर्क बनाएँ
- रवानी से बोलें
- अवलंब सामग्री, भावनाओं, और कार्यों के माध्यम से रंगमंच की कहानी में शामिल हो जाना ।

गतिविधि से पहले मै मैं हर शिक्षार्थी समूह एक विवरणपट देती हूँ ताकि वे देख सकें कि उनका मूल्यांकन कैसे किया जाएगा। मैं प्रत्येक श्रेणी के लिए 0,1, या 2 देकर छात्रों का स्कोर करती हूँ । छोटे-नाटक के अंकपत्र का एक उदाहरण इस प्रकार है:

| नाम .....<br>.....<br>तारीख .....<br>नाटक का शीर्षक .....<br>..... | 0<br>सुधार<br>की जरूरत<br> | १<br>विकास के लिए<br>जगह है<br> | २<br>उत्कृष्ट<br>कार्य!<br> |
|---|---|---|---|
| **आवाज़**<br>क्या तुमने स्पष्ट रूप से और ज़ोर से बात की ताकि दर्शकों में हर कोई तुम्हें सुन सके ?<br>क्या तुमने अपने नोट्स की ओर नहीं बल्कि दर्शकों की ओर देखकर बात की ? | | | |
| **आँख से संपर्क**<br>बात करते समय क्या तुम दर्शकों की ओर देखते रहे ?<br>क्या दर्शक तुम्हारी आंखों को देख सकते थे ? | | | |
| **वाक्पटुता**<br>क्या तुम बहुत शब्दों पर लड़खड़ाकर बोले ?<br>क्या तुम अच्छी गति से बात करते रहे - अधिक धीरे भी नहीं और अधिक तेज़ी से भी नहीं ? | | | |
| **कार्रवाई**<br>क्या तुमने अभिव्यक्ति का उपयोग किया और कहानी में शामिल हो गए थे?<br>क्या तुमने चरित्र पर खरा उतरने के लिए अपनी आवाज बदल दी ?<br>क्या तुमने  किसी भी सहारे का उपयोग किया ? | | | |

परिवार की कहानियों के अंकपत्र का एक उदाहरण इस प्रकार है:

| नाम .....<br>.....<br>तारीख .....<br>परिवार की कथा का शीर्षक<br>.....<br>..... | 0<br>सुधार की जरूरत | १<br>विकास के लिए जगह है | २<br>उत्कृष्ट कार्य! |
|---|---|---|---|
| **आवाज़**<br>क्या तुमने स्पष्ट रूप से और ज़ोर से बात की ताकि दर्शकों में हर कोई तुम्हें सुन सके ?<br>क्या तुमने अपने नोट्स की ओर नहीं बल्कि दर्शकों की ओर देखकर बात की ? | | | |
| **आँख से संपर्क**<br>बात करते समय क्या तुम दर्शकों की ओर देखते रहे ?<br>क्या दर्शक तुम्हारी आंखों को देख सकते थे ? | | | |
| **वाक्पटुता**<br>क्या तुम बहुत शब्दों पर लड़खड़ाकर बोले ?<br>क्या तुम अच्छी गति से बात करते रहे - अधिक धीरे भी नहीं और अधिक तेज़ी से भी नहीं ? | | | |
| **कार्रवाई**<br>क्या तुमने अभिव्यक्ति का उपयोग किया और कहानी में शामिल हो गए थे?<br>क्या तुमने चरित्र पर खरा उतरने के लिए अपनी आवाज बदल दी ?<br>क्या तुमने किसी भी सहारे का उपयोग किया ? | | | |
| **इन्द्रिय**<br>तुमने क्या सुना, देखा, सूंघा, कहा और स्पर्श किया ? | | | |
| **प्रेरक सामग्री**<br>क्या तुमने अपनी कहानी बताने में मदद करने के लिए दृश्य सामग्री का उपयोग किया ? | | | |

Formatted: Italian (Italy)

कहानी कहने का आलेखी आयोजक

| पात्र | सेटिंग | शुरुआत | मुसीबत |
|---|---|---|---|
| मध्य | समाप्ति | उपाय | उपसंहार / लेखक के संदेश |

## *संदर्भग्रंथ सूची*


Codell, Esme Raji. "Storytelling!." 1999-2006 18 May 2008 http://www.planetesme.com/storytelling.html#storytellingbibliography>.

Crevola, Carmel, and Mark Vineis. 2005. *Let's Talk About It* . New York, NY: MONDO Publishing.

Ellis, Brian, and Stephanie McAndrews. "Storytelling Magic Enhancing Children S Oral Language Reading And Writing." *Fox Tales International*. 2004. Reprinted From the Illinois Reading Council Journal. 6 Apr 2008

Maguire, Jack. 1985. *Creative storytelling : choosing, inventing and sharing tales for children* . Cambridge, Mass. : Yellow Moon Press

Maguire, Jack. 1985. *Creative Storytelling*. New York: McGraw Hill Book Company.

Maurano, Margaret. "Oral Language." *Exemplary Practices that Support Early Literacy*. 2003. Bridgewater State College. 6 Apr 2008 http://www.bridgew.edu/Library/CAGS_Projects/MMAURANO/OralLanguage.htm>.

McWilliams, Barry. 1997. *The Art of Storytelling*.. 6 Apr 2008 http://www.eldrbarry.net/roos/art.htm>.

Mellon, Nancy. 1992. *The Art of Storytelling*. Rockport, MA: Element Books, Inc.

Mellon, Nancy. 2000. *Storytelling with Children*. Gloucestershire, UK: Hawthorn Press.

Pease, Allan, 1984. *Leggere il Linguaggio del corpo*. Milano: Mondadori

Read Macdonald, Margaret. 1993. *The Storytellers Start-Up Book*, August House Publishers; Little Rock

Slone, Thomas H. 2001. *One Thousand One Papua New Guinean Nights: Tales form 1972-1985*, Vol 1 Tales from 1972-1985, Masalai Press, Oakland, CA.

Smorti, Andrea. 1994 . *Il Pensiero Narrativo. Costruzione di storie e sviluppo della conoscenza sociale*. Firenze: Giunti


Formatted: English (U.S.)

Formatted: English (U.S.)

Formatted: English (U.S.)

Formatted: English (U.S.)

## 7. हिंदी कक्षा हेतु अध्यापन सामग्री का विकास:

### इकाई 1–लिखित पाठ सामग्री का प्रयोग

**भाग 1**

पढ़ने  से पहले कुछ प्रश्न :

वर्तमान में आपके द्वारा पढ़ाई जाने वाली भाषा या भाषाओं को पढ़ाने के लिए कौन सी शिक्षण सामग्री उपलब्ध हैं?
इन सामग्रियों में किस प्रकार सिखाने की गतिविधियों का इस्तेमाल किया जाता है ?
अपनी कक्षा के लिए स्वयं सामग्री बनाने से क्या फ़ायदा हो सकता है?

दूसरी भाषा सीखने पढ़ने पर किये गए अध्ययन से विश्वनीय  ढंग से पता चला कि भाषा सीखनेवाले लोग जो शिक्षक के बिना पढ़ते हैं, वे विधि, रीति, या शैली पर नहीं, विषय वस्तु या पाठ के अर्थ पर केन्द्रित होते हैं । इसका मतलब यह है कि टेक्स्ट पढ़ने वाले विद्यार्थी पाठ से जानकारी निकालने की कोशिश करते हैं, और शुरू में व्याकरण या शब्दावली पर विशेष ध्यान नहीं देते । आम तौर पर कक्षा में लिखित मूलपाठों के बारे में जो अध्यापक करते हैं वह उल्टा है : अक्सर शुरुआत में शिक्षकों को शब्दावली और पाठ की व्याकरण का एक विस्तृत अध्ययन दिया जाता है और केवल बाद में एक पाठ के रूप में पढ़ते हैं।

इस पाठ में हम लिखित टेक्स्टों का प्रयोग करने पर चर्चा करनेवाले हैं ।
प्रामाणिक सामग्रियों को तैयार करने का प्रयोग कैसे किया जाता है? यह हमारा प्रश्न होगा ।

सबसे पहले : “प्रामाणिक सामग्री ”या“ कच्ची सामग्री ”का मतलब क्या है ?
मैं कुछ सामग्री डिज़ाइन के सिद्धांत दे रही हूँ:
सामग्री के रूप में कुछ भी इस्तेमाल किया जा सकता
कोई भी टेक्स्ट पवित्र / पूजनीय (सेक्रेड) नहीं है : टेक्स्ट बदले जा सकते हैं और/या उनसे खेला जा सकता है
विषय सामान्य नहीं, विशिष्ट होना चाहिए
पहले अर्थ को देखो, बाद में फार्म (व्याकरण, शब्दावली आदि)
सामग्री का उपयोग जितना संवादात्मक (इंटरैक्टिव) हो उतना अच्छा होगा
जो विद्यार्थियों की रूचि, कल्पना, रचनात्मकता को प्रोत्साहन दे सकेगा, उस पर ध्यान केन्द्रित करना
जितना भी संभव हो, उतनी ही सामग्री जोड़ना (इन्टिग्रेट करना)
केवल टेक्स्ट ही मत बदलना, कार्य / काम भी बदलना
सब कुछ सरल हो : यह लेआउट और निर्देश - दोनों पर लागू होता है
विभिन्न प्रयोजनों के लिए ग्रंथों का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है उस के बारे में उदार और ग्रहणशील रहना

मैंने कहा कि सामग्री के रूप में कुछ भी इस्तेमाल किया जा सकता ।
भाषा सिखाने वाली सामग्री तैयार करने के लिए जिस तरह की चीज़ें का इस्तेमाल किया जा सकता है, इसकी अधूरी सूचि प्रस्तुत है:

| लिखित सामग्री | विडियो या डीवीडी | कद या कैसेट |
|---|---|---|
| व्यंजन<br>स्वास्थ्य ब्रोशर<br>नक्शे<br>थिएटर के कार्यक्रम<br>फ़िल्म समीक्षा<br>अनुदेश<br>पैकेजिंग<br>समाचार पत्र सुर्खियाँ<br>पत्रिका विज्ञापन<br>बसों, ट्रेनों, यात्रा, व्यक्तित्व परीक्षण के लिए समयसीमा<br>मेन्यू<br>क्विज़<br>कार्टून<br>टी॰वी॰ गाइड<br>कुंडली<br>पर्यटन साहित्य | फीचर फिल्में<br>दस्तावेज़<br>समाचार कार्यक्रम<br>मूक फिल्में<br>हास्यमय<br>परिस्थितियां/सिटकॉम<br>अनौपचारिक बातचीत<br>कार्यक्रम<br>टी॰वी॰ विज्ञापन<br>संगीत चलचित्र/ विडियो | पॉप सॉन्ग/ फ़िल्मी गीत<br>साक्षात्कार/इंटरव्यू<br>लोकगीत<br>ऑडियो पुस्तकें या रिकार्डेड कविता<br>कॉमेडी रिकॉर्डिंग |

जिस संस्कृति में अपनी भाषा बोली जाती है उस से" कच्ची सामग्री "की एक विस्तृत श्रृंखला इकट्ठी करना । उदाहरण के लिए एक ट्राम टिकट, पत्रिका से एक विज्ञापन, एक ट्राम टिकट - अक्सर, जो वस्तु भाषा इनपुट की तरह होनहार नहीं लगते हैं, वे अपने आप में दिलचस्प पेशकश कर रहे हैं और चर्चा और प्रतिबिंब उत्पन्न करते हैं।
आम तौर पर, पत्रिका के लेख जैसे व्यापक पाठ के टुकड़े उच्च स्तर के शिक्षार्थियों के लिए अच्छे हो सकते हैं । दूसरों के लिए यह अक्सर बेहतर है कि कम लेखन और/या ज़्यादा तस्वीरों वाली वस्तुओं की तलाश की जाए ।

किसी भी शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह जो कर रहा है उस पर कुछ हद तक नियंत्रण करे । फिर भी पूरी की पूरी पढ़ाई विद्यार्थी केंद्रित होनी चाहिए । सुनिश्चित करें कि सामग्री कक्षा के लिए उपयुक्त है । अपने काम में दिलचस्पी होनी चाहिए और उसमें लगे रहना चाहिए ।

विद्यार्थी और शिक्षक साथ सिख रहे हैं : काम करते-करते हम साथ सीखते हैं । सामग्री का उपयोग करने के लिए कोई सही तरीक़ा नहीं है । मैं आपको नहीं बता सकती हूँ कि क्या क्या करना है : आप ख़ुद अलग अलग विशिष्ट शिक्षार्थियों के लिए उनकी रूचि या क्षमता के अनुसार सामग्री का उपयोग चुन सकते हैं । बात यह नहीं है कि इसको करने का सही तरीका क्या है । इन पाठों में मैं आप के लिए विभिन्न सामग्रियों की एक निश्चित प्रदर्शनों की सूची प्रस्तुत करुँगी ताकि आपकी सोच बढ़ जाए और आपको विभिन्न संभावनाएँ दिख जाएँ । अंतिम निश्चय तो आपका होगा । सवाल यही है :
“अगर मैं कक्षा में इस एक्स का उपयोग करना चाहूंगी तो यह करने के लिए कौनसे अच्छे तरीके हैं?”
अभ्यास : विएत्नाम से लोकगीत (२ मिनट)
- गीत सुनाना
- गीत के शब्दों (जिसका मतलब निस्सन्देह किसी को नहीं मालूम) का अनुवाद हिंदी में करना

परिणाम गीत के लिए छात्रों के भावनात्मक और सौंदर्य की प्रतिक्रियाओं पर आधारित अद्भुत "अनुवाद" होगा । सामग्री के रूप में कुछ भी इस्तेमाल किया जा सकता : यह इसका मतलब है ।

पाठ के बाद कुछ प्रश्न :

**“कच्ची सामग्री ”क्या है ?**

आप जो भाषा सिखाते हैं उसमें क्या आप कुछ“ कच्ची सामग्री ”के उदाहरण दे सकेंगी, जिसका प्रयोग आप अपनी कक्षाओं में कर सकती हैं ?
उन सामग्रियों से किस प्रकार की गतिविधियाँ सुविधाजनक हैं ?
क्या आप मुझ से सहमत हैं जब मैं कहती हूँ कि सामग्री का उपयोग करने के लिए कोई सही तरीका नहीं है (इसका मतलब यह है कि भाषा शिक्षण के लिए कोई निर्दोष विधि नहीं)?

कोई निर्दोष विधि नहीं तो हमें कैसे मालूम होगा कि जिन सामग्रियों और गतिविधियों का प्रयोग हम कक्षा में करते हैं, वे उपयोगी होती हैं या नहीं ?
किस प्रकार के सबूत हमें यह बता सकते हैं ?
हमें (जो शिक्षक हैं) कौनसे सिद्धांत मार्गदर्शन देते हैं ?

**भाग 2 : पढ़ना**

पढ़ने  से पहले कुछ प्रश्न :

एक टेक्स्ट“ पढ़ने ”का क्या मतलब है?
क्या आप अच्छे पाठकों की कोई न कोई अच्छी आदत बता सकेंगी ?

एक दूसरी भाषा में पढ़ने में मातृभाषा में पढ़ने से मानसिक प्रक्रियाएँ थोड़ी अलग हैं । ज़ाहिर है, दूसरी भाषा में पढ़नेवाले पाठकों को अज्ञात शब्दों, वाक्यांशों, व्याकरण, और सांस्कृतिक प्रासंगिक जानकारी के साथ समस्याएँ मिलेंगी; और जब लिपि बिल्कुल अलग हो तो कुछ हद तक अलग-अलग पढ़ने की रणनीतियाँ नियोजित की जा सकती हैं । लेकिन पढ़ने की प्रक्रिया मौलिक तरीके से अलग नहीं ।
हालांकि, कुछ लोग निश्चित रूप से दूसरों की तुलना में बेहतर पाठक होते हैं। शोध से पता चला है कि वे लोग जो कुशलता से पढ़ते हैं, प्रभावी ढंग से, ख़ुशी के साथ, वे पहली भाषा से आम तौर पर दूसरी भाषा में इन कौशल का स्थानांतरण करते हैं ।

पढ़ना एक सक्रीय, रचनात्मक, अर्थ बनानेवाली प्रक्रिया है ।  हरेक पाठक एक पाठ से एक अर्थ निर्माण कर सकता है, क्योंकि "एक पाठ का अर्थ क्या है?" इसका जवाब हरेक पाठक के लिए अलग हो सकता है ।
पाठक अर्थ का निर्माण न केवल पाठ में दृश्य सुराग (शब्दों और पृष्ठ के प्रारूप) पर आधारित करते हैं बल्कि (पाठक अर्थ का निर्माण) ग़ैर-दृश्य जानकारी पर आधारित करते हैं, जैसे दुनिया के बारे में पहले से अपने दिमाग़ में स्थित पूरा ज्ञान, गतिविधि जैसे पढ़ने के साथ अपने अनुभव के आधार पर, और, विशेष रूप से, जो विद्या वे विभिन्न प्रकार के लेखन को पढ़ने के बारे में उनको पता चला । पाठक इस तरह की ग़ैर-दृश्य सूचना के लिए टेक्स्ट से लेते हैं, जो कहीं अधिक पेज पर वास्तविक शब्दों से अधिक शक्तिशाली है।

उदाहरण के लिए, जब हिंदिभाषी लोग यह  पट-विज्ञापन पढ़ते हैं :

रानी
केतकी  की
की  कहानी

तो उनका दिमाग “अरे, मैं यह वाक्य जानता हूँ” सोचकर पुर्वानुमान करता है, पहले से बतलाता है कि यह “रानी केतकी की कहानी” है । केवल बाद में देख पाएगा कि इस में ग़लती है, क्योंकि “की” दो बार लिखा है । हो सकता है कि हिंदी सीखनेवाले लोग यह ग़लती तुरंत देखेंगे क्योंकि पढ़ने में कठिनाई होने के कारण उनको ठीक से हर शब्द पढ़ना पढ़ेगा । हमारा मस्तिष्क टेक्स्ट और पाठ के साथ बातचीत करता है, परस्पर क्रिया करता है । यही एक अच्छा पाठक करता है ।
क्या हो रहा है इसका मतलब पाने के लिए मस्तिष्क सक्रिय रूप से काम करता है । पाठ में कुछ जोड़ना । क्या कहा जा रहा है यह पता लगाने के लिए । यही तो भाषा के साथ किसी भी परस्पर क्रिया होता है ।

Formatted: Font: Complex Script Font: Calib

Formatted: (Complex) Hindi

पढ़ना पेज और आंख के बीच नहीं होता है, बल्कि दिमाग के अंदर होता है ।

**पढ़ने के अनुभव के तीन आयाम**

1. अर्थ

मैं कह चुकी हूँ कि दूसरी भाषा सीखने-पढ़ने पर किये गए अध्ययन से विश्वासोत्पादक ढंग से पता चला कि भाषा सीखनेवाले लोग जो शिक्षक के बिना पढ़ते हैं, वे विधि, रीति, या शैली पर नहीं, विषय वस्तु या पाठ के अर्थ पर केन्द्रित होते हैं । इसका मतलब यह है कि टेक्स्ट पढ़ते विद्यार्थी पाठ से जानकारी निकालने की कोशिश करते हैं, और शुरू में व्याकरण या शब्दावली पर विशेष ध्यान नहीं देते । आम तौर पर तो कक्षा में लिखित मूलपाठों के बारे में जो अध्यापक करते हैं वह उल्टा है : अक्सर शुरुआत में शिक्षकों को शब्दावली और पाठ की व्याकरण का एक विस्तृत अध्ययन दिया जाता है और केवल बाद में उसे एक पाठ के रूप में पढ़ते हैं। भाषा ख़ुद के अलावा किसी अन्य चीज़ के बारे में होनी चाहिए। हमें चीनी, इतालवी, उर्दू या हिंदी इसीलिए सीखनी चाहिए ताकि दुनिया के बारे में इन भाषाओं में लिखित ग्रंथों से कुछ पता चल सके ।
इसका नतीजा यह है कि हर टेक्स्ट को पढ़ने में हम अर्थ से सम्बंधित गतिविधियों से शुरू करते हैं । अनुभव से पता चला है कि यह दृष्टिकोण सीखने में और प्रफुल्लित, अधिक सफल सबक होते हैं । इसीलिए, शब्दावली का पूर्व शिक्षण न्यूनतम होना चाहिए : टेक्स्ट समझने के लिए सिर्फ़ जो शब्द आवश्यक होते हैं वे पहले से सिखा दिए जाने चाहिए । शिक्षार्थियों को जो शब्द और वाक्यांश एक पाठ में संभवतः मिलेंगे उनको सक्रिय रूप से पूर्वानुमान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।

ग्रंथों के बारे में सबसे दिलचस्प बात शब्दावली या व्याकरण नहीं, मतलब है; दूसरी भाषा के पाठक सहज रूप से यह जानते हैं, और इसीलिए वे शुरू में फार्म पर नहीं, बल्कि अर्थ पर ध्यान केंद्रित करते हैं ।
उचित कार्य पाकर निम्न स्तर के शिक्षार्थी भी मुश्किल ग्रंथों के साथ उपयोगी काम कर सकते हैं ।
अर्थ शायद ही तय होता है; पाठ में अर्थ खोजने की प्रक्रिया हमेशा व्याख्या की प्रक्रिया भी है । इस प्रक्रिया को कक्षा में शामिल किया जा सकता है ।

2. उद्देश्य

हम कैसे पढ़ते हैं इस पर निर्भर होता है हम क्यों पढ़ते हैं ।
हम अलग टेक्स्ट अलग तरह से पढ़ते हैं ।
क्या हम सिर्फ़ कुछ सूचना  पाना चाहते हैं ? क्या हम एक केक सेंकने की कोशिश कर रहे हैं? या एक ट्रेन पकड़ने की ? वीसीआर चलाने की ? पासपोर्ट आवेदन को भरने की ?
कैसे, क्यों पर निर्भर होता है ।
“भाषा सीखने के लिए पढ़ना ”पर्याप्त उद्देश्य नहीं है ।
भाषा भाषा के बारे में ही नहीं है और ग्रंथ हमेशा किसी और के बारे में होते हैं, चाहे वह फुटबॉल, बुनाई, डायनासोर, रामलीला आदि हो ।
विभिन्न व्यक्तियों के उद्देश्य भी एक ही पाठ के साथ अलग हो सकते हैं ।

वास्तव में एक ही व्यक्ति का उद्देश्य विभिन्न समय पर अलग हो सकता है । एक इतालवी विद्यार्थी ऐतिहासिक वाराणसी के बारे में पढ़ सकेगी क्योंकि वह भारतीय इतिहास पर पीएचडी कर रही है । दूसरा विद्यार्थी उसी टेक्स्ट को पढ़ सकेगा क्योंकि अपने पूर्वज के बारे में कुछ जानकारी पाना चाहता है । एक और व्यक्ति जो घुमक्कड़ हो अपनी अगली यात्रा के लिए एक दिलचस्पी मंजिल ढूँढता होगा, आदि । इतने विभिन्न उद्देश्य एक ही कक्षा में होने से कोई प्रॉब्लम नहीं । यही विविधता है जो भाषा सीखने और सिखाने को इतनी गहराई से समृद्ध बनाती है ।

3. प्रतिक्रिया

पढ़ने की प्रक्रिया के बारे में सबसे दिलचस्प बात यह है - पाठ पढ़ने के लिए पाठक की प्रतिक्रिया।
प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिक्रिया रचनात्मक है।
प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिक्रिया अलग है।

**गतिविधि 1**

नीचे दिए गए इश्तहार को देखिए :

जोड़ों में काम करते हुए निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1) इसमें date के लिए हिन्दी शब्द ढूँढ़िए ।
2) इसमें place के लिए एक हिन्दी शब्द ढूँढ़िए ।
3) आपके अनुसार यह इश्तहार किस के बारे में है ?

4) आपके अनुसार हिन्दी में समय किस तरह से बताया जाता है ?
5) क्या इस इश्तहार में संपर्क करने के लिए कौनसा सूत्र दिया गया है ?
6) आपके  अनुसार तस्वीरों के नीचे लिखी हुई चीज़ें क्या हो सकती हैं ?
7) इस पंक्ति में : “इंटरसिटी एक्सप्रेस रेलगाड़ी" में रेलगाड़ी का मतलब क्या हो सकता है ?

यह गतिविधि हम किसी भी प्राथमिक विद्यार्थी के साथ कर सकते हैं जब तक उन्हें देवनागरी पढ़नी आती है क्योंकि इस गतिविधि के लिए किसी व्याकरण ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं है । इसी इश्तहार में अगर हम सबसे निचली पंक्ति का अनुवाद अपने इन्हीं विद्यार्थियों से करने को कहते तो यह ज़रूर उनके लिए संभव नहीं होता लेकिन यह कार्य जो हमने उनसे जो करने को कहा यह उन प्राथमिक विद्यार्थियों के लिए भी आसान है जो सिर्फ़ लिपि जानते हैं । न्यूनन (Nunan) ने कहा है कि *"Vary the task, not just the text!"* जिसका मतलब है कि हमारे लिए लेख बदलने से ज़्यादा ज़रूरी कार्य को बदलना है क्योंकि एक ही लेख से हम अलग-अलग विद्यार्थियों के साथ हम अलग-अलग कार्य कर सकते हैं जो उनकी ज़रूरतों को पूरा करे ।

---

**पाठ के बाद कुछ प्रश्न :**

जिन लोगों ने अज्ञात भाषा में लिखित टेक्स्ट पढ़ा उन्होंने अर्थ निकालने की कोशिश कैसे की ?
कौनसे भाषाई और ग़ैर-भाषाई सुराग के धन का प्रयोग किया गया ?
पाठ के शुरुआत में मैंने कहा कि पढ़ना एक सक्रिय, रचनात्मक, अर्थ बनानेवाली प्रक्रिया है । क्या आप इस से सहमत हैं ?
क्या आप हैरान हुए कि शिक्षार्थी बिल्कुल अपरिचित भाषा में लिखित पाठ से जानकारी निकाल सके ? क्यों हाँ या क्यों नहीं?
गतिविधियाँ कैसे तैयार किया जा सकती हैं , ताकि वे अच्छे पाठकों की प्रथाओं के धन का प्रयोग कर सकें ?

**सारांश**

पढ़ना = हम पढ़ने के बारे में सोचते हैं कि शब्द मस्तिष्क में जाते हैं
लेकिन वास्तव में सिर्फ एक हिस्सा है, क्योंकि हमारा मस्तिष्क सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया करता है

**भाग 3**

पढ़ने  से पहले कुछ प्रश्न :

क्या शिक्षार्थियों को पाठ पढ़ने से पहले, कक्षा में उसके साथ कुछ गतिविधि करने से पहले के हर शब्द जानने की ज़रूरत है? क्यों या क्यों नहीं?

किसी को इतालवी  नहीं मालूम लेकिन हर किसी को कुछ समझ में आ सकता है -
कैसे?
संदर्भ का उपयोग
अनुमान

1. हम पृष्ठभूमि जोड़ते हैं, भाषाई ज्ञान का उपयोग हमें पहले से ही है (जैसे कि Gange पढ़कर हम सोचते हैं ... ओह यह गंगा की तरह लगता है!): सजातीय शब्दों (अंग्रेजी में काग्नेट cognate) का उपयोग करते हैं
2. हमें असली दुनिया का ज्ञान होता है : हम जानते हैं कि ये सब देशों के नाम हैं
3. प्रासंगिक ज्ञान
1+2+3 का संयोजन हमें इस पाठ का अर्थ निकालने देता है

यह ज़रूरी नहीं है कि एक पाठ के सब शब्दों का मतलब आपको मालूम हो ताकि कक्षा में उस टेक्स्ट का इस्तेमाल किया जाए।
सक्रिय पढ़ना  = हम शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कर सकते हैं कि जो उपाय उनके पास पहले से ही होते हैं - भाषा उपाय, असली दुनिया के उपाय, प्रासंगिक उपाय - उसके धन का प्रयोग करें ।

हमने कहा : Vary the task, not just the text काम / कार्य बदलना है, केवल पाठ नहीं
इसके अलावा कुछ सांस्कृतिक सूचनाओं को भी पेश कर रहे हैं (उदाहरण के लिए, इतालवी  भाषा  में पता या तारीख़ कैसे लिखी जाती है)

Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)

भाषा और पाठ की अलग-अलग प्रतिक्रियाएं हम शिक्षकों के लिए एक बहुत मूल्यवान सहारा और उपाय है ।

अध्यापन सामग्री बनाने के लिए निदेशक सिद्धान्त

सामग्री के सभी प्रकार का उपयोग करना
पाठ में प्रवेश के एक बिंदु की तलाश करना (पढ़ने से पहले की गतिविधि या पाठ की शुरुआती गतिविधि)
शब्दावली के न्यूनतम पूर्व-शिक्षण
एक उद्देश्य के बारे में गतिविधियों का निर्माण करना

कार्यों के बारे में सोचना : विशिष्ट, प्राप्य कार्यों को पूरा करने से छात्रों को उपलब्धि और सफलता की भावना मिलती है
टेक्स्ट पूजनीय  नहीं हैं
शिक्षार्थी पाठ से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं
पढ़ना एक सामाजिक प्रक्रिया हो सकती है : टेक्स्ट पढ़ने से अर्थ, व्याख्याओं, और प्रतिक्रियाओं की चर्चा शुरू हो सकती है
पढ़ना अन्य कौशल के साथ एकीकृत करना : पढ़ना बोलने, सुनने, और लेखन के लिए एक प्रारंभिक बिंदु हो सकता है

**पाठ के बाद कुछ प्रश्न :**

डेविड नुमन के शब्दों में " काम / कार्य बदलना है, केवल पाठ नहीं " इसका मतलब क्या है?
निम्न स्तर की कक्षाओं में भी प्रामाणिक ग्रंथों का उपयोग करने के लिए हमें यह कैसे मदद कर सकता है?
वीडियो के इस भाग में, प्रतिभागियों को एक ट्रैवल एजेंसी के विज्ञापन के साथ काम कर रहे थे।
क्या आप अन्य प्रकार के ग्रंथों के बारे में सोच सकते हैं, जिन के माध्यम से छात्र वास्तविक दुनिया, प्रासंगिक, और भाषाई पूर्व-ज्ञान के धन का प्रयोग कर सकेंगे ?

## *संदर्भग्रंथ सूची*


Balboni P.E. 1998. *Tecniche didattiche per l'educazione linguistica*. Torino: UTET Libreria.
Bamford, J. & Day, R. (2004). *Extensive reading activities for teaching language*. Cambridge: Cambridge University Press.
Caon F. and S. Rutka. 2003. *Insegnare l'italiano giocando: principi e materiali per una didattica ludica*. Perugia: Guerra.
Carter, R. A. & Long, M. N. (1991). *Teaching literature*. London: Longman.
Carter, R. A. & McRae, J. (1996). *Language, literature and the learner: Creative classroom practice*. New York: Longman.
Collie, J. & Slater, S. (1987). *Literature in the language classroom*. Cambridge: Cambridge University Press.
Day, R. R. (1993). *New ways in teaching reading*. Alexandria, VA: TESOL.
Duff, A. & Maley, A. (1989). *Literature*. Oxford: Oxford University Press.
Grundy, P. (1993). *Newspapers*. Oxford: Oxford University Press.
Hadfield, J. & Hadfield, C. (2000). *Simple reading activities*. Oxford: Oxford University Press.
Johnston, B. & Janus, L. 2007. *Developing Classroom Materials for Less Commonly Taught Languages*. (CARLA Working Paper Series). Minneapolis: University of Minnesota, Center for Advanced Research on Language Acquisition.
Lazar, G. (1993). *Literature and language teaching*. Cambridge: Cambridge University Press.
Maley, A. & Duff, A. (1984). *The Inward Ear*. Cambridge: Cambridge University Press.
Maley, A. & Moulding, S. (1985). *Poem into poem*. Cambridge: Cambridge University Press.
Morgan, J. & Rinvolucri, M. (1983). *Once upon a time. Using short stories in the language classroom*. Cambridge: Cambridge University Press.
Sanderson, P. (1999). *Using newspapers in the classroom*. Cambridge: Cambridge University Press.
Whiteson, V. (1997). *New ways of using drama and literature in language teaching*. Alexandria, VA: TESOL.


Field Code Changed

## 8.हिंदी कक्षा हेतु अध्यापन के सामग्री की विकास :

### इकाई 2–श्रव्य माध्यम के प्रयोग

**पाठ से पहले कुछ प्रश्न :**

यह इकाई शिक्षण में ऑडियो रिकॉर्डिंग (श्रव्य माध्यम) के उपयोग के बारे में है।

आपने अपने शिक्षण में किस प्रकार के श्रव्य माध्यमों का प्रयोग किया है
आपने ऑडियो रिकॉर्डिंग से किस तरह की गतिविधियाँ की ?
क्या आप अन्य प्रकार की ऑडियो रेकॉर्डेड सामग्री का उपयोग करने की कल्पना कर सकते हैं?
हम हिन्दी भाषा कक्षा में गीतों की कौनसी उपयोगी भाषाई सुविधाओं पर केंद्रित हो सकते हैं ?

गीत, बातचीत, रेडियो कार्यक्रम: ये सब बहुत लोकप्रिय हैं । ख़ास तौर पर विद्यार्थियों को गीत पसंद होते हैं । गीतों पर केन्द्रित अभ्यासों से सुनने की क्षमता का विकार हो सकता है । यह बहुत महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थी अलग अलग तरह की उच्चारण, आवाजें, ध्वनियाँ सुनें । हम गीत के साथ क्या कर सकते हैं ? उनसे विद्यार्थी सक्रिय रूप से सुनने का अभ्यास करेंगे । हम शिक्षकों को उनके लिए सक्षम कार्य और गतिविधियां बनानI पड़ेंगी, ताकि सुनने और सीखने की क्षमता को प्रोत्साहित किया जाए ।
वास्तव में एक दूसरी भाषा में सुनना बहुत तनावपूर्ण है । अस्थाई ध्वनि है, यह गायब हो जाती है, असली दुनिया में इसे तुरंत सुनना पड़ता है ।

सुनने के लिए श्रव्य माध्यम सामग्री डिज़ाइन करते समय हमको ध्यान में रखना है कि पढ़ने और सुनने के बीच बहुत बड़ा अंतर यह है कि आम तौर पर सुनना सक्रिय प्रक्रिया होती है : सुनने के लिए श्रव्य का पीछा करने का या रुकने का कोई अवसर नहीं मिलता ।

यदि श्रोता एक विशेष शब्द, वाक्यांश या वाक्य समझ नहीं पाता तो वह वाक्य जा चुका होता है, और एक पल बाद अगला वाक्य आ पहुँचता है।

यह मुख्य कारण है कि सुनना पढ़ने से बहुत अधिक तनावपूर्ण कौशल और अभ्यास है । इसलिए गतिविधियाँ बनाने के लिए बहुत बड़ी सावधानी चाहिए ताकि शिक्षार्थी विह्वल ना हो जाएँ ।

अलग अलग तरह की सामग्रियों और आवाज़ों का उपयोग करना बहुत ज़रूरी है ।
श्रव्य माध्यम सामग्री तैयार करने के लिए जिस तरह की चीज़ों का इस्तेमाल किया जा सकता है, इसकी अधूरी सूचि निम्लिखित प्रस्तुत है :

रेडियो समाचार
मौसम की रिपोर्ट
रेडियो/वेब पत्रकारिता

कॉमेडी रिकॉर्डिंग
कविता की रिकॉर्डिंग
ऑडियो पुस्तकें
रिकार्डेड निर्देश
प्रसिद्ध भाषण
रेडियो नाटक और रेडियो के लिए अनुकूलित नाटक
गीत
खाना खाने के समय की बातचीत
साक्षात्कार
टेलीफोन सूचना सेवाएँ
फोन पर बातचीत की रिकॉर्डिंग
सेवा मिलन की रिकॉर्डिंग (जैसे रेस्तरां में आदेश, एयरलाइन टिकट खरीदना, आदि)
व्याख्यान
प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम

सुनने के कौशल के बारे में एक बहुत हानिकारक आम विचार यह है कि छात्रों को पाठ के हर शब्द को समझना चाहिए। जैसे मैंने पढ़ने के बारे में कहा था सुनने के बारे में भी यह ज़रूरी है की शिक्षक ऐसी गतिविधियों को बनाए जिनको विद्यार्थी बिना हरेक शब्द को जानें कर सकें। हमें उनकी मदद करनी चाहिए ताकि वे चतुर अनुमान करना सीखें और संकेतों का उपयोग करें।

जो मैंने पढ़ने के बारे में कहा, वह सुनने के बारे में भी है। सुनना एक सक्रिय, रचनात्मक, अर्थ बनानेवाली प्रक्रिया है।
सुनने के अनुभव के तीन आयाम :

1. अर्थ : फॉर्म से पहले अर्थ पर ध्यान देना
2. उद्देश्य : छात्रों को सुनने के लिए कुछ वयस्क कारणों की ज़रूरत है
3. प्रतिक्रिया : सर्वश्रेष्ठ भाषा सीखना एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है और उसमें शिक्षार्थियों की रचनात्मकता शामिल है।

**रिक्त स्थान पूर्ति अभ्यास**

**क)** इस गीतिकाव्य में लापता शब्दों को भरने का प्रयास करें। जोड़े में लापता शब्दों को भरना।
इसमें क्या आसान है, क्या कठिन है ?
यह गतिविधि गीत को सुने बिना करनी चाहिए। आप चाहेंगे तो बॉबी )1973 की इस गीत की (विडियो यू ट्यूब पर मिल जाएगी (https://www.youtube.com/watch?v=tBJj-3sgcd0)

आदेश : प्रत्येक रिक्त स्थान को एक शब्द से भरना जो आपको लगता है कि वाक्य पूरा करता है।

बाहर से कोई ☐ न आ सके

अन्दर से कोई ☐ न जा सके

सोचो कभी ऐसा ☐

हो तो हो ☐

सोचो कभी ऐसा तो क्या हो

हम तुम, एक कमरे में बन्द हों

और ☐ खो जाये

तेरे नैनों के भूल भुलैय्या में

बॅबी ☐ जाये

हम तुम ...

**ख)** आदेश : संकेत के रूप में कोष्ठकों में शब्दों के प्रयोग करके प्रत्येक रिक्त को अंदाजा लगाकर (अ) एक शब्द से भरें जो आपको लगता है कि वाक्य पूरा करता है । इसके बाद गीत का दूसरा भाग सुनकर जवाब (ज) रिक्त में सही शब्द लिखें।

आगे हो ☐(अ) ☐(ज) (बहुत अधिक घना) अन्धेरा

☐(अ) ☐(ज)
- बाबा मुझे (भय, ख़ौफ़) लगता है

पीछे कोई डाकू लुटेरा

☐(अ) ☐(ज)
- उँ, क्यों डरा रहे हो

आगे हो (बहुत ☐(अ) ☐(ज) अधिक घना) अन्धेरा

☐(अ) ☐(ज)
पीछे कोई डाकू लुटेरा

उपर भी जाना हो (आसान नहीं)

नीचे (अ) (ज) भी (आगमन होना) हो मुशकिल

सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो

(अ) (ज)

सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो

हम तुम कहीं को जा रहे हों

और (सड़क) भूल जाये

तेरे बैंय्या के झूले में सिंय्य्या

बॅबी झूल जाये

हम तुम ...

ग) गीत का तीसरा भाग *सुनते हुए* दायीं कॉलम में दी गई गीत के पंक्तियाँ बायीं कॉलम में क्रम से रखना ।

| | |
|---|---|
| 1. ..... | a. और शेर आ जाये |
| 2. ..... | b. बस एक हम हो और दूजी हवा हो |
| 3. ..... | c. सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो |
| 4. ..... | d. शेर से कहूँ तुमको चोड़ के |
| 5. ..... | e. मुझे खा जाये |
| 6. हम तुम ... | f. हम तुम ... |
| 7. ..... | g. मस्ती में चूर घने पेड़ों के नीचे |
| 8. ..... | h. अन्देखी अन्जानी सी जगह हो |
| 9. ..... | i. हम तुम एक जंगल से गुज़रे |
| 10. ..... | j. बस्ती से दूर, परबत के पीछे |

घ) गीत का चौथा भाग *सुनकर* 1 से 6 तक अनुक्रम में निम्नलिखित गीत के पंक्तियाँ को क्रम से रखना

| | | | |
|---|---|---|---|
| | हम तुम, यूँ ही हँस खेल रहे हों<br>और आँख भर आये | | सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो<br>सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो |
| | ऐसे क्यों खोये हुए हो<br>जागे हो कि सोये हुए हो | | क्या होगा कल किसको खबर है<br>थोड़ा सा मेरे दिल में ये डर है |
| | तेरे सर की क़सम तेरे ग़म से | 6 | हम तुम ... |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | बॅबी मर जाये | | |

**गतिविधियों पर विचार करें**

इस पाठ में चार तरह की गतिविधियाँ प्रस्तुत हुई हैं

पहले और दूसरी गतिविधियों में (क, ख) आप लापता शब्दों को निकालने के लिए रणनीति पर ध्यान दें । इससे आप शिक्षार्थियों को अपनी उम्मीदों के बारे में समझाते हैं ? तीसरी और चौथी गतिविधियों में (ग, घ) कार्यों को पूरा करने के लिए शिक्षार्थी किस तरह के भाषाई, प्रासंगिक, और वास्तविक दुनिया सुराग का उपयोग करते हैं ?

**ङ)** एक और गतिविधि यह है :
गीतिकाव्य में जानबूझकर कुछ गलतियां कर दी जाएँ । सुनने से विद्यार्थियों को गलतियों का पता लगाना होगा।
गीत एक एक पंक्ति करके सुनाया जा सकता है । अंत में उनकी कापी इकट्ठी करके पूरे गीत को सुनाया जा सकता है।

उदाहरण:

बाहर से कोई *गाड़ी* न आ सके
*आँगन* से कोई बाहर न जा सके
*देखो* कभी ऐसा हो तो क्या हो
सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो

हम तुम, इक *होटल* में बन्द हों
और *वॉलेट* खो जाये
तेरे *बाग़* के भूल भुलैय्या में
बॅबी *सो* जाये
हम तुम ...

**देखना / सुनना**

आजकल विडियो बहुत लोकप्रिय हैं, लेकिन मैं यह कहना चाहूँगी कि यह फ़ायदेमंद है कि कुछ गतिविधियों में छात्र मजबूर हों कि वे लिखित पाठ को बिना देखने के केवल सुनते रहें ।

श्रव्य स्थितियों में हमें नियंत्रण बनाने का मौक़ा नहीं मिलता । रेडियो या टेलीफोन पर जब बातचीत होती है, तो अदृश्य देहमुक्त आवाज़ सुनाई देती है, उसको नहीं रोका जाता, रिवाइंड नहीं किया जाता जो फिर से सुना जा सकता है ।
आमने-सामने की बातचीत में, या भाषा प्रयोगशालाओं में तो छात्रों का थोड़ा-सा नियंत्रण है ।
लेकिन फिर भी, श्रव्य स्थितियों में आम तौर पर नियंत्रण नहीं । इसीलिए आशंका और परेशानी की भावना उठती है ।

शिक्षार्थी बहुत चिंता करते हैं कि उनको हर एक शब्द पता होना चाहिए । अगर हम इस चिंता को जीत पाते हैं तो महान लाभ का होगा । कैसे ? हमें उनको अन्य रणनीतियों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना है ।

इसीलिए यह बहुत ज़रूरी है कि विद्यार्थियों के कान विभिन्न उच्चारण सुनकर, पुरुषों और महिलाओं की आवाजें सुनकर, प्रादेशिक रूपांतर वग़ैरह सुनकर लक्ष्य भाषा के विभिन्न उपयोगों से ट्यूनिंग कर लें ।

पाठ की संरचना इसी तरह तैयार करनी है, ताकि छात्रों को निराशा महसूस न हो, बल्कि उपलब्धि की भावना महसूस हो ।

क्या आपने कभी भी श्रव्य सामग्री के रूप में स्वयं रिकॉर्डिंग बनाई है?
आप किस तरह की रिकॉर्डिंग इस तरह से बनाने की सोच सकते हैं ?

एक बहुत उपयोगी गतिविधि **"निर्देशित कल्पना"** है

**टाइम मशीन**

अपनी आँखें बंद करें और आराम से बैठें । आपको बस इतना करना है कि मेरी बात सुनें । कल्पना करें कि आपको टाइम मशीन में बैठा दिया गया है, और थोड़ी देर तक आप इतिहास में किसी भी अवधि में वापस जा सकते हैं और किसी भी जगह पर, अपनी मर्ज़ी से, अभी आप फैसला करें कि आपकी यात्रा किस अवधि और किस जगह को करना चाहेंगे ।

[विराम]

मशीन चलने लगती है। आप वापस यात्रा कर रहे हैं ... अब आप पहुँच चुके हैं। बाहर निकलें ।
आप क्या देख सकते हैं? क्या वहाँ कोई भी इमारत है ? वे कैसी है ? आसपास कुछ लोग हैं। उन्होंने कैसे कपड़े पहने हैं? आप चलने लगते हैं। किधर चल रहे हैं? कुछ लोग आप के पास आते हैं । आगे क्या होगा ?

[विराम]

दुर्भाग्य से, अब आपको टाइम मशीन पर लौटना है। लोगों की प्रतिक्रिया क्या है? आप धीरे-धीरे मशीन की ओर वापस चलकर उस में चढ़ते हैं । हर कोई देख रहा है । वे क्या कर रहे हैं ?
मशीन चली जाती है ... अब आप इक्कीसवीं सदी में, अपनी कक्षा में वापस पहुँच चुके हैं । जब आप तैयार हैं, आँखें खोलें ।

[विराम]

अब, अतीत में अपनी यात्रा की कहानी के बारे में लिखें । आपने क्या-क्या देखा, आपकी किन-किन लोगों से मुलाकात हुई, आपके साथ क्या क्या हुआ ?

**पाठ के बाद कुछ प्रश्न :**

सुनने और पढ़ने में किस तरह की समानता है ?

दोनों कौशलों में से क्या फ़र्क होता है ?

समानताओं और फ़र्कों का क्या मतलब है हमारे लिए, जब हम सामग्री का चयन करते हैं और गतिविधियों को डिजाइन करते हैं?
क्या आप इस से सहमत हैं कि चार कौशल में से सुनना "सबसे तनावपूर्ण" है ?

हम सुनने के कार्यों को कैसे डिजाइन कर सकते हैं ताकि शिक्षार्थियों को मदद दी जा सके तनाव का अच्छी तरह से सामना करने के लिए?

रिक्त स्थान पूर्ति और दूसरी गतिविधियों के शैक्षणिक लाभ क्या हैं?

स्टेजिंग - गीत पर केन्द्रित कार्य विभिन्न गतिविधियों में बाँटना – जो हर पंक्ति में पूरी हो जाती हैं : उसका फायदा क्या है ?

किस प्रकार का टेक्स्ट आप अपने शिक्षार्थियों के साथ उपयोग कर सकेंगे ?

लक्ष्य संस्कृति या संस्कृतियों के कौनसे गाने उनको पसंद आ सकेंगे ?

**और प्रश्न :**

छात्रों को एक ही रिकॉर्डिंग दो या तीन बार सुनाना क्यों अच्छा है?

लगातार सुनाने वाले कार्य कैसे आयोजित किये जाने चाहिए?

देखना और सुनना अन्योन्याश्रित हैं : आप क्या सोचते हैं ?

अभी आप किस अन्य प्रकार की श्रव्य सामग्री अपनी कक्षा में उपयोग करने की सोच सकते हैं ?

आप इन सामग्रियों से किस प्रकार की गतिविधियों को डिजाइन कर सकेंगे ?

## *संदर्भग्रंथ सूची*


Hadfield, J. & Hadfield, C. (1999.) *Simple listening activities*. Oxford: Oxford University Press.
Murphey, T. (1994). *Music and song*. Oxford: Oxford University Press.
Nunan, D. & Miller, L. (1996). *New ways in teaching listening*. Alexandria, VA: TESOL.
Rost, M. (1990). *Listening in language learning*. London: Longman.
Ur, P. (1984). *Teaching listening comprehension*. Cambridge: Cambridge University Press.
White, G. (1999). *Listening*. Oxford: Oxford University Press.


Formatted: English (U.S.)

Formatted: English (U.S.)

## 9. हिंदी कक्षा हेतु अध्यापन सामग्री का विकास:

### इकाई 3 – दृश्य माध्यम का प्रयोग

**पाठ से पहले कुछ प्रश्न :**

आपके शिक्षण में किस प्रकार के वीडियो रिकॉर्डिंग, यदि कोई हो, का प्रयोग किया गया है?
आपने इन सामग्रियों से क्या किया?
आपकी अपने छात्रों के साथ वीडियो रिकॉर्डिंग के कौनसे अन्य प्रकारों को सांझा करने में रुचि होगी?
आम तौर पर, भाषा कक्षा में (ऑडियो रिकॉर्डिंग के बजाय) वीडियो रिकॉर्डिंग का उपयोग करने से क्या फ़ायदा है ?

इस पाठ में मैं वीडियो के बारे में बात करूँगी । इसका मतलब यह है कि सब रिकार्ड किए गए चलचित्रों के प्रयोग के बारे में बोलूंगी ।
डीवीडी, वीसीआर, लेजर डिस्क, यूट्यूब, स्मार्टफोन
रिकॉर्डिंग का तकनीकी तरीका अलग अलग होता है, लेकिन शैक्षणिक सिद्धांत नहीं बदलता है ।

वीडियो का उपयोग इंटरैक्टिव होना चाहिए
हमारी मंजिल यह है की दर्शकों को पूर्वानुमान करने, पहले ही विचार कर लेने को प्रोत्साहित करें
जो विद्यार्थी देख रहे हैं, उसके प्रति प्रवृत्त और कार्यरत हो जाएँ ।

नियम:
वीडियो का उपयोग करते समय वीडियो लघु होनी चाहिए : वास्तव में इन्टेंसिव गतिविधि करने के लिए दो एक मिनट का विडियो बहुत ज़्यादा है ।
भाषा सिखाने के लिए बिल्कुल गौर से और पूर्णत: देखना सबसे अच्छा है ।
"लंबी चीज़ें देखना (extensive viewing)" - पूरा एक शो, एक फिल्म – किया जा सकता है , इससे कई गतिविधियों का प्रबंध किया जा सकता

लेकिन हम यदि भाषा सीखने का समर्थन करने के लिए, ख़ास तौर पर सुनने के कौशल का समर्थन करने के लिए, वीडियो का उपयोग करना चाहते हैं, तो यह एक बहुत मेहनत वाला काम है ।
इसलिए हम यह चाहते हैं कि शिक्षार्थियों के समूह सक्रियता से गतिविधियों को करें, ताकि उनको उपलब्धि की भावना हो, और वे पूसी क्लिप को सुनकर उसको समझ सकें: जितना ज़्यादा लम्बा, उतना ज़्यादा मुश्किल होगा ।

दृश्य माध्यम सामग्री तैयार करने के लिए जिस तरह की चीज़ों का इस्तेमाल किया जा सकता है, इसकी अधूरी सूचि निम्लिखित प्रस्तुत है :

फीचर फिल्म

मूक फिल्म
टी॰वी॰ समाचार
टी॰वी॰ वृत्तचित्र
सिटकॉम
धारावाहिक
प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम
विविध कार्यक्रम
नाटक
समाचार कार्यक्रम
कार्टून
विज्ञापन

**पूर्वावलोकन गतिविधियाँ (pre-viewing activities)**

यह शीर्षक, एक ही शब्द, एक तस्वीर – विडियो का एक स्टिल – हो सकता है ।

प्रवेश के बिंदु वे हैं जो विद्यार्थियों की सोच को बढ़ावा देने में मदद करते हैं ।

जैसे कि एक वाक्य : यह किसने कहा? किस से? किस परिस्थिति में ? हम शिक्षार्थियों से यह कहेंगे कि वे अंदाज़ा लगाएँ ।

एक सामान्य नियम के रूप में, यह अच्छी बात है कि जो नए शब्द वीडियो में आते हैं, वे सभी न दिए जाएँ । दूसरी ओर, रचनात्मक, सक्रिय दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करनेवाले नए शब्दों का प्रयोग उचित होगा ।

**गतिविधि 1**

(यह गतिविधि ऑडियो से भी की जा सकती है)

पाठ में प्रवेश का एक बिंदु ढूँढ़ना चाहिए
वीडियो से एक ही वाक्य निकालें, जो विद्यार्थियों के लिए सहारा बन सकता है जिसका इस्तेमाल एंकर प्वाइंट के रूप में किया जा सकता है, जिसका मतलब है एक अवलंब के बिन्दु के रूप में । सुरक्षा का एक छोटा-सा द्वीप बनाएँ: "हम यह वाक्य जानते ही है"
"तुम्हें समझ में नहीं आ रहा कि मैं तुमसे बात करने में इंटरेस्ट नहीं हूँ ?"

- क्लिप देखें । जब उपरोक्त वाक्य सुनें, तो अपने हाथ को हिलाएं ।
- फिर से क्लिप देखकर बातचीत के हिस्सों को क्रम से रखना । क्रम में संख्या लगाएं । पहले दी जा चुकी है।

1. मुझे माफ़ करो प्लीज!
2. तुम हो मेरी प्रोबेल्म ।
3. मुझे नहीं जानना है कि तुम भटिंडा से आई हो या बनारस से ... अब तक हॉस्टल में रहती थी या ब्रोठेल में ।
4. तो बताओ क्या बात है। बोलो बताओ शर्मो नहीं बताओ क्या प्रॉब्लम है बोलो न।
5. मैं नहीं बात करना चाहता तुमसे ।
6. उस टाइप की हूँ - एगनी आउंट होती है न, मैगजीन्स में आर्टिकल आटे हैं ? वैसी ...
7. तुम... बोलती जा रही हो, बोलती जा रही हो ... तुम्हें समझ में नहीं आ रहा कि मैं तुमसे बात करने में इंटरेस्ट नहीं हूँ ?
8. बता दो। बड़े सारे  दोस्त मुझे अपनी प्रोब्लेम्स बताते हैं और मैं उन्हें सोल्व करती हूँ , पता है ?
9. देखो ऐसा है कि लाइफ में प्रॉब्लम है तो मुझे बता सकते हो । आई डोंट माइंड ।

i. क्या बॉस ? चक्कर क्या है ? ड्रग्स श्रुग्स ली है ?

(स्रोत: *जब वी मेट* 10:36-11:21)

हाल

गीत : क्या बॉस ? चक्कर क्या है ? ड्रग्स श्रुग्स ली है ?
देखो ऐसा है कि लाइफ में प्रॉब्लम है तो मुझे बता सकते हो । आई डोंट माइंड ।
बता दो। बड़े सारे दोस्त मुझे अपनी प्रोब्लेम्स बताते हैं और मैं उन्हें सोल्व करती हूँ , पता है ?
उस टाइप की हूँ - एगनी आउंट होती है न, मैगजीन्स में आर्टिकल आटे हैं ? वैसी ...
तो बताओ क्या बात है। बोलो बताओ शर्मो नहीं बताओ क्या प्रॉब्लम है बोलो न।
आदित्य : तुम हो मेरी प्रोबेल्म ।
तुम... बोलती जा रही हो, बोलती जा रही हो ... तुम्हें समझ में नहीं आ रहा कि मैं तुमसे बात करने में इंटरेस्ट नहीं हूँ ?
मैं नहीं बात करना चाहता तुमसे ।
मुझे नहीं जानना है कि तुम भटिंडा से आई हो या बनारस से ... अब तक हॉस्टल में रहती थी या ब्रोठेल में ।
मुझे माफ़ करो प्लीज!

**गतिविधि के बाद कुछ प्रश्न :**

- यह क्यों बेहतर है कि इन्टेंसिव गतिविधि केवल दो/एक मिनट के वीडियो के साथ हो ?
- इस गतिविधि की मंजिल क्या है ? इस तरह की वीडियो क्लिप से गतिविधि करके हम अपने शिक्षार्थियों के लिए क्या प्राप्त करने की उम्मीद करते हैं ?
- जो टेक्स्ट विद्यार्थी देखनेवाले हैं उसमें "प्रवेश के बिंदु" का उद्देश्य क्या है ?

- "शिक्षार्थियों के सुनने की क्षमता को बढ़ाना" यह वीडियो के उपयोग करने में हमारे मुख्य लक्ष्यों में से एक है । गैर-मौखिक (non-verbal अर्थात् ज्यादातर दृश्य) वीडियो रिकॉर्डिंग के तत्व इस लक्ष्य का कैसे समर्थन कर सकते हैं ?

हिंदी के शिक्षार्थियों के लिए इस काम का मूल्य क्या है?
रणनीतियाँ बनाना : उदाहरण के लिए शब्द की शुरुआत और अंतिम हिस्से पर ध्यान देना ।

**गतिविधि 2**

- सबसे पहले, संवाद के हिस्सों को पढ़ें । जो अनुक्रम आपको सबसे स्वाभाविक लगता हैं, उस अनुक्रम को वाक्य के क्रम में रखें ।
- क्लिप देखकर चेक कर लीजिए कि आपका अनुक्रम सही है या ग़लत ।
- तुम क्या सोचते हो ? क्या हो रहा है?

- डोंट वोर्री । मैं तुम्हें रेप नहीं करनेवाला हूँ ।
- मैं करना चाहता ही नहीं हूँ ।
- नहीं मैं बस क्लियर कर रही हूँ । तुम्हें कोई रॉग सिग्नल न मिले । स्टेशन के बाहर मैंने तुम्हें हग किया और कहा किसी होटल में चलते हैं । पता नहीं तुम क्या सोच रहे होगे ...
- हो सकता है । आई मीन येस । बिलकुल। देखने में ऐसी लगती हूँ मगर बड़े सारे लोगों को मार गिराया है मैंने चाहो भी तो नहीं कर सकते ।
- ओह तुम्हें कराते आता है । मतलब यानी मैं तुम्हें रपे करने की कोशिश करूँ तो तुम मुझे कराते कर दोगी।
- तुम क्या मुझे चाबी लगा रही हो कि मैं रपे एटेम्पट करूँ?
- तुम कर नहीं सकते हो ।

पहला लाइन दी जा चुकी है :
बस बता रही हूँ । ब्राउन बेल्ट हूँ मैं ।

(*जब वे मेट* 29:44-30:21)
आदित्य: तो?
गीत: बस बता रही हूँ । ब्राउन बेल्ट हूँ मैंने ।
आदित्य: ओह तुम्हें करते आता है । मतलब यानि मैं तुम्हें रपे करने की कोशिश करून तो तुम मुझे करते कर दूँगी।
गीत: हो सकता है । ई मैं एस । बिलकुल। देखने में ऐसी लगती हूँ मगर बड़े सारे लोगों को मार गिराया है मैंने
आदित्य: डोंट वोर्री । मैं तुम्हें रेप नहीं करनेवाला हूँ ।

गीत: तुम कर नहीं सकते हो ।
आदित्य: मैं करना चाहता ही नहीं हूँ ।
गीत: चाहो भी तो नहीं कर सकते
आदित्य: तुम क्या मुझे चाबी लगा रही हो ? कि मैं रपे अत्तेम्प्त करून?
गीत: नहीं मैं बस क्लियर कर रही हूँ । तुम्हें कोई वरोंग सिग्नल ना मिले । स्टेशन के बाहर मैंने तुम्हें हग किया और कहा किसी होटल में चलते हैं । पता नहीं तुम क्या सोच रहे होगे ... वह भी तुम्हारे जैसा आदमी ।

**गतिविधि से पहले कुछ प्रश्न :**

- मान लीजिये कि आप के पास किसी हिंदी फिल्म के दो/एक लिखित प्रतिलिपियाँ हैं । कक्षा की गतिविधियों को डिजाइन करने के लिए इन प्रतिलिपियों का उपयोग कैसे हो सकता है?

**गतिविधि करते हुए कुछ प्रश्न :**

इस गतिविधि में दृश्य देखने से पहले शिक्षार्थी बहुत काम करते हैं । इसके बाद वे क्लिप देख लेते हैं ।
क्या यह गतिविधि मुश्किल है?
किस भाषाई, प्रासंगिक, और वास्तविक दुनिया सुराग से आपको संवाद को एक तार्किक अनुक्रम देने के लिए मदद मिली ।
आदेश के अनुक्रम को समझने के लिए हमें समुच्चयबोधक शब्दों के प्रयोग का अभ्यास करना है ।

एक तरफ़ हमें अपनी भाषा में भाषाई जानकारी पुनः प्राप्त करनी है , दूसरी तरफ़ लक्ष्य भाषा में तुल्यार्थक समुच्चयबोधक शब्दों की पहचान करने की आवश्यकता है । यह एक बहुत परिष्कृत और जटिल कार्य है ।

हम पढ़ते समय सुने गए शब्दों और ध्वनियों का पूर्वाभ्यास करते हैं । हम उन्हें पहले अपने दिमाग़ में सुनते हैं । फिर हम उन शब्दों को कहते हुए पात्रों को सुनते हैं । यह गतिविधि भाषा की नियमित गति को बोलने और सुनने की शक्ति को बढ़ाती है । असल ज़िंदगी में जब भाषा बोली जाती है तो भाषा बोलने की गति काफ़ी तेज़ होती और अगर हम एक कही गई बात को एक बार में सुन नहीं पाते हैं तो उसे फिर से सुनने का अवसर हमारे पास नहीं होता है क्योंकि हम उसे वापस नहीं चला सकते हैं । यह लिखित शब्दों और बोले जाने वाले शब्दों के बीच का सबसे बड़ा फ़र्क है । और यही हमें अपने विद्यार्थियों को सिखानी है । और अगर यह हमारा लक्ष्य है, तो प्रतिलिपि ज़रूर दीजिए ।

गतिविधि के पहले अंश के बाद लिखित प्रतिलिपि हटानी चाहिए , सिर्फ़ विडियो दिखानी चाहिए ।
व्यापक रूप से , हर विडियो तीन बार से अधिक नहीं दिखाई जानी चाहिए ।

यहाँ हम फिर से वही मुद्दे देख पाते हैं :

- भाषा ज्ञान का उपयोग करना

- दुनिया के ज्ञान का उपयोग करना
- प्रासंगिक ज्ञान का उपयोग करना

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि छात्र कार्यों को करने में सक्षम हों । जो कार्य गतिविधि में होंगे, वे छात्रों की क्षमताओं के अनुसार उचित होने चाहिए ।
गतिविधि इसी तरह बने कि भले ही विद्यार्थियों को सभी शब्दों के अर्थ पता न हों, वे कार्य पूरा कर सकें ।
हर गतिविधि में छोटा प्रबंधनीय भाग हो जो पूरा किया जा सके । यह उपलब्धि की भावना देता है और अपने आप में पूरी तरह देखा जा सकता है ।
इस तरह से कुछ ही लघु महत्वपूर्ण दृश्यों को उठाएं , छात्रों को उन पर काम करने दें ताकि वे उन्हें समझ सकें, इसके बाद पूरी फिल्म देखने के लिए आगे बढ़ें । यह कई सांस्कृतिक विवरण चर्चा में लेता है ।

**Intensive viewing गतिविधियों के लिए कुछ सुझाव :**

**1. आवाज़ ऑफ करना**

बिना आवाज़ देखनेवाले बहुत अधिक ध्यान देते हैं । हम इस पर फ़ोकस कर सकेंगे कि क्या हो रहा है, या पात्रों की आवाजें कैसी होंगी, या परिदृश्य कैसा है आदि ।

**2. दृश्य ऑफ करना**

एक कपड़े से स्क्रीन ढककर बिना देखे विडियो सुन लें । अंदाजा लगाएँ कि कौन बोल रहा है, कैसे कपड़े पहने हुए हैं, किस जगह में हैं, परिस्थिति क्या है, आदि ।

**3. विभाजित स्क्रीन**

यह ऊपरवाली गतिविधि का एक परिवर्तन है । एक कपड़े से आधी स्क्रीन ढकें – आप ही हिस्सा चुन लें !

**4. एक महत्वपूर्ण दृश्य का चयन**

हो सकता है कि आपका उद्देश्य बड़े चीज़ को देखने का है, जैसे एक पूरी फिल्म दिखाना । फिर भी गहन काम के लिए एक महत्वपूर्ण दृश्य के चयन से अनुभव काफ़ी बढ़ सकता है ।

**5. घटनाओं के एक दृश्य को याद करना**

एक बड़े पैमाने पर भाषा मुक्त दृश्य - उदाहरण के लिए सुपरमैन II के उद्घाटन के दृश्य – दिखाएँ ।
आप छात्रों से पूछें कि वे घटनाओं का सही अनुक्रम (हिन्दी में) बताएँ । भाषायी दृष्टिकोण से यह दक्षतापूर्ण गतिविधि है : उन्हें शब्दों में पर्दे पर सभी देखे गए कार्यों का वर्णन करने की आवश्यकता है ।

**6. चलचित्र का श्रव्य भाग लगाना**

मूक फ़िल्में भी भाषा सीखने के लिए उपयोगी हो सकती हैं ! जैसे चित्रों के बारे में होता है (हम उस बारे में बाद में बात करेंगे) छात्रों द्वारा रचनात्मक और कल्पनाशील भाषा का उपयोग भड़काने के लिए एक भाषा-मुक्त प्रोत्साहन का इस्तेमाल किया जा सकता है । किसी मूक फिल्म से 1-3 मिनट के दृश्य का चयन करें। तीन के समूहों में शिक्षार्थियों को बाँटें । प्रत्येक समूह को एक टेप रिकॉर्डर (उदाहरण के लिए स्मार्टफोन) दे दें । आदेश यह होगा कि वे दृश्य के लिए एक चलचित्र का श्रव्य तैयार करें । इस गतिविधि का एक परिवर्तन यह है । किसी भी आवाज़ वाली फ़िल्म से एक दृश्य का उपयोग करें, लेकिन ध्वनि ऑफ कर दें । कठिन है, लेकिन अधिक मज़ा आता है !

**7. अपने वाक्य को पहचानना**

प्रवेश के बिंदु एक परिचित वाक्य । एक दृश्य का चयन करें जिसमें बहुत सारे वक्ता विभिन्न संवाद कर रहे हैं (उदाहरण के लिए, एक पार्टी या एक दावत) प्रत्येक शिक्षार्थी को प्रतिलिपि से एक ही वाक्य के साथ एक पर्ची दें। इसके बाद दृश्य दिखाएँ । शिक्षार्थियों को अपने वाक्य सुनते ही कागज़ की पर्ची हिलानी होगी ।

**8. पीछे की ओर का निर्माण या उल्टा निर्माण**

किसी भी अन्य प्रकार के पाठ की तरह, वीडियो पवित्र नहीं है । हम किसी भी क्रम में उसके साथ काम कर सकते हैं । आप एक फिल्म कहानी पिछड़े दिखा सकते हैं , एक फिल्म कहानी लेकर चार 1-3 मिनट के दृश्यों में बांटें । आख़िर दृश्य दिखाएँ : शिक्षार्थियों को अंदाज़ा लगाना होगा कि क्या हुआ है, यह स्थिति कैसे हो गई ? आप उल्टा करके दृश्य दिखाएँ जब तक शिक्षार्थियों को काफ़ी पता न चले कि वे पूरे कार्यक्रम को देख और सराह सकते हैं ।
इस तरह से 20 मिनट के शो से कक्षा के दो घंटे से अधिक काम किया जा सकता है ।

**लंबी चीज़ें देखना (extensive viewing)**

मैंने कहा कि भाषायी दृष्टिकोण से वीडियो का लंबी चीज़ें देखना गहन देखने से कम उपयोगी है। फिर भी वह एक गहरे काम के लिए , जो बहुत दक्षतापूर्ण हो सकता है, एक दिलचस्प पूरक हो सकता है ।
"फलां फलां पात्र ने फलां फलां दृश्य में क्या कहा?" इस तरह के विस्तृत सवाल व्यापक देखने में उचित नहीं । बल्कि, व्यापक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए: पात्र, वर्ण, रिश्ते, सेटिंग्स, वेशभूषा ।

**पाठ के बाद कुछ प्रश्न :**
इस पाठ में एक बहुत बड़ा मुद्दा यह है कि देखते समय शिक्षार्थियों को दृश्य की प्रतिलिपि दी जानी चाहिए कि नहीं । आप इस सवाल के बारे में क्या सोचते हैं? प्रत्येक विकल्प के फ़ायदे और नुक़सान क्या क्या हैं? क्या अलग अलग समय पर दोनों का इस्तेमाल किया जा सकता है?

- आप फिल्म के एक दृश्य से काम करने के अन्य तरीकों की क्या कल्पना कर सकते हैं?

Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)
Formatted: English (U.S.)

- भाषा पढ़ाई में आप वीडियो रिकॉर्डिंग के किस अन्य प्रकार का उपयोग कर सकेंगे?

## *संदर्भग्रंथ सूची*


Balboni, P. 2002. *Le sfide di Babele. Insegnare le lingue nelle società complesse*, Torino, UTET Libreria.

Cardillo, Darlene. "Using a Foreign Film to Improve Second Language Acquisition." www.albany.edu/it/martin/study/html, data di accesso: 25/7/05.

Cooper, R., Lavery, M., & Rinvolucri, M. (1991). *Video*. Oxford: Oxford University Press.

Lonergan, J. (1984). *Video in Language Teaching*. Cambridge: Cambridge University Press.

Sherman, J. (2003). *Using authentic video in the language classroom*. Cambridge: Cambridge University Press.

Stempleski, S. & Arcario, P. (Eds.) (1992). *Video in Language Teaching: Using, Selecting, and Producing Video for the Classroom*. Alexandria, VA: TESOL.

Stempleski, S. & Tomalin, B. (1990). *Video in Action: Recipes for Using Video in Language Teaching*. New York: Prentice Hall.

Stempleski, S. & Tomalin, B. (2001). *Film*. Oxford: Oxford University Press.


Formatted: Italian (Italy)

Formatted: English (U.S.)

# 10. हिंदी कक्षा के हेतु सामग्री का विकास :

## इकाई 4 – चित्रों के प्रयोग

इस पाठ में हम उन संसाधनों से दूर चल रहे हैं जिनमें भाषा सम्मिलित होती है और उन संसाधनों की ओर जा रहे हैं जिनमें भाषा निहित नहीं है लेकिन जो भाषा उत्पन्न कर सकते हैं ।

Formatted: English (India)

**पढ़ने से पहले एक प्रश्न :**

Formatted: English (India)

इस इकाई में हम उस सामग्री के बारे में चर्चा करेंगी जिन में भाषा सम्मिलित नहीं है (लिखित या मौखिक लेखों की तरह), लेकिन जो भाषा के उत्पादन को प्रोत्साहित करते हैं । किस तरह की भाषा का उत्पादन होगा, इसका पूर्वानुमान करना मुश्किल हो सकता है, भाषा कक्षा की इस अनिश्चितता के बारे में आप कैसा महसूस करते हैं?

किसी भी प्रकार के चित्र : कार्टून, पेंटिंग, फ़ोटोग्राफ़

कई शिक्षक असली दुनिया की घटनाओं का वर्णन करने के लिए चित्रों का उपयोग करते हैं । यह एक बहुत अच्छा अभ्यास है । यह तकनीक शिक्षार्थियों को एक मौक़ा देती है कि वह नई भाषा और अपने वातावरण में देखी जाने वाली चीज़ों के बीच संबंध बना सकें । लेकिन चित्रों को इस्तेमाल करने में असली ख़ुशी तब होती है जब हम वर्णन से परे जाते हैं ।

तस्वीरों के उपयोग विभिन्न प्रकार के पद्धतियों से होते हैं लेकिन अंत में उद्देश्य एक ही है । हम छात्रों को रचनात्मक और कल्पनाशील प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने के लिए तस्वीरें दिखाते हैं । भाषा कक्षा में अक्सर कल्पना के तत्व नहीं मिलते । हम अक्सर यह सोचते हैं कि शिक्षार्थियों को भाषा सीखने की ज़रूरत है, लेकिन हम यह नहीं सोचते कि वे क्या कर सकते हैं : वे खुद भाषायी या सैद्धांतिक पद्धतियों से किसी नई चीज़ का उत्पादन कर सकते हैं । भाषा शिक्षण में हम कल्पना की दुनिया को भूल जाते हैं । शिक्षार्थियों को हम रचनाकारों के रूप में नहीं , बल्कि एक स्पंज के रूप में देखते हैं जो सिर्फ़ चीजों को सोख सकते हैं । यह ठीक नहीं है ।

एक तस्वीर देखते ही हम जानना चाहते हैं कि यह क्या है । हम इसे किसी संदर्भ में रखना, पहचानना, समझना चाहते हैं : यह किस चीज़ की तस्वीर है, किस आदमी का चित्र हैं, कहाँ खिंचा गया है, आदि । लेकिन हमें इस आवेग का विरोध करना चाहिए यदि हम रचनात्मक रूप से चित्रों का प्रयोग करना चाहते हैं तो । जैसे एक कविता के साथ : एक कविता में एक अर्थ हो सकता है, लेकिन भाषा कक्षा में इसका इस्तेमाल करने के लिए हमें इसका अर्थ पता करने की ज़रूरत नहीं । चित्र कहाँ खिंचा गया यह पूरी तरह से अप्रासंगिक है । मुझे जो चित्र सबसे ज़्यादा पसंद हैं वह उस तरह के हैं जिनमें यह समझना कठिन है कि आप वास्तव में उसमें क्या देख रहे हैं ।

**गतिविधि 1**

यह फ़ोटो देखें :

स्रोत http://www.viktoria-sorochinski.com

तस्वीर का वर्णन करते-करते आप अंदाज़ा लगाते हैं कि इस में कौन है, उनके क्या संबंध होते हैं । एक ही चित्र से अलग-अलग कार्य किए जा सकते हैं । निम्न स्तर के शिक्षार्थी से कुछ इस तरह के सरल वाक्य का उत्पादन करेंगे: "मैं दो व्यक्ति देख रही हूँ", "एक महिला है" आदि । ज़्यादा विकसित शिक्षार्थी कहानियाँ बना सकेंगे । और अधिक जटिल अटकलें उच्च स्तर के शिक्षार्थी बना सकेंगे । फिर भी शिक्षार्थियों की जिज्ञासा यदि जगाई जाएगी तो वे अटकलें करना चाहेंगे, चर्चा में भाग लेना चाहेंगे और भाषा का उत्पादन करना चाहेंगे । हमें छात्रों को कम नहीं समझना चाहिए ।

इस गतिविधि में अटकलों की भाषा जानने की ज़रूरत है । सम्भावनार्थ, संदेहार्थ और संकेतार्थ का प्रयोग किया जा सकता है । संकेतवाचक उपवाक्यों का अभ्यास होता है ।
मुझे लगता है कि... मुझे लग रहा है कि यह...
ऐसा होगा ...
शायद ....
यह हो सकता है ...
यह होना चाहिए ...
अगर यह ऐसा हो तो ....

इस गतिविधि का एक परिवर्तन यह है कि दो समूह बनाकर विचार विमर्श किया जाए ।
पहला समूह अटकलें करेगा । "मुझे यह लगता है", "ऐसा होगा" , इस तरह की काल्पनिक भाषा का प्रयोग करेगा ।
दूसरा समूह कहेगा कि हमें यह मालूम है कि ऐसा ही हुआ था । उनकी भाषा में वर्तमान, अपूर्ण भूत, और सामान्य भूत का प्रयोग होगा ।

स्रोत: https://www.buzzfeed.com/hannahjewell/cats-that-think-theyre-liquids?utm_term=.fm11oZnY#.ayA70mKP

इस चित्र को (जो कुछ समय पहले वेब पर बहुत प्रचलित और लोकप्रिय था) देखकर इस तरह की गतिविधि करें। बहुत मज़ा आएगा !

**गतिविधि के बाद कुछ प्रश्न :**

- मैंने कहा कि भाषा शिक्षण में, रचनात्मकता और कल्पना के तत्व अक्सर अनदेखे होते हैं । आपके अनुसार ऐसा क्यों होता है ? क्या आप मुझ से सहमत हैं कि यह ग़लत है? क्यों हाँ या क्यों नहीं?
- शिक्षार्थी के कार्य, मोटे तौर पर, दो हैं: चित्र में जो वास्तव में दिखाई देता है, उसका वर्णन या चित्र के पहलुओं के बारे में अंदाज़ । विवरण के लिए और अटकलों के लिए क्या अलग-अलग भाषाई संसाधनों की आवश्यकता है ?

क्या आपने अपनी कक्षा में तस्वीरों का इस्तेमाल कभी किया है?
यदि हाँ, उनसे किस तरह की गतिविधियों या भाषा का उत्पादन हुआ ?
निम्नलिखित तस्वीरों को देखें । कक्षा में उपयोग करने के लिए क्या क्या सुझाव आप दे सकेंगे ?

CARLA CENTER FOR ADVANCED RESEARCH ON LANGUAGE ACQUISITION

Click each image for a larger view.

http://www.carla.umn.edu/lctl/development/photos.html

**गतिविधि 2**

चार चित्रों को देखें । दो मिनट में उनको जोड़कर एक ही कहानी बनाएँ ।

शिक्षार्थियों को सभी तस्वीरों को मिलाकर एक ही कहानी बनानी है । इसके लिए भाषा के कौनसे विभिन्न प्रकार का प्रयोग करना आवश्यक है?

तस्वीर के विवरणों को देखकर दिलचस्प प्रतिक्रियाओं का उत्पादन हो सकता है । यह बहुत महत्वपूर्ण है कि चित्र छात्रों के जीवन, अनुभव, और विचारों से जोड़े जाएँ । कहानी गतिविधि में यह ज़रूरी होता है । भाषा कक्षा के लिए इस तरह का संयोजन क्या लाभ दे सकते हैं ?

कथा बनाने से क्रियाओं के सभी अर्थ और काल के अभ्यास किये जाते हैं । खास तौर पर वर्तमान काल, भूत काल, भविष्यत काल में निश्चयार्थ का प्रयोग होता है ।

**गतिविधि 3 अदृश्य फ़ोटो**

आप कक्षा में कोरे काग़ज़ के एक पृष्ट से क्या कर सकते हैं ?
आप क्या कुछ सुझाव दे सकेंगे ?

मैं कहती रहती हूँ कि भाषा कक्षा में कल्पना और रचनात्मकता सबसे महत्वपूर्ण उपादान होते हैं ।
यह गतिविधि इसका सबसे अच्छा उदाहरण है ।

मैं हरेक शिक्षार्थी को कोरे काग़ज़ को एक पृष्ट देती हूँ ।
उनको समझाती हूँ कि उनके सामने जो है वह उनकी एक पसंदीदा व्यक्तिगत तस्वीर है ।
मैं अपने चित्र को दिखाती हूँ और उनसे उसका वर्णन करती हूँ । तस्वीर में क्या है और क्यों यह मेरे लिए सार्थक है, दोनों बताती हूँ ।

> मेरी पसंदीदा तस्वीरों में से यह एक है । पहाड़ों पर एक पेड़ वाली झोंपड़ी में मेरे बेटे और बेटी की फ़ोटो है । मेरे पति ने कुछ साल पहले यह फ़ोटो लिया था, जब बच्चे 10 और 6 साल के थे। वे पेड़ वाली झोपड़ी पर चढ़कर उस में खेल रहे थे । अंत में वे दोनों छोटी खिड़की के पास आकर उधर से बहार देखने आए थे, नीचे मेरे पति और मैं खड़े हुए थे । तस्वीर में बच्चे मुस्कुरा रहे हैं और उनकी आँखें चमक रही हैं ।
> वे बहुत मासूम और शांत लग रहे हैं। एक फ़्रेम में लगी यह तस्वीर मेरे कमरे की दीवार पर टँगी हुई है ।
> मैं मानती हूँ कि यह फ़ोटो मेरे बच्चों का झूठा चित्र देती है : वे वास्तव में बहुत सक्रिय बच्चे थे, और बदमाश भी !

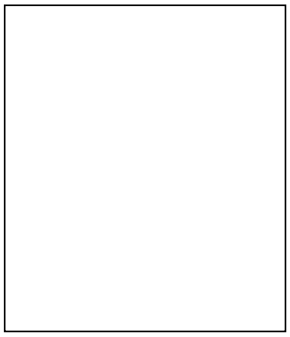

यहाँ अपनी फ़ोटो पेश करें !

**गतिविधि के बाद कुछ प्रश्न :**

इस गतिविधि में भाषा के समृद्ध उपयोगों का इस्तेमाल किया जाता है । आपके अनुसार क्यों यह गतिविधि इस संबंध में इतनी सफल होती है?
एक पत्रिका से ली गई तस्वीर के वर्णन से यह गतिविधि कैसे अलग है ? क्या आप इस गतिविधि के कुछ परिवर्तनों के बारे में सोच सकेंगे ? इस तरह रचनात्मक और कल्पनाशील गतिविधियां उन्नत शिक्षार्थियों के लिए प्रतिबंधित नहीं होनी चाहिए । निचले स्तर पर भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है । क्या आप इस से सहमत हैं ?
निचले स्तर के शिक्षार्थियों की रचनात्मकता और कल्पना को प्रोत्साहन देने के लिए कौन-सी गतिविधियों का डिज़ाइन हो सकता है?
इन गतिविधियों से क्या आपको कुछ नए विचार आए हैं ?

**गतिविधियों के परिवर्तन के कुछ सुझाव**

1. ब्लैकबोर्ड पर तस्वीरें लगाएँ ।
शिक्षार्थियों से कहानियां बनवाएँ ।
कहानियों का अभिनय करवाएँ ।
स्मार्टफ़ोन से उनके विडियो बनाएँ ।
शिक्षार्थियों को विडियो के फ़ाइल देकर उनसे संपादित करवाएँ ।

2. वयस्क शिक्षार्थियों के साथ
हर शिक्षार्थी से कहें कि वह अपने बचपन की एक तस्वीस लेकर कक्षा में आएँ ।
मेज़ पर सब तस्वीरों को मिला दें ।
फिर विचार-विमर्श करें : कौन किसके जैसा लग रहा है ?

3. शिक्षार्थियों से पूछें कि आपके बटुए/ स्मार्टफोन में कोई तस्वीर है ?  ज़्यादातर लोगों के पास कोई ना कोई फ़ोटो होती है : पति/पत्नी/प्रेमिका/प्रेमी, कोई भी हो जो उनके लिए महत्वपूर्ण है । इस कारण से जो भाषा उत्पादित होती है , वह भावनात्मक रूप से भरी हुई होती है ।
जब भी हमें किसी से कोई व्यक्तिगत लगाव होता है, तो हम सच में बताना चाहेंगे कि यह हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है ।
इसीलिए इस गतिविधि में भाषा का एक ऐसा पहलू है जो अक्सर व्याकरण अभ्यासों में नहीं मिलता ।

4. आप बिना दिखाए एक चित्र का वर्णन करें ।
शिक्षार्थियों से कहें कि जो वर्णित किया गया है उसका चित्र बनाएँ ।
इसके बाद चित्र दिखाएँ ।

इस तरह की गतिविधि में यह आवश्यक है कि वर्णन करनेवाले आदमी के पास उच्च भाषाई क्षमता हो और सुननेवाले बहुत ध्यान से सुनें ।

**चित्रों से और गतिविधियाँ**

**1. लोग और जगहें**

(स्रोत: https://www.youtube.com/watch?v=gsPJfkGvB4Q)

जब हम लोगों और स्थानों की तस्वीरों का प्रयोग करते हैं तो सिर्फ़ वर्णन करने की गतिविधि तक नहीं सीमित रहना चाहिए । शिक्षार्थियों से ज़रूर कहें कि वे वर्णन करें । इसके बाद तो और प्रश्न पूछे जा सकते हैं , जैसे :

तुम्हारे अनुसार यह कौन है ?
क्या वह आमिर है ?
उसका काम क्या है ?
उसके हाथ में क्या है ?
उस वस्तु से वह क्या कर रहा है ?
यह फ़ोटो कहाँ खिंचा गया ?

एक जगह के फ़ोटो लेकर इस तरह के प्रश्न पूछे जा सकते हैं :

(स्रोत: https://erasmusu.com/en/erasmus-pecs/room-for-rent-student/student-room-in-pecs-173476)

यह किसका कमरा है ?
यह कमरा देखकर आप इन लोगों के बारे में क्या बता सकेंगे ?
इस कमरे में कौनसी गतिविधियाँ की जाती होंगी ?
वह इसी तरह क्यों सजा हुआ है ?
इस कमरे में आप होते तो उसको कैसे सजाना चाहते ?
खिड़की से क्या दिखाई देता ?

**2. आप तस्वीर का हिस्सा होते !**

(स्रोत: http://carla.umn.edu/lctl/VPA/Basque/restaurantpictures/camarera.html)

चित्र देखें
आप कल्पना करें कि इस तस्वीर का एक पात्र हैं (आप चुन सकते हैं कि कौन हैं )

आप कौन हैं ?
चित्र में दूसरे लोगों से आपका क्या सम्बन्ध है ?
फ़ोटो किसने खिंची ?
फ़ोटो कहाँ खिंची गई ?
किस अवसर पर ?
फ़ोटो खींचे जाने से पहले आप क्या कर रहे थे ?
फ़ोटो खींचे जाने के बाद आपने क्या किया ?
इस फ़ोटो की एक प्रति किस के पास है ?

**3. फ़ोटो किसने खिंची ?**

(स्रोत: http://verkehrsrecht-eschwege.de/verkehrsunfall/)

जोड़े में निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार-विमर्श करें

फ़ोटो किसने खिंचा ?
फ़ोटो कहाँ और कब खिंची गई ?
फ़ोटो क्यों खिंची गई ?
फ़ोटो किस के लिए खिंची गई ?
फ़ोटो के फ्रेम से बाहर क्या है ?
अख़बार में यह फ़ोटो देखकर आप पर क्या प्रभाव हुआ ?
आप प्रोफेशनल फ़ोटोग्राफ़र होते तो इस फ़ोटो को कैसे बदलते ?

**4. चित्र में प्रवेश करना**

(स्रोत: http://www.lastampa.it/2015/10/28/cronaca/incendio-al-campo-rom-un-gesto-disumano-di-odio-etnico-T9zKjgomvydRP8wAG8AudO/pagina.html)

इस तरह के चित्र से कई गतिविधियाँ की जा सकती हैं ।

मन लीजिए आप इस आग के दर्शक हैं । जर्नल का एक पृष्ट लिखें, डायरी जैसे ।
चित्र में दो व्यक्ति हैं, उन के बीच का संवाद लिखें ।
आप रिपोर्टर हैं । चित्र में दिखाई गई घटना के बारे में रिपोर्ट लिखें ।
चित्र में दिखाई गई घटना के बारे में कविता लिखें ।

आप समाचारपत्र के संपादक हैं ? जिस लेख में यह चित्र है उसका शीर्षक क्या होगा ? इस चित्र के लिए कौनसा अनुशीर्षक आप लिखेंगे ?

**5. फ़ैमिली फ़ोटो एल्बम**

शिक्षार्थियों से कहें कि वे फॅमिली फ़ोटो लेकर कक्षा में आएँ । छोटे समूह बनाएँ । अपने अपने परिवारवालों के बारे में एक दुसरे को कुछ बता दें ।
शिक्षार्थियों से कहें कि वे एक बड़े रिश्तेदार की एक तस्वीर लेकर कक्षा में आएँ । चित्र इसका प्रवेश बिंदु होगा कि वे उस व्यक्ति का शारीरिक वर्णन करें, उनकी व्यक्तित्व के बारे में बताएँ, इस रिश्तेदार से अपने संबंधों का वर्णन करें ।
शिक्षार्थियों से कहें कि वे एक परिवारिक उत्सव जो उनके लिए महत्वपूर्ण हो कि एक तस्वीर लेकर कक्षा में आएँ । छोटे समूह बनाएँ । उस अवसर का वर्णन कर दें : क्या हुआ ? उनके लिए यह क्यों महत्वपूर्ण था ?

**6. आर्ट गैलरी में**

कलात्मक चित्र भाषा के रचनात्मक उपयोग के इस्तेमाल के बहुत ही अच्छे स्त्रोत हैं । विशेष रूप से आधुनिक कला में अक्सर उपयोगी हैं ।

तस्वीर को देखें ।

मार्क शगल – *थे ब्लू सर्कस*
(उपदेशात्मक उद्देश्य के लिए उचित उपयोग)

जोड़े बनाएँ । चित्रकला का अर्थ क्या है इसका निर्णय करने की कोशिश करें ।
विशेष रूप से, निम्नलिखित तत्वों का महत्व क्या है? आपको क्या लगता है ?

- मछली
- कलाबाज़ी का झूले का कलाकार
- चंद्रमा
- घोड़ा

- मुर्गा

जो रंग और आकार कलाकार ने चुना उनका अर्थ क्या है ?
नीचे दाहिने कोने में जो आंकड़ा है, उसका अर्थ क्या है ?

अपने चयनों में रचनात्मक होना!

**7. बुलबुलों को भरें !**

यह गतिविधि आसान नहीं है । वह आसान लगती है लेकिन मेरा सुझाव यह है कि केवल इन्टर्मीडिएट या एडवांस्ड विद्यार्थियों के साथ इसका प्रयोग करें ।

एक कार्टून के डायलोग के बुलबुले में से लिखित भाषा को मिटा दें ।
शिक्षार्थियों के जोड़े बनाएँ । शिक्षार्थियों का कार्य यह है कि वे संवादों की रचना करके बुलबुले में अपने वार्तालाप भरें ।

शिक्षार्थियों का अभ्यास सिर्फ़ संवादों को बनाना नहीं है, लेकिन ख़ास तौर पर अपने साथियों के साथ कहानी तय करने का है ।
समापन गतिविधि यह हो सकती है : जोड़े क्लास के दूसरे शिक्षर्थियों को अपने संवाद सुनाएँ या उन्हें दीवार पर प्रदर्शित करें ।

(स्रोत: www.gocomics.com; उपदेशात्मक उद्देश्य के लिए उचित उपयोग)

गतिविधि थोड़ी-सी आसान बनाने के लिए कुछ परिवर्तन इस प्रकार हो सकते हैं :

पहले फ़्रेम से भाषा मत मिटाएँ
अंतिम फ़्रेम से भाषा मत मिटाएं
दोनों पहले और आखिरी फ़्रेम से भाषा मत मिटाएँ
कार्टून के संवाद के कुछ शब्द या वाक्यांश दें ।

ऊपर के किसी भी प्वाइंट का इस्तेमाल कर सकते हैं या उनमें से किसी का संयोजन कर सकते हैं ।
निचले स्तर के विद्यार्थियों के लिए आप सिर्फ़ उसे पढ़ने का कार्य कर सकते हैं ।

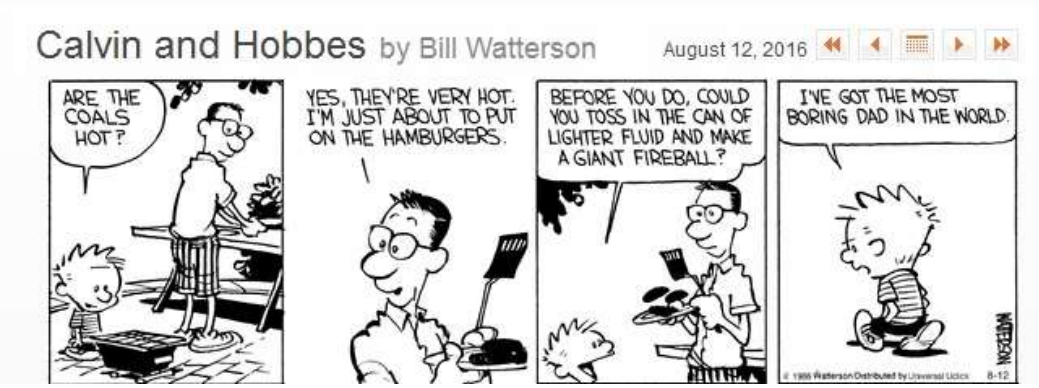

(स्रोत: www.gocomics.com; उपदेशात्मक उद्देश्य के लिए उचित उपयोग)

**अंत में**

शिक्षार्थियों को इस विचार से मुक्त कर दें कि उनको सब कुछ ठीक से, त्रुटियों के बिना , करना है ।
जो हम करवाना चाहते हैं यह है कि वे अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकें । विचार पागलपन भरें हों, तो भी कोई बात नहीं, जब तक शिक्षार्थियों के सामने यह स्पष्ट हो कि वे क्या बोलना चाहते हैं और उनके पास यह विचार बताने की भाषा हो, तब तक सब ठीक है ।
ज़िन्दगी इसी तरह होती है, नई चीजों का सृजन इसी तरह होता है ।

इस पाठ में मैंने कुछ चित्रों से गतिविधियों की बात की जो मेरे अनुसार शिक्षार्थियों को सुनने और बोलने को प्रोत्साहित करने में बहुत उपयोगी होती हैं ।
वे सभी अन्य सामग्री के साथ एकीकृत की जा सकती है ।
वे बहुत अच्छी (pre-reading, pre-listening या pre-viewing) पढ़ने, सुनने या देखने के पहले की गतिविधियाँ हो सकती हैं, जब वे विषय-वस्तु की दृष्टि से लिखित या मौखिक लेखों से जोड़ी जाएँ ।
इनको बनाने में मैं मुख्य रूप से कक्षा में बोलने की गतिविधियों में उनके उपयोग के बारे में सोच रही हूँ , जहाँ शिक्षार्थी जोड़ों में या छोटे समूहों में हों । लेकिन जिन सवालों का सुझाव मैं देती हूँ वे लिखित गतिविधियों के लिए भी एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में इस्तेमाल किए जा सकते हैं ।

## *संदर्भग्रंथ सूची*

Maley, A., Duff, A., & Grellet, F. (1981). *The Mind's Eye*. Cambridge: Cambridge University Press.
Wright, A. (1989). *Pictures for Language Learning*. Cambridge University Press.
Wright, A. (1985). *1000 Pictures for Teachers to Copy*. London: Longman.

Formatted: English (U.S.)

# 11. हिंदी कक्षा के हेतु सामग्री का विकास :

## इकाई 5 – 'साहित्य' के प्रयोग से

भाग 1

**पाठ से पहले कुछ प्रश्न :**

क्या आपने कभी कक्षा में साहित्यिक ग्रंथों का इस्तेमाल किया है?
वे किस प्रकार के लेख थे ?
छात्रों ने साहित्यिक ग्रंथों के साथ किस प्रकार के कार्य किए ?
सामान्य तौर पर, आपको क्या लगता है कि क्या भाषा कक्षा में साहित्य के लिए जगह है ? क्यों हाँ या क्यों नहीं?

कक्षा में सरल कविताओं का उपयोग करने के बारे में आप क्या सोचते हैं ?

बहुत शिक्षकों को भाषा कक्षा में साहित्य का प्रयोग करने से डर लगता है । वे सोचते हैं कि वह ज़्यादा मुश्किल होता है, या यह कि साहित्यिक ग्रंथों की उनकी समझ ग़लत या अपर्याप्त है । इसका कारण यह है कि हमें साहित्य ऐतिहासिक या आलोचनात्मक पद्धति से सिखाया गया है । यहाँ मैं अलग तरह की पद्धति पेश करनेवाली हूँ, जो बहुत शिक्षकों से भाषा कक्षा में सफलता से प्रयोग की गई है ।
मैं "ग़लत" बनाम "सही" की व्याख्याओं की बात नहीं करनेवाली हूँ । मैं साहित्य के कामों के प्रति शिक्षार्थियों की प्रतिक्रियाओं को महत्त्व देनेवाली हूँ । मुझे टेक्स्टों के उपयोग के इंटरैक्टिव तरीक़े में रूचि है और मैं हमेशा "सम्मान के साथ" टेक्स्टों से व्यवहार नहीं करनेवाली हूँ ।

साहित्य क्लासिक्स, 20वीं/21वीं सदी के साहित्य में कविता और उपन्यास बहुत होते हैं, जिनकी भाषा मानक और सरल होती है ।
टेक्स्ट पूज्य या पावन नहीं हैं: हम उनके हिस्से का उपयोग कर सकते हैं, हम उनकी व्यवस्था कर सकते हैं, उनको रूपान्तरित करना: हमारा उद्देश्य साहित्यिक आलोचना नहीं, भाषा शिक्षण है ।

Formatted: Font: (Default) MS Mincho, Bold, Complex Script Font: MS Mincho, Bold, English (India)
Formatted: Font: Bold, Complex Script Font: Bold, English (India)
Formatted: English (India)
Formatted: English (India)
Formatted: English (India)
Formatted: English (India)

**गतिविधि 1**

टेक्स्ट से खेलना !

एक एक करके टेक्स्ट के शब्द बदलना

**रात में गाँव**

झींगुरों की लोरियाँ
सुला गयीं थी गाँव को,
झोपड़े हिंडोलों सी झुला रही हैं
धीमे धीमे
उजली कपासी धूम डोरियाँ।

(अज्ञेय)

2016 में कोल्हापुर विश्वविद्यालय के "हिन्दी भाषा तथा साहित्य का शिक्षण (विदेशी छात्रों के संदर्भ में)" शीर्षक वाले GIAN प्रोग्राम में पहली रात में गाँव कविता के जो पुनर्लेखन बनाया गया वह यहाँ उदाहरण के लिए प्रस्तुत है:

**रात में माँ**

माँ की लोरियाँ
सुला रही थी बच्चे को,
झूला हिंडोलों सी झुला रही हैं
धीरे धीरे
उजली रेशम धूम डोरियाँ।

उस पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले सभी लोगों को हार्दिक धन्यवाद!

**गतिविधि के बाद कुछ प्रश्न :**

इस तरह की गतिविधियों में हम गंभीरता से यह विचार करते हैं कि "टेक्स्ट पूज्य या पावन नहीं हैं" ।
आप इस गतिविधि के बारे में क्या सोचते हैं?
उसका क्या फ़ायदा और नुक़सान है?
अंतिम कविता का "संस्करण" थोड़ा सा पागलपन भरा है: फ़र्क पड़ता है क्या? क्या यह एक दिक़्क़त है?
क्या आप ग़ैर-साहित्यिक ग्रंथों के साथ इस तरह की गतिविधि करने की कल्पना कर सकते हैं?
उदाहरण के लिए, समाचारपत्र की एक छोटी रिपोर्ट का उपयोग करने में क्या कोई फर्क होगा ?

आप इस गतिविधि में बदलाव के कुछ सुझाव दे सकते हैं?

**कुछ और प्रश्न :**

भाषा सीखने का लक्ष्य क्या है?
आपके शिक्षार्थी जब आपकी सिखाई हुई भाषा कुछ जानते होंगे तो वे इसके साथ क्या करेंगे ?
इस सवाल का जवाब क्या कक्षा में ग्रंथों और गतिविधियों के चयन को प्रभावित करेगा ?

मज़ा मज़ाक नहीं है : खेलना अनुचित नहीं है
ग्रंथों से मत डरिए
आप ग्रंथों को हमेशा समझने की कोशिश करने के बजाय उनका उपयोग कर सकते हैं

यह गतिविधि अख़बार के लेख से की जा सकती है ।
पुराने अर्थ से नया अर्थ निकालने की कोशिश करना ।
यह बहुत उपयोगी है क्योंकि व्याकरण के स्तर पर हम देख सकते हैं कि किसी भी लेख का नर्माण कैसे होता है और वह कैसे बदला जा सकता है ।

इस गतिविधि से बच्चों की शब्दों को मिलाने और जोड़ने की शक्ति को, जो एक तरह से कविता करना ही होती है, हम फिर से बाहर ला सकते है, जबकि वयस्क होने पर हमें ऐसा नहीं लगता
कि हमारे अंदर यह शक्ति मौजूद है ।

टेक्स्ट को प्रस्थान-बिंदू होना चाहिए ।
जिस सामग्री का प्रयोग कक्षा में हम करते हैं, वे कक्षा में हम जो भी करते हैं, इसका प्रस्थान बिंदू हो सकती है ।

हमारा लक्ष्य यह नहीं कि हम लेख, या शब्दावली सीखें, बल्कि कि हम इन लेखों से आकर्षित होकर इस शब्दावली को असल ज़िंदगी में प्रयोग में लाएँ ।
भाषा का लक्ष्य यह नहीं कि हम सामान्य भूत, या शब्दावाली सीखें, बल्कि यह है कि हम किसी काम के लिए भाषा का प्रयोग करें, कि हम सोचें “यह देखो, यह मुझे पसंद आता है, आपके साथ आदान-प्रदान करना चाहूंगी !”

जितना अधिक हम कक्षा में इस तरह के लक्ष्यों को ला सकते हैं, उतना प्रामाणिक अनुभव होगा । भाषा के शिक्षकों के रूप में हमारा लक्ष्य यह है कि कक्षा में शिक्षार्थियों के अनुभव की गुणवत्ता में सुधार हो । हम कक्षा में व्याकरण पढ़ाने के लिए नहीं होते, लेकिन "कक्षा में अनुभव की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए होते हैं" ।
इसमें मज़ा भी है, चुनौती भी, और रचनात्मकता भी ।
अभी एक समस्या यह है कि कालेज की ज़्यादातर कक्षाओं का डिज़ाइन परीक्षण के लिए किया जाता है ।
अधिकांश छात्रों को उम्मीद है कि भाषा की अपेक्षा को पूरा करके मुझे अच्छा ग्रेड मिलेगा ।
हम कैसे मूल्यांकन करते हैं?

मूल्यांकन प्रथाओं पर पुनर्विचार करना चाहिए ।
यह भी हो सकता है कि इन गतिविधियों के लिए निर्धारित-समय के एक हिस्से का उपयोग किया जाए ।

हम अपने शिक्षण को कौनसी दिशा देना चाहते हैं?
हम सभी कुछ हद तक अध्यापन से जुड़े ढाँचे और सीमाओं से निराश हैं, जो हमारी सोच के अनुसार तय नहीं होती, लेकिन ऊपर से लगाई जाती हैं । लेकिन फिर भी कहीं हमारे पास एक थोड़ी गुंजाइश होती है, जहाँ हम अलग तरह से काम कर सकते हैं । यह भाषा शिक्षण में क्रांति लाना नहीं है । लेकिन हमारी बाध्यताओं के बावजूद भी हमें यह पता होना चाहिए कि जिस दिशा में हम पाठ को ले जा रहे हैं वह लोगों के लिए अच्छी है या नहीं ।
लेकिन हमारे बाध्यताओं के भीतर ही यह अच्छा होता है कि हमें यह मालूम हो कि हम किस दिशा में जा रहे हैं ।

**गतिविधि 2**

हमारे विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि हिंदी भाषा के इतिहास की उन्हें कुछ जानकारी हो । हिंदी और उर्दू दोनों उत्तर भारत के दिल्ली क्षेत्र में बोली जाने वाली "खड़ी बोली" से विकसित हुई हैं । हिंदी और उर्दू समान मूल की सहभागी हैं । इसके आलावा व्याकरण और बोलचाल की शब्दावली का बड़ा हिस्सा एक ही है । लेकिन वे लिपि, उच्च शब्दावली, और सांस्कृतिक वातावरण के संदर्भ में दो अलग-अलग भाषाओं के रूप में विकसित हुई हैं ।
यह गतिविधि हिंदी उर्दू की शब्दावली पर केंद्रित है । यह बहुत उपयोगी है क्योंकि इससे न केवल भाषा के विभिन्न रजिस्टरों को पेश किया जा सकता है बल्कि हमारे शिक्षण का एक केंद्रीय तर्क भी स्पष्ट और पक्का किया जा सकता जो है: दक्षिण एशिया का इतिहास और संस्कृतियाँ सक्रिय और गतिशील हैं ।

कविता पढने से पहले बुनियादी शब्दावली की भूमिका बाँधें और कुछ विचार विमर्श करें ।
हिंदी - उर्दू में “poetry” के लिए किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है ?
क्या आपको कविता अच्छी लगती है ? हाँ? नहीं? उसको स्पष्ट करें ।
आपका/आपकी प्रिय कवि/कवयित्री कौन है ?
आपकी प्रिय कविता कौनसी है ?
आपकी भाषा के समसे मशहूर कवि/कवयित्रीयां कौन हैं ?

निम्नलिखित कविता उर्दू कवि फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ द्वारा लिखी गई है ।
प्रत्येक छात्र को एक-एक पंक्ति बाँट दें । एक एक करके पूरी कविता सुनाने दें ।
जिन छात्रों को सबसे मुश्किल पंक्तियाँ मिलीं हैं उनको शब्दकोष प्रदान करें । फिर उनको अन्य छात्रों को शब्दावली समझानी होगी । प्रत्येक पंक्ति को नंबर देकर छात्रों से क्रमरहित सुनवाएँ ।
छोटे समूहों को बनाकर शिक्षार्थी अज्ञात शब्दावली ठीक से सीख लेंगे । वे उर्दू शब्दों के हिंदी समकक्ष के लिए शब्दकोश देखेंगे ।
पूरी कविता हिंदी शब्दावली में लिख देंगे ।

## बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे

बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे
बोल ज़बाँ अब तक तेरी है
तेरा सुत्वाँ जिस्म है तेरा
बोल कि जाँ अब तक तेरी है
देख कि आहन-गर की दुकाँ में
तुंद हैं शोले सुर्ख़ है आहन
खुलने लगे क़ुफ़्लों के दहाने
फैला हर इक ज़ंजीर का दामन
बोल ये थोड़ा वक़्त बहुत है
जिस्म ओ ज़बाँ की मौत से पहले
बोल कि सच ज़िंदा है अब तक
बोल जो कुछ कहना है कह ले!

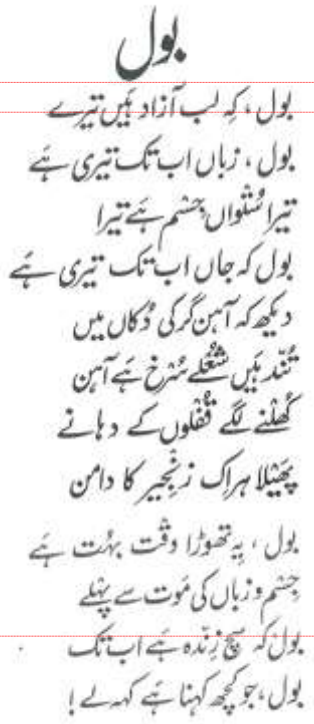


स्रोत : https://urduwallahs.wordpress.com/2012/09/26/bol-ke-lab-azaad-hai-tere/

अंत में संगीतावली कविता सुनाएँ।

टीना सानी https://www.youtube.com/watch?v=FbwcUsWTy_I

शबाना आज़मी https://www.youtube.com/watch?v=EvRqxXQAa98

**पाठ के बाद कुछ प्रश्न :**

मैंने कहा कि टेक्स्ट पूज्य या पानाव नहीं हैं इसका क्या मतलब है ? क्या आप इससे सहमत हैं या असहमत ?

मैंने कहा कि आधुनिक साहित्य (20वीं और 21वीं सदी के ग्रंथ) क्लासिक्स से शिक्षार्थियों के लिए अधिक सुलभ ग्रंथों को प्रदान कर सकता है। आपके अनुसार हिंदी भाषा पढ़ाने के लिए कौनसे लेखक हैं जो छात्रों के लिए समझने में सबसे आसान हैं और जिनके लेखन से काम करना सबसे आसान हो सकता है ?

मैंने कहा कि हमारा लक्ष्य यह है की हम "कक्षा में अनुभव की गुणवत्ता में सुधार करें" । यह विचार डिक आलराइट (Dick Allwright) द्वारा खोजपूर्ण अभ्यास (Exploratory Practice, EP) के सिद्धांत से सम्बंधित है । क्या आप इससे सहमत हैं ?

इस तरह का परिप्रेक्ष्य सामग्री और गतिविधियों के चयन को कैसे प्रभावित कर सकता है?
कई शिक्षक मूल्यांकन के दबाव में काम करते रहते हैं । हमने इसकी तरफ़ इशारा किया । जो गतिविधियाँ इस पाठ में दिखाई गई हैं, क्या आपके पास उनका इस्तेमाल करने के लिए गुंजाइश है ?

इन गतिविधियों में अंतर्निहित सिद्धांतों से भाषा सीखने के मूल्यांकन के बारे में आपके विचार कैसे बदले हैं ?

## *संदर्भग्रंथ सूची*

Allwright, Dick, and Judith Hanks. 2009. *The developing language learner. An introduction to exploratory practice*. Palgrave Macmillan: Basingstoke, New York

Formatted: English (U.S.)

## 12. हिंदी कक्षा में व्यवहारमूलक तथा संवादसाधित शिक्षण

व्यवहारमूलक तथा संवादसाधित / Pragmatics की एक परिभाषा यह है

उपयोगकर्ताओं के दृष्टिकोण से भाषा का अध्ययन, विशेष रूप से जो भाषा-संबंधित चुनाव वे करते हैं... और संचार के दौरान उनके भाषा का प्रयोग करने का दूसरे प्रतिभागियों पर जो प्रभाव पड़ता है, उसका अध्ययन । [6]

पारस्परिक संचार के दौरान वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए "चुनाव" और "प्रभाव" के पहलू विशेष रूप से प्रासंगिक हैं।

भाषाएँ इस्तेमाल करने के लिए सिखी जाती हैं । सामाजिक-व्यावहारिक संदर्भ के ज्ञान के बिना संचार क्षमता मौजूद नहीं है। व्यावहारमूलक क्षमता यह भाषा के माध्यम से कार्य करने की क्षमता देती है । सामाजिक संपर्क में जो विभिन्न कार्य भाषा करती है उनमें व्यावहारमूलक क्षमता स्पष्ट होती है । अलग अलग स्थितियों में विभिन्न रजिस्टरों का उपयोग करना चाहिए। इसलिए व्यावहारमूलक क्षमता समाज-भाषाविज्ञान क्षमता और सांस्कृतिक क्षमता से जुड़ी हुई है ।

भाषण कार्य (speech act) क्यों सिखाया जाना चाहिए?

सभी भाषाओं के शिक्षार्थियों को भाषण कार्य द्वारा संचारित किया गए अभीष्ट अर्थ को समझने में या सिखाई जानेवाली भाषा में भाषण कार्य के उत्पादन में उपयुक्त भाषा और व्यव्हार का उपयोग करने में कठिनाइयाँ आती हैं ।

शोध से पता चला है कि अच्छे भाषण कार्य करने के लिए और इसी तरह देशी वक्ताओं के साथ बातचीत तथा अन्योन्यक्रिया में सुधार करने के लिए कक्षा में भाषण कार्यों पर शिक्षण शिक्षार्थियों की मदद कर सकता ।

विदेशी भाषा कक्षाओं में कुछ भाषण कार्य सिखाए जाते हैं लेकिन अभी तक ज़्यादातर सामग्री पाठ्यपुस्तक लेखकों की अंतर्ज्ञान के आधार पर लिखी गई हैं । पाठ्यपुस्तकों से भाषण कार्य सीखना व्याकरण की दृष्टि से सही है, लेकिन वह असली भाषा और देशी वक्ताओं से वास्तविक बातचीत के संदर्भ में असिद्ध हो सकता है।

एक और समस्या यह है ।अकसर भाषा का उपयोग अवचेतना के स्तर पर होता है और इसलिए भाषा के वक्ता यह बता सकते हैं कि क्या "कहना चाहिए," लेकिन लोग कैसे वास्तव में बातचीत करते हैं उसकी एक सटीक, व्यापक, या निष्पक्ष तस्वीर दे नहीं सकते ।

उदाहरण के लिए, एक पाठ्यपुस्तक लेखक एक ऐसी स्थिति के बारे में लिख सकते हैं जिसमें एक सोलह-सत्रह साल की एक लड़की अपने दोस्ते से हवाई अड्डे पर मिलती है और कहती है: “नमस्ते प्रकाश । आपकी फ्लाइट कैसी थी ? क्या यह झोला नया है ?” लेकिन असली संवाद में शायद वह कुछ ऐसा कहेगी: “हे प्रकाश ! फ्लाइट ठीक थी ? अरे, यह झोला तो नया लग रहा है … अभी लिया ?”

[6] “The study of language from the point of view of users, especially the choices they make … and the effects their use of language has on other participants in the act of communication” (Crystal 1997: 301).

Formatted: English (U.S.)

Formatted

Formatted

Formatted

Formatted: English (U.S.)

हिन्दी में एक और उदाहरण:

A: यह कुर्ता बहुत सुंदर है!
B: धन्यवाद। मुझे ख़ुशी है कि तुमको पसंद आया।

हालँकि, असली ज़िन्दगी में जब कोई हमारी किसी चीज़ की तारीफ़ करता है तो शायद हम कहते हैं:

A: अरे, यह कुर्ता तो बहुत सुंदर है।
B: अच्छा ? अच्छा लग रहा है क्या ? मैंने फ़ैब-इंडिया से लिया।
या
B: यह कुर्ता ? अरे यह तो बहुत पुराना है। आज कुछ और नहीं मिल रहा था इसलिए पहन लिया।

हिंदी भाषा के धन्यवाद मानदंडों को समायोजित करने में विदेशी शिक्षार्थियों को अकसर परेशानी है, क्योंकि दक्षिण एशियाई भाषाओं के समाज में सामान्य रूप से परिवार के सदस्यों या निजी दोस्तों के बीच, या व्यापारिक लेनदेन में,
कृतज्ञता की कोई मौखिक अभिव्यक्ति नहीं होती।
दक्षिण एशिया के मराठी और हिंदी जैसे भाषण समुदायों में, सार्वजनिक घोषणाओं में (उदाहरण के लिए, रेलवे, बस टर्मिनलों, सार्वजनिक सम्मेलनों में) कृतज्ञता के भाव का उपयोग एक बहुत औपचारिक तरीक़े से किया जाता है। लेकिन (पाश्चात्य ढंग की स्थितियों को छोड़कर) जिन परिस्थितियों में वस्तुओं का विनिमय होता उन में कृतज्ञता के किसी भाव की अभिव्यत्की होती, क्यों कि इस तरह के एक लेनदेन में दोनों पक्षों को लाभ होता है और कृतज्ञता की कोई जरूरत नहीं (आप्टे, 1974, पृ. 69)।
इसी तरह, परिवार के सदस्यों या निजी दोस्तों से बातचीत में, कृतज्ञता की कोई मौखिक अभिव्यक्ति नहीं होती। इसका कारण यह है कि परिवार के सभी सदस्यों को विशिष्ट अनिवार्य भूमिकाओं को निभाना होता है। इस तरह आपसी सहयोग पर केन्द्रित समाज में कृतज्ञता की किसी मौखिक अभिव्यक्ति की जगह नहीं। निजी दोस्तों के बीच बातचीत परिवारिक अंतरंगता का विस्तारण मानी जा सकती है। इसीलिए मौखिक कृतज्ञता प्राप्त हुए उपकार के लिए उचित भुगतान नहीं है (आप्टे, 1974, पृ. 70)।

इसी तरह की परेशानी एक विनम्रता और दायित्व की भावना का संदेश देने के लिए अनुरोध करते समय होती है। अंग्रेजी शब्द “please”, इतालवी “per piacere”, जर्मन 'Bitte' आदि का प्रयोग बहुत अनौपचारिक और सामान्य होता है। हिंदी में 'कृपया' तो सिर्फ औपचारिक परिस्थितियों में उपयोगित होता है। संभाव्य भविष्यत्, परोक्ष आज्ञार्थ (दीजिएगा), या आदरवाचक शब्दों के साथ 'कृपया' का प्रयोग नहीं किया जाता। लेकिन विदेशी शिक्षकों को 'कृपया' बिना लगाए ऐसा लगेगा कि उनका अनुरोध बदतहज़ीब और अविनीत है। इसी तरह, हम विदेशी लोग हमेशा क्षमा/माफ़ी मांगते रहते हैं, इसीलिए नहीं कि हमें अफ़सोस/खेद का भाव है, या कि आपको हमारी किसी ग़लती को माफ़ करना है, लेकिन हमारी भाषा में बातचीत इसी तरह होती। यह

बहुत अजीब लगता है जब हम किसी से बात करते समय अपनी आम भाषा में औपचारिक शब्दों का इस्तेमाल करते ।
दूरसी तरफ, विदेशी लोग कभी कभार अपनी प्रसंभाषी को अजीब या भी अशिष्ट लग सकते हैं । लेकिन जो अनुचित व्यवहार लगता है वह वास्तव में प्रतिक्रिया-निरक्षरता (response illiteracy) थी।

भाषा शिक्षक होने के कारण, मैंने लंबे समय से महसूस किया है कि एक भाषा के शब्दों को जानना उसको बोलने का सिर्फ एक हिस्सा है। एक संचारात्मक कार्य को किस तरह समझना चाहिए, यह जानना भी उतना ही महत्वपूर्ण है । और यह स्पष्ट रूप से सिखाया जाना चाहिए। इसलिए, मैं इसकी पढ़ाई नियमित रूप से कक्षा के अनुभव का एक हिस्सा बनाती हूँ ।

गतिविधि 1. ई-मेल से अनुरोध करना

स्तर: इंटरमीडिएट/एडवांस्ड
संसाधन: सभी छात्रों और शिक्षकों को ई-मेल का उपयोग (कक्षा में या कक्षा के बाहर)
लक्ष्य: उचित लिखित अनुरोध करने की रणनीतियां विकसित करना

विधि

1. होमवर्क के रूप में ई-मेल से अनुरोध भेजना
    a. छात्रों से कहें कि एक संदेश मुझे भेजना है जिसमें वे किसी भी उपयुक्त विषय (उदाहरण के लिए, कक्षा में भविष्य गतिविधि, एक कक्षा पार्टी है, किसी का काम स्पष्टीकरण) के बारे में अनुरोध करें ।
    b. एक तिथि निर्धारित करें : कम से कम एक सप्ताह का समय दें इसीलिए कि अनुरोध प्रामाणिक यानी उनके अपने हों ।निर्धारित तिथि के पूर्व पाठों में अनुरोधों के संकेत दे दें । उदाहरण के लिए, एक नई गतिविधि के बाद, आप पूछ सकते हैं "क्या आज की गतिविधि उपयोगी हुई ? क्या आप किसी अगले पाठ में फिर से या करना चाहेंगे ? यदि हाँ, तो यह गतिविधि कैसे बेहतर की जा सकती है ? अगर आपके कोई सुझाव हों तो मेल कीजिएगा ।")
2. वर्कशीट बनाना
    - सभी अनुरोधों को छाँटें । इन में से कुछ चुनें जिनसे आसानी से समझानेवाले अंक समझाए और सिखाए जा सकते हैं ।
    - यदि उपलब्ध है तो वर्कशीट पर सकारात्मक उदाहरण मॉडल के रूप में दिखाएँ ।
3. अनुरोध संदेशों का विश्लेषण
    - वर्कशीट बाँटें । प्रत्येक छात्र से औचित्य के अनुसार अनुरोधों का मूल्यांकन करवाएँ ।
    - समूह बनाएँ । छात्र एक दूसरे की रेटिंग तुलना कर सकते हैं।
    - शिक्षार्थियों को रेटिंग को समझाना होगा : वे कम से कम एक ऐसा संकेत बताएँ जिससे फैसला करने में उनको मदद मिली ।

- इसके दौरान छात्रों के बीच चक्कर लगाएँ : इसी तरह आप एक त्वरित आंकलन (quick estimate, rapid assessment) कर सकेंगे ।
- इस पर ध्यान दें कि शिक्षार्थी अंतरसांस्कृतिक मुद्दों का सामना करने के लिए कैसे अपनी मातृभाषाओं के व्यावहारिक नियमों के आधार पर स्पष्टीकरण का उपयोग करते हैं ।
- कक्षा समूह के रूप में वर्कशीट पर विचार विमर्श करें। छात्रों के मूल्यांकन और स्पष्टीकरण सुनने के बाद अपना रेटिंग प्रस्ताव करके अपने विकल्प और चुनाव के कारणों को समझाएँ ।

4. अनुरोध संदेश का संशोधन

- जो शिक्षार्थियों ने चर्चा में सिखा है उसके के आधार पर समूहों में चुने संदेशों को संशोधित करवाएँ ।
- प्रत्येक समूह दूसरे शिक्षार्थियों को संशोधित संदेशों में से एक बताएँगे और समझाएँगे ।

इस गतिविधि के लिए ई-मेल इसी वजह चुना गया है कि आजकल संस्थागत सेटिंग्स में संचार का एक पसंदीदा माध्यम होता है । इसके आलावा, शिक्षक आसानी से शिक्षार्थियों के संदेशों को इकट्ठा और संपादित कर सकेगा ।

इस गतिविधि से जो सीखेंगे है वह स्कूल सेटिंग में तुरंत उपयोगी होगा ।

छात्रों को यदि व्यावहारिक गतिविधियों का अनुभव नहीं है, तो संदेशों का विश्लेषण करते समय संभवतः वे सतही समस्याओं (उदाहरण के लिए, व्याकरण त्रुटियों, वर्तनी की गलतियों) पर ध्यान देंगे । उनका ध्यान व्यवहारमूलक बिन्दुओं पर केंद्रित करने के लिए यह अच्छा होगी अगर शिक्षक शिक्षार्थियों को वर्कशीट देने से पहले उनमें लिखे हुए संदेशों को संपादित करे।

इस गतिविधि से आम तौर पर सांस्कृतिक अंतरों (उदाहरण के लिए, शिक्षकों कि कल्पित दायित्वों में मतभेद, शील रणनीतियों) के बारे में उपयोगी चर्चा कक्षा में उठ जाती है । ये अंतर ही छात्रों की व्यावहारिक समस्याओं की जड़ हैं।

गतिविधि **2** : पहेली

नीचे दिए गए शब्दों के प्रत्येक समूह की व्यवस्था दो वाक्यों के रूप में की जा सकती है। एक उक्ति दूसरी की तुलना में अधिक औपचारिक है। समूह में शब्दों में से एक से प्रत्येक रिक्त स्थान भरें। प्रत्येक शब्द का प्रयोग केवल एक बार करें।

उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्य एक अनुरोध है जो अधिक औपचारिक है । इसके बाद एक कम औपचारिक अनुरोध का उदाहरण है:

अधिक औपचारिक:

आपको तकलीफ देने के लिए माफ़ी माँगती हूँ, क्या आप मुझे शहर तक पहुँचा सकेंगे ?

कम औपचारिक:

क्या तुम मुझे लिफ्ट दे सकते हो?

निम्नलिखित वाक्यों को अभिनंदन देकर, माफ़ी मांगकर और अलविदा कहकर आप कैसे पूरा करेंगे ?

**Formatted:** Italian (Italy)

**Formatted:** Font: 11 pt, Font color: Black, Complex Script Font: 11 pt, (Complex) Hindi, Italian (Italy), Border: : (No border)

**Formatted**

**Formatted**

**Formatted**

**Formatted**

**Formatted**

**Formatted**

**Formatted**

अभिनंदन

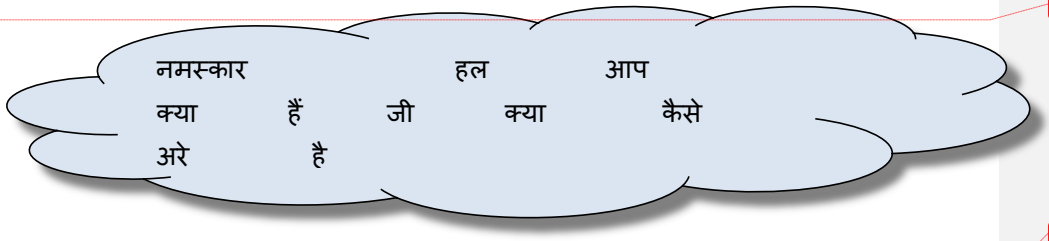


औपचारिक अधिक: _____, नमीता___ ।_____?

औपचारिक कम: _____, । गुरप्रीत _____?

क्षमायाचना

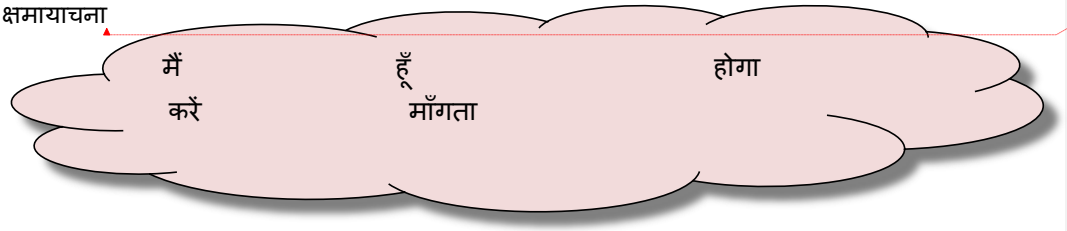


औपचारिक अधिक: _____ यह ।_____।

औपचारिक कम: _____ मेरी ।_____।

अलविदा

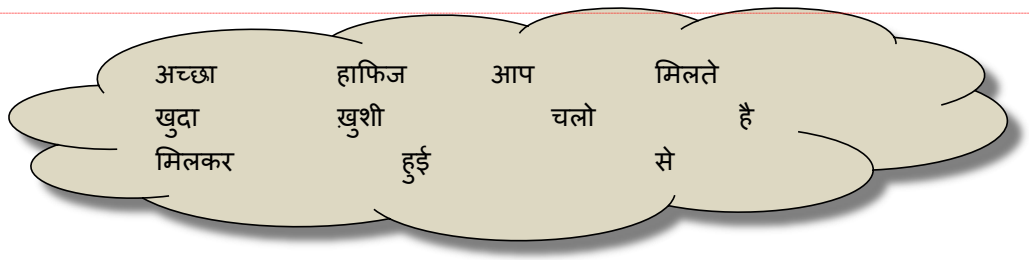


औपचारिक अधिक: _____ , साहब असग़र, _____ ।_____ ।

औपचारिक कम: _____,समीर,_____ !

हल:

अभिनंदन

अधिक औपचारिक: नमस्कार, नमीता जी । आप कैसे हैं ?

कम औपचारिक: अरे गुरप्रीत । क्या हाल है ?

क्षमायाचना

अधिक औपचारिक: मैं माफी माँगता हूँ। यह दोबारा नहीं होगा ।

कम औपचारिक: क्षमा करें। मेरी गलती ।

अलविदा

अधिक औपचारिक: अच्छा, असग़र साहब, आपसे मिलकर ख़ुशी हुई । ख़ुदा हाफ़िज ।

कम औपचारिक: चलो, समीर, मिलते है !

गतिविधि 3 : रोल प्ले

1. क) आपका अच्छा दोस्त अमरीका में अध्ययन करने गया हुआ था । जब वह घर लौटता है आप हवाई अड्डे पर उससे मिलने जाते हैं । आपने उसे एक साल से नहीं देखा है। वह गेट के बाहर आ रहा है ।
आपको क्या करना चाहिए:
क) नमस्कार करना
ख) चिंता दिखाना
ग) आगे के प्रश्न पूछना

1. ख) आप अमरीका में अध्ययन करने गई थीं और अभी घर लौट रही हैं।
हवाई अड्डे पर आप अपने अच्छे दोस्त से एक साल बाद मिलनेवाली हैं।
आपको क्या करना चाहिए :
क) नमस्कार करना
ख) चिंता दिखाने
ग) आगे के प्रश्न पूछना

2. क) आपको अपने दोस्त के जन्मदिन की पार्टी को आमंत्रित किया गया है । वहाँ कुछ लोग हैं जिनको आप नहीं जानते । पार्टी में आमंत्रित किये गए लोग आपकी ही उम्र के हैं । आप उनसे दोस्ती करना चाहते हैं ।
आपको क्या करना चाहिए:
क) बातचीत शुरू करना
ख) गपशप करना
ग) अपना परिचय देना

2. ख) आप पार्टी में एक अतिथि हैं । कोई आपके पास आया/आई है ।
आपको क्या करना चाहिए:
क) बातचीत शुरू करना
ख) गपशप करना
ग) अपना परिचय देना



Formatted: Italian (Italy)

गतिविधि 4 : Discourse-Completion Task (DCT) का प्रयोग

डीसीटी (Discourse-Completion Task : DCT) क्या है ?

डीसीटी भाषा विज्ञान और व्यवहारमूलक सिद्धांत में विशेष भाषण कृत्यों पर प्रकाश डालने का एक उपकरण है। डीसीटी एक एक-तरफा भूमिका है जिसमें एक "situational prompt" होता है जो एक शिक्षार्थी पढ़ेगा ताकि दूसरे शिक्षार्थी कोई प्रतिक्रिया करें । आम भाषा में यह एक टेस्ट है जिसमें कुछ संवाद में बदलाव किया जाता है, ताकि भाषण कार्य का प्रयोग प्रोत्साहित किया जाए।

मैं दो भागवाले इस अभ्यास का प्रयोग किया करती हूँ ।

सबसे पहले, मैं शिक्षार्थियों को पाँच ग्रीटिंग संदर्भों वाला दीसीटी देती हूँ ।

समूह बनाकर वे विचार विमर्श करेंगे और निश्चय करेंगे कि प्रत्येक संदर्भ में भाषा का सबसे उपयुक्त उपयोग क्या होगा ।

इसके बाद मैं एक परिस्थिति चुनती हूँ । उनको लिखित रूप में जल्दी से जल्दी प्रश्नों के जवाब देने होंगे ।

निम्नलिखित पाँच परिस्थितियाँ हैं जिनका इस्तेमाल मैंने अपने छात्रों के साथ सफ़लतापूर्वक किया है ।

क) तुम फ़लाँ-फ़लाँ विश्वविद्यालय के एक छात्र हो । सर्दियों की छुट्टी के दौरान अपने शहर वापस आए हो । संयोग से सुपरमार्केट में हाई स्कूल के तुम्हारे एक शिक्षक मिल जाते हैं । इस अवसर के लिए एक उचित ग्रीटिंग दो ।

ख) तुम्हारा अच्छा दोस्त अमरीका में अध्ययन करने गया हुआ है। जब वह घर लौटता है तुम हवाई अड्डे पर उस से मिलने जाते हो । तुमने उसे एक साल से नहीं देखा है। वह गेट के बाहर आ रहा है । एक उचित ग्रीटिंग प्रदान करो ।

ग) तुम एक दोस्त के साथ अपने स्कूल के दालान में चल रहे हो। तुम्हारी हिंदी शिक्षिका दालान में प्रवेश करती हैं और नमस्ते कहती हैं। एक उचित ग्रीटिंग प्रदान करो ।

घ) तुम एक कार्यालय में काम कर रहे हो । एक दिन एक महत्वपूर्ण व्यक्ति तुम्हारे कार्यालय में आता है । उसकी तुम्हारे बॉस के साथ एक मीटिंग है। वह व्यक्ति तुम्हारे साथ आँखों से संपर्क बनाता है। एक उचित अभिवंदन प्रदान करो ।

ङ ) एक कॉफी की दुकान पर एक दोस्त से मिलने के लिए तुम शहर जा रहे हो । तुम देर से आए हो। एक रास्ते में मुड़ते समय तुमको एक बुज़ुर्ग औरत मिलती हैं जो तुम्हारी पड़ोसी हैं । वह तुम्हारे मोहल्ले में कई वर्षों से रह रही हैं और तुम्हारी माँ की सहेली हैं । उचित ग्रीटिंग प्रदान करो ।

मुझे यह लगता है कि जब मैं पाठ को एक प्रतियोगिता के रूप में बनाती हूँ तो शिक्षार्थी अधिक सक्रिय हो जाते हैं और गतिविधि का उद्देश्य सुदृढ़ हो जाता है ।

पहले खत्म करनेवाले समूह को उच्चतम स्कोर दिया जाता है सामग्री की परवाह किए बिना ।

यह शिक्षण रणनीति सोचने पर कम और तुरंत प्रतिक्रिया और चुनाव करने पर ज्यादा पुरस्कृत करती है ।

इसका कारण यह है कि भाषा के वास्तविक उपयोग में संचार में गति की आवश्यकता होती है ।

जब प्रत्येक समूह यह गतिविधि पूरी कर लेता है तब एक प्रतिनिधि बोर्ड पर समूह के जवाब लिखती है ।

जब कुछ उचित और विनम्र ग्रीटिंग पैटर्न की स्थापना हो जाती है तो छात्र लक्ष्य भाषा के प्रयोग का प्रदर्शन रोल प्ले करके करते हैं।

गतिविधि 5

1. अलविदा करते समय क्या कहते हैं इसका अभ्यास

समय : आधा घंटा (a-b 5 मिनट, c 20 मिनट, d 5 मिनट)
तैयारी – जितने छात्र हैं, उतने अलग अलग रंग के कागज़ लाएँ

a. शिक्षक हरेक छात्र को एक एक रंगीन कागज़ दे दें। (जैसे जिस छात्र को हरा रंग अच्छा लगता है, वह हरा कागज ले वगैरह)
b. हर छात्र अपना हाथ कागज़ पर रखकर, पेंसिल से हाथ की रूपरेखा खींचे और खींचकर बीच में अपना नाम लिखे।
c. इसके बाद सारे छात्र कागज़ अपने स्थान पर रखकर उठें और हर सहपाठी की जगह पर जाकर, उसके हाथवाले कागज में कुछ दिली बातें, प्रिय यादें वगैरह लिखे (जैसे ... हमेशा याद रहेगा कि हमने उस दिन ऐसा ... किया, मिलकर बड़ी खुशी हुई, तुम हमेशा मेरे दिल में रहोगे, तुम्हारे साथ इस प्रोग्रम में भाग लेना बहुत अच्छा लगा इत्यादि ) और साथ में हस्ताक्षर
d. अंत में हर छात्र अपनी जगह वापस लौटे और जो बातें उसके कागज पर लिखी गई हैं, वे पढ़े।

2. अलविदा का एक और अभ्यास।

समय : आधा घंटा (a-b 5 मिनट, c 20 मिनट, d 5 मिनट)
तैयारी – जितने छात्र हैं, उतने कागज लाना और स्ट्रिप लाना

a. शिक्षक हरेक छात्र को एक एक कागज दे दे .
b. छात्र उठें और कागज टेप के माध्यम से एक दूसरे के पीठ पर लगाएँ .
c. हरेक छात्र सभी छात्रों के कागजों पर कुछ दिली बातें लिखे (जैसे ... हमेशा याद रहेगा कि हमने उस दिन ऐसा ... किया, मिलकर बडी खुशी हुई, तुम हमेशा मेरे दिल में रहोगे, तुम्हारे साथ इस प्रोग्रम में भाग लेना बहुत अच्छा लगा इत्यादि )
d. अन्त में हरेक छात्र अपना कागज ले और जो बातें लिखी गईं है, वे पढ़े .

## संदर्भग्रंथ सूची


Apte, M. L. 197). "'Thank you' and South Asian Languages: A comparative Sociolinguistic Study." Linguistics, 136, 67-89.

Bardovi-Harlig, K., and R. Mahan-Taylor, eds. 2003. *Teaching pragmatics*. Washington, DC: Office of English Language Programs, U.S. Department of State.

Bardovi-Harlig, K., and Z. Dörnyei. 1998. "Do language learners recognize pragmatic violations? Pragmatic versus grammatical awareness in instructed L2 learning." TESOL Quarterly 32 (2): 233–262.

Borzova, E. 2014. "Mingles in the foreign language classroom." English Teaching Forum 52 (2): 20–27.

Brown, P., and S. C. Levinson. 1987. Politeness: Some universals in language use. Cambridge: Cambridge University Press.

Crystal, D. 1997. English as a global language. Cambridge: Cambridge University Press

Ellis, R. 1994. The study of second language acquisition. Oxford: Oxford University Press.

Goffman, E. 1971. Relations in public: Microstudies of the public order. New York: Basic Books.

Goodall, J. 2007. Chimpanzees. The Jane Goodall Institute of Canada. www.janegoodall.ca/aboutchimp-behaviour-com.php

Field Code Changed

Hartford, B. S. & Bardovi-Harlig, K. (1996). "At your earliest convenience:" A study of written student requests to faculty. In L. F. Bouton (Ed.), Pragmatics and Language Learning, Monograph Series, Vol. 7 (pp. 55-69). Urbana Champaign, IL: University of Illinois, Division of English as an International Language (DEIL).

Hindi Urdu Flagship University of Austin, Texas, USA http://hindiurduflagship.org/resources/

Field Code Changed

Kakiuchi, Y. 2005. Greetings in English: Naturalistic speech versus textbook speech. In Pragmatics in language learning, theory, and practice, ed. D. Tatsuki, 61–85. Tokyo: JALT Pragmatics.

Kasper, G., and K. R. Rose. 2001. Pragmatics in language teaching. In Pragmatics in language teaching, ed. K. Rose and G. Kasper, 1–9. Cambridge: Cambridge University Press.

Omar, A. 1991. How learners greet in Kiswahili: A cross-sectional survey. In Pragmatics and language learning, ed. L. F. Bouton and Y. Kachru, 59–73. Urbana-Champaign, IL: University of Illinois.

Ross, S., and G. Kasper, eds. 2013. Assessing second language pragmatics. Basingstoke, Hampshire, UK: Palgrave Macmillan.

Srivastava, R. N. and Pandit, I. 1988 "The pragmatic basis of syntactic structures and the politeness hierarchy in Hindi". Journal of Pragmatics 12, 185-205.